ISSN (p): 2394-3912
ISSN (e): 2395-9369
त्रैमासिक (संयुक्तांक) 3(3-4), जुलाई-दिसम्बर, 2016
मूल्य : 50 रूपये

www.kahaar.in

कहार

जन विज्ञान की बहुभाषाई पत्रिका

KAHAAR

A multilingual magazine for common people

छायांकन *©Venkatesh Dutta*

The Friendship has no boundaries

प्रकाशक
प्रोफेसर एच्. एस. श्रीवास्तव फाउंडेशन फॉर साइंस एंड सोसाइटी, लखनऊ
(www.phssfoundation.org.in)
सह-प्रकाशक
पृथ्वीपुर अभ्युदय समिति, लखनऊ
(www.prithvipur.org)
विवेकानन्द युवा कल्याण केन्द्र, पडरौना कुशीनगर

समावेशी विकास की ग्रामीण पहल

(Rural Initiative for Inclusive Development)

भागीदार संस्थायें

प्रो. एच.एस. श्रीवास्तव फाउण्डेशन	पृथ्वीपुर अभ्युदय समिति	विवेकानन्द युवा कल्याण केन्द्र
लखनऊ	लखनऊ	पडरौना, कुशीनगर
www.phssfoundation.org.in	www.prithvipur.org	

उद्देश्य
- विज्ञान शोध एवं प्रसार • सम्यक् शिक्षा • हरित उद्योग • कम लागत की खेती • समावेशी स्वास्थ्य लाभ • मानवीय संस्कार • लोक कलाएँ, भागीदारी की ताकत • आनन्द की खोज

वर्तमान कार्यक्रम
- 'कहार' पत्रिका का प्रकाशन • 'कहार' लाइब्रेरियों की स्थापना • विवेकानन्द स्कूलों की स्थापना एवं प्रबन्धन • सामर्थ्य विकास

भविष्य की योजनाएं
- 'आधार' नवाचार एवं कौशल विकास स्कूलों की स्थापना एवं प्रबन्धन • किसान खेती प्रद्वति का विकास • 'अपना स्वास्थ्य अपने हाथ' स्वास्थ्य कार्यक्रमों का विकास
- 'आनन्द' पार्को का निर्माण एवं रखरखाव • 'विकास' पाक्षिक अखबार का प्रकाशन • 'प्रकृति' वनों का विकास एवं संरक्षण • 'उल्लास' कला समूहों का निर्माण एवं संचालन

जनवरी

रवि	सोम	मंगल	बुद्व	बृह	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

फरवरी

रवि	सोम	मंगल	बुद्व	बृह	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28				

मार्च

रवि	सोम	मंगल	बुद्व	बृह	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

अप्रैल

रवि	सोम	मंगल	बुद्व	बृह	शुक्र	शनि
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

मई

रवि	सोम	मंगल	बुद्व	बृह	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

जून

रवि	सोम	मंगल	बुद्व	बृह	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

1 जनवरी-नव वर्ष, 5 जनवरी-गुरू गोविन्द सिंह जयंती, 14 जनवरी-पोंगल, 14 जनवरी-मकर संक्रांति, 26 जनवरी-गणतंत्र दिवस, 1 फरवरी-वसंत पंचमी, 10 फरवरी-गुरू रविदास जंयती, 19 फरवरी-शिवाजी जयंती, 21 फरवरी-महर्षि दयानन्द सरस्वती जंयती, 24 फरवरी-महाशिवरात्रि, 12 मार्च-होलिका दहन, 13 मार्च-डोलयात्रा, 28 मार्च-चैत्र शुक्लादि, 4 अप्रैल-रामनवमी, 9 अप्रैल-महावीर जयंती, 11 अप्रैल-हजरत अली जन्मदिन, 13 अप्रैल-वैशाखी, 14 अप्रैल-गुड फ्राइडे, 14 अप्रैल-अम्बेडकर जयंती, 15 अप्रैल-मेसादी/वैशाखी, 16 अप्रैल-ईस्टर, 10 मई-बुद्व पूर्णिमा/वैशाख, 23 जून-जमात उल विदा, 25 जून-रथ यात्रा, 26 जून-ईदुल फित्र

2017

प्रधान संपादक
प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह, लखनऊ
सम्पादक
डॉ. राम स्नेही द्विवेदी, लखनऊ
सम्पादक मण्डल
प्रोफेसर रिपु सूदन सिंह, लखनऊ
डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय, बालापार, गोरखपुर
डॉ. अर्चना (सेंगर) सिंह, न्यूजर्सी
श्री राम प्रसाद मणि त्रिपाठी, गोरखपुर
प्रोफेसर चन्द्र भूषण झा, आयुर्वेदाचार्य, वाराणसी
डॉ. चतुर्भुज सिंह सेंगर, पडरौना
डॉ. रामचेत चौधरी, गोरखपुर
डॉ. शक्ति कुमार प्रभुजी, गोरखपुर
डॉ. वेंकटेश दत्ता, लखनऊ
डॉ. राशिदा अतहर, लखनऊ
डॉ. संजय द्विवेदी, लखनऊ
डॉ. कुलदीप बौद्ध, राँची
डॉ. संजीव कुमार, लखनऊ
श्री सुनीत कुमार यादव, मऊ
सलाहकार मण्डल
प्रोफेसर प्रहलाद के. सेठ, लखनऊ
प्रोफेसर प्रफुल्ल वी. साने, जलगाँव
प्रोफसर रणवीर चन्द्र सोबती, लखनऊ
डॉ. दिनेश चन्द्र उप्रेती, दिल्ली
जस्टिस वंश बहादुर सिंह, लखनऊ
प्रोफेसर राम कठिन सिंह, लखनऊ
प्रोफेसर शशि भूषण अग्रवाल, वाराणसी
प्रोफेसर देवेन्द्र प्रताप सिंह, लखनऊ
प्रोफेसर रामदेव शुक्ल, गोरखपुर
प्रोफेसर ओम प्रभात अग्रवाल, रोहतक
डॉ. कृष्ण गोपाल, लखनऊ
प्रोफेसर रणवीर दहिया, रोहतक
प्रोफेसर राजा वशिष्ठ त्रिपाठी, वाराणसी
प्रोफेसर एन. रघुराम, दिल्ली
डॉ. सुधा वशिष्ठ, लखनऊ
डॉ. सिराज वजीह, गोरखपुर
श्री शशि शेखर सिंह, लखनऊ
डॉ. एस. एम. प्रसाद, लखनऊ
प्रोफेसर हरीश आर्य, रोहतक
डॉ. सुमन कुमार सिन्हा, गोरखपुर
प्रोफेसर मालविका श्रीवास्तव, गोरखपुर
डॉ. निहारिका शंकर, नोएडा
श्री अशोक दत्ता, नई दिल्ली
श्रीमती शीला सिंह, लखनऊ
किसान श्री हरगोविन्द मिश्र, धर्मपुर पर्वत
श्री उप्रेन्द्र प्रताप राव, दुदही
इं. तरूण सेंगर, गिलबर्ट, अमेरिका
डॉ. पूनम सेंगर, चण्डीगढ़

आवरण फोटो
डॉ. वेंकटेश दत्ता, लखनऊ
प्रबन्ध-सम्पादक
डॉ. प्रदीप तिवारी, लखनऊ
श्री अंचल जैन, लखनऊ
तकनीकी सहयोग
श्री रंजीत शर्मा, लखनऊ
श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह, लखनऊ

संपादकीय पता
04, पहली मंजिल, एल्डिको एक्सप्रेस प्लाजा, शहीद पथ उतरेटिया,
रायबरेली रोड, लखनऊ-226 025 भारत
ई मेल : kahaarmagazine@gmail.com/
cceseditor@gmail.com
वेबसाइट : www.kahaar.in
https://www.facebook/kahaarmagazine.com

	व्यक्तिगत	संस्थागत
सहयोग राशि : एक प्रति	: 25 रुपये	50 रुपये
वार्षिक	: 100 रुपये	200 रुपये
त्रैवार्षिक	: 300 रुपये	600 रुपये

सहयोग राशि 'प्रोफेसर एच्.एस. श्रीवास्तव फाउण्डेशन फॉर साइंस एण्ड सोसायटी, लखनऊ' के नाम भेजें।

घोषणा
लेखकों के विचार से 'कहार' की टीम का सहमत होना जरूरी नहीं। किसी रचना में उल्लेखित तथ्यात्मक भूल के लिए 'कहार' की टीम जिम्मेंदार नहीं होगी।

लेखकों के लिए
वैचारिक रचनाओं में आवश्यक संदर्भ भी दें एवं इन संदर्भों का विस्तार रचना के अन्त में प्रस्तुत करें। अंग्रेजी रचनाओं का हिन्दी तथा हिन्दी सहित अन्य भाषाओं की रचनाओं का अंग्रेजी में सारांश दें। मौलिक रचनाओं के साथ रचना के स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित होने का प्रमाणपत्र दें। लेखक पासपोर्ट साइज फोटो भी भेंजे। रचनाऐं English में Times New Roman (12 Point) तथा हिन्दी के लिए कृति देव 10 में Word Format (Window 2003) में टाइप करें। तस्वीरें, चित्र, रेखाचित्र आदि PDF Format में भेंजे।

विज्ञापन के लिए
विज्ञापन की विषय वस्तु के साथ ही भुगतान 'प्रोफेसर एच्.एस.श्रीवास्तव फाउण्डेशन फॉर साइंस एण्ड सोसायटी, लखनऊ' के नाम मल्टीसिटी चेक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा सम्पादकीय पते पर भेजें।
रुपये 6000/- पूरा पृष्ठ रुपये 4000/- आधा पृष्ठ
रुपये 10000/- पूरा पृष्ठ (रंगीन) रुपये 6000/- आधा पृष्ठ (रंगीन)

Advertisement Tariff
Please send payment in form of DD or multicity cheques in favour of "Professor H.S. Srivastava Foundation for Science and Society" Payable at Lucknow alongwith subscription forms or Advertisement draft.
Rs. 6000/- Full Page (B/W) Rs. 4000/- Half Page (B/W)
Rs. 10000/- Full Page (Color) Rs. 6000/- Half Page (Color)

कहार एक पारम्परिक मनुष्य वाहक के लिए प्राचीन देशज सम्बोधन है। कहार की तरह ही यह पत्रिका भाषाओं एवं लोगों के बीच सेतु बनाने की कोशिश कर रही है।

विषय–सूची

आलेख / कविता / रिपोर्ट

सम्पादकीय	प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह	01
पंचायती राज और ग्रामीण विकास का खाका	प्रोफेसर रिपु सूदन सिंह एवं वीर कुमार राय	03
तीसरी सरकार के रूप में पंचायत	डॉ. चन्द्रशेखर 'प्राण'	07
पंचायती राज और ग्रामीण विकास कि खाई	प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह	11
ग्राम स्वराज से ही हिन्द स्वराज का सपना साकार होगा	स्वर्गीय श्री गुंजेश्वरी प्रसाद	13
जागेगी हर बस्ती (हिन्दी कविता)	शरद गोकस	16
जरूरत है, सही शुरूआत की	प्रोफेसर भगवान सिंह	17
बिगड़ता ग्राम्य परिवेश, सुधार की सम्भावनाएं	डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय	19
एल्कोहल आसवनी उद्योग के अपशिष्टों का पर्यावरण पर दुष्प्रभाव एवं उनका जैवीय अपघटन	गौरव सक्सेना, अकाश मिश्रा, डा. रामनरेश भार्गव	24
सुनहरा शकरकन्द	अंजली साहनी, रविन्द्र कुमार, डा. आर.सी. चौधरी	26
नर तो समाप्त हो जाएगा, नारी ही बचेगी	डा. राम स्नेही द्विवेदी	28
जीवन में मूल्य चेतना की आवश्यकता	डा. अंजलि सिंह	30
बीछुड़ल बेटा (भोजपुरी लघुकथा)	प्रोफेसर रामदेव शुक्ल	32
सब आसान चीज अच्छा ना होला (भोजपुरी कविता)	बुद्धू काका	33
धोबी के गदहा (भोजपुरी लघुकथा)	बुद्धू काका	34
तू ज़िन्दा है (हिन्दी कविता)	शंकर शैल	35
हरियाली और सफाई (बाल कविता)	प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह	35
प्रेम आ लड़ाई (भोजपुरी कविता)	बुद्धू काका	36
रागिनी (हरियाणवी गीत)	प्रोफेसर रणवीर सिंह दहिया	37
मौलाना आज़ाद (उर्दू लेख)	Dr Rashida Athar	38
Restoring Glory of Ganga	Durgesh Kumar Dubey	41
Climate change and Health	Dr Mohammad Rafeek	44
To GOD/Resurrection (English Poem)	Dr K.V. Subbaram	48
Culture of United States of America	Dr Archana (Saingar) Singh	49
Dr. Yellapragada Subbarao-A Life Saver	Amit Kumar Chauhan	50
3rd PHSS Foundation Awards for Year 2016-17		51
पृथ्वीपुर अभ्युदय समिति (घोषणा)		52
सामाजिक सरोकार-समावेशी विकास की ग्रामीण पहल		54
Movement; Rural Initiative for Inclusive Development		55
Invitation for Authorship		56

आपकी राय

माननीय डॉ. राणा प्रताप जी,

अभी अभी आप द्वारा प्रेषित कहार (जनवरी-जून, 2016) अंक मिला। पत्रिका में सम्पादित सामग्री की विविधता एवं सरलता के लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्व में भी आप द्वारा प्रेषित अंक यहाँ वितरित किये गए हैं और मित्रों ने पत्रिका की उत्कृष्टता की प्रशंसा की है। पत्रकारिता और विशेषतः ज्ञान विज्ञान के लोक व्यापीकरण में यह विज्ञान बहुभाषी पत्रिका समाज के बीच व्यापक संवाद का सेतु बने यही कामनाएं हैं .

पुनश्चः इस नव अंक को मुझे प्रेषित करने के लिए हार्दिक धन्यवाद।

सादर ,
डॉ. हरीश कुमार
प्रोफेसर
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय

सम्पादक महोदय,

कहार पत्रिका के अंक-3, अंकांश-1 और 2 (जनवरी से जून 2016) भेजने के लिये धन्यवाद। यह बहुआयामी पत्रिका अपने आप में 'कहार' शब्द को परिलक्षित करती है। आपके बहुआयामी और बहुभाषी पत्रिका में अनेक लेख और चित्र बड़े ही रोचक तथा जनोपयोगी लगे। वैज्ञानिक लेखों के अतिरिक्त, सरल भाषा में लिखे गये ग्रामीणों के लिये उपयोगी सामग्री प्रस्तुत है। हमे पूर्ण विश्वास है, कि यह पत्रिका ग्रामीण अंचलों में अत्यन्त लोकप्रिय होगी। हमारी संस्था इसकी सदस्यता के लिये अलग से आग्रह भेज रही है।

शुभ कामनाओं सहित

भवदीय
डा. राम चेत चौधरी, अध्यक्ष
पी. आर. डी. एफ, गोरखपुर

माननीय महोदय,

कहार पत्रिका से संबन्धित सभी सदस्यों को धनतेरस और दीपावली की अनेकों हार्दिक शुभकामनाएँ। आपकी पत्रिका के अंक-2 (2-3), 2015 में प्रकाशित लेख देखकर प्रसन्नता हुई। अगर इन कविताओं को अलग से माननीय श्री अब्दुल कलाम जी की फोटो के साथ छापा जाता, जैसा की भेजा गया था, तो शायद और अच्छा लगता। कुछ त्रुटियाँ भी दिखी। लेख छपने की सूचना भी देर से मिली। इंतजार है, पत्रिका को पोस्ट से मिलने का क्योंकि अभी में सम्पूर्ण पत्रिका का अवलोकन नहीं कर पाया हूँ।

पत्रिका का कलेवर काफी अच्छा है और मैं जल्दी ही इसको पोस्ट के द्वारा प्राप्त करने के लिए राशि भेजने का प्रबंध करूंगा, जिससे यह पत्रिका मुझे समय से प्राप्त हो सके और मैं भी अपना छोटा मोटा योगदान समय समय पर कर सकूँ। मैंने पहले भी आपकी वैबसाइट का अवलोकन किया है, और आपके द्वारा आयोजित एक वैज्ञानिक सम्मेलन में एब्स्ट्रैक्ट भी भेजा था। पर समयाभाव के कारण सम्मेलन में शामिल न हो सका। आपके द्वारा किए जा रहे सभी कार्य अत्यंत सरहनीय हैं। मेरी शुभकामनाएँ हमेशा आपकी पत्रिका के साथ हैं और भविष्य में आपसे जुडने की प्रक्रिया के लिए प्रयास करूंगा ।

सन 2016 का अंक नही देखा हैं, जल्दी ही प्रतिक्रिया भेजूँगा।

शुभकामनाओं के साथ

शुभेक्षु
पीयूष गोयल
दिल्ली

प्रिय भाई राणा प्रताप सिंह जी,

आपकी पत्रिका समस्त आवश्यक विषयों पर खोजपूर्ण सामग्री से परिपूर्ण है। टाइटिल पेज के पीछे वाली कविता {कविता अंक-2 (2-3), अप्रैल-सितम्बर, 2015} बेहद सुन्दर लगी। कमाल की बहर पकड़ी है, आपने। भोजपुरी रचनाएं प्रभावशाली हैं। पत्रिका भेजते रहें।

हरनाम शर्मा

साहित्यकार एवं सेवानिवृत्त अध्यापक
ए. जी-1/54 सी विकासपुरी
नई दिल्ली-110018

आदरणीय प्रोफेसर सिंह

'कहार' के अंक 3, जन-जून , 16 हेतु आभार।

पढ़ने में वक्त लग गया, इसलिए पत्र में विलम्ब हो गया है।

संपादकीय में उद्धृत कहानी-अंधे और हाथी, बहुत कुछ कहती है। जनता की भागीदारी पर आप का बल देना बिलकुल सही है। बिना इसके कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हो सकता। कृषि संकट पर योगेश जी ठीक कहते हैं, कि देश में कृषि क्षेत्र की मूलभूत समस्याओं को समझने की कोशिश ही नहीं की जा रही । और समस्या उत्पादन की कम, बल्कि उसके ढंग से रखने और वितरण की है। आप के लेख-कृषि की चुनौतियों .. में आप का यह निष्कर्ष कि देश के तमाम हिस्सों में उठ रहे युवा उफान और अराजक आन्दोलनों की जड़ें कहीं न कहीं ग्रामीण सभ्यता और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में आ रही विकृतियों में ढूंढी जा सकती हैं, महत्वपूर्ण है। गोमती पर वेंकटेश जी के निष्कर्ष में सिर्फ इतना जोड़ना चाहूंगा कि गोमती ही नहीं किसी भी नदी के प्रदूषण को तब तक नहीं रोका जा सकता है, जब तक सीवर को रीवर में मिलने से न रोका जाये।

सभी पाठको से अनुरोध है कि पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास के लिए आपकी राय बहुत महत्वपूर्ण है। अपनी छोटी से टिप्पणी जरूर भेजें।

अमरनाथ जी के बेहद महत्त्वपूर्ण आलेख 'चिंदी चिंदी होती हिंदी' पर बात करना जरूरी है। दुःख इस बात का है कि राजनेता इस मुद्दे पर मूढ़ताभरी बदमाशी कर रहे हैं, और हमारे बौद्धिक अद्भुत उदासी में डूबे हुए हैं। उनको सीधी बात भी समझ में नहीं आ रही है। या तो वे अपने बौद्धिक विलास में इस कदर मशगूल हैं, कि बुनियादी समस्याएं उन्हें महत्त्वपूर्ण ही नहीं लगतीं, या फिर वे इस कदर नपुंसक हो चुके हैं, जैसे 'शतरंज के खिलाड़ी'। लगता है कि हम लोगों को सब कुछ लुटाने के बाद ही होश आता है।

अन्य सामग्रियां भी देखीं, पढ़ न सका। यूँ तो एक नजर में पूरी पत्रिका ही पठनीय और उल्लेखनीय है। हिंदी में ऐसी पत्रिकाएं दुर्लभ हैं। 'कहार' से एक बड़ी कमी पूरी हो रही है। होती रहे ऐसी कामना है ।

शुभकामनाओं के साथ,
प्रो. आलोक पाण्डेय
हिन्दी विभाग, हैदराबाद, विश्वविद्यालय
गाचीबोली, हैदराबाद

फेसबुक पर 'कहार' के पन्नें

फेसबुक पर भी बड़ी संख्या में पाठक 'कहार' के अंको को देख रहे हैं और अपनी प्रतिक्रियाए दे रहे हैं। उनमें अधिकांश युवा पाठक हैं, शिक्षित हैं और उनके विचार वर्तमान और भविष्य के सामजिक बदलावों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

फेसबुक के ताजे आकड़े बताते हैं, कि कहार के कुल 282 पृष्ठों को कुल 274 लोगों ने पसन्द किया। बहुत से मित्रों ने इसे शेयर भी किया। 'कहार' के लेखकों, उनके विचारों और इसके अभियानों को युवा पीढ़ी से रूबरूँ कराने के लिए सोशल मीडिया, एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में उभर रहा है। हाँलाकि इन त्वरित टिप्पणियों को लोग कितनी गम्भीरता से विचारों और व कार्यो में बदल पाते हैं, कहना मुश्किल है, पर तब भी अधिक से अधिक लोगों तक अपनी बात ले जा पाना महत्वपूर्ण है। फेसबुक व्यूअर्स में 31 प्रतिशत महिलाएँ और 69 प्रतिशत पुरूष हैं। क्षेत्रवार इसमें लखनऊ, नई दिल्ली, वाराणसी, इलाहाबाद, राँची, कानपुर, गोरखपुर, जम्मू, गाँधीनगर, नोएडा, पंतनगर, अजमेर, आगरा, जयपुर, दिल्ली, हरिद्वार, बर्नान हिल्स (अमेरिका), आजमगढ़ (उ0प्र0), बर्दवान (पश्चिम बगांल) कोलकाता, गुड़गाँव, मुम्बई, माण्डा (उ0प्र0), गाजियाबाद, कोटा (राजस्थान), विशाखापट्टनम, देहरादून, लोटन (उ0प्र0), शाहपुरा (जिला जयपुर राजस्थान) न्यूयार्क, (अमेरिका) लिनकोल्न (अमेरिका), ब्रोटास, एस.पी. (ब्राजील), अमृतसर (पंजाब), पूणे, फरीदाबाद, गुलखेड़ा (उ0प्र0), हाजीपुर (बिहार) पानीपत (हरियाणा) ट्रेन्स्टे-फ्र्यूली, वेन्जूएला, तिलोनिया (राज0) आदि जगहों से कहार पत्रिका के मित्रों ने इसे फेसबुक पर देखा तथा पसन्द किया। भारत (274) के बाहर, संयुक्त राज्य अमेरिका (3) ब्राजील (1), चीन (1) इटली (1) कुवैत (1) तथा नेपाल (1) के मित्रों ने फेसबुक के माध्यम से कहार पर अपनी पसन्द नोट करायी। हम सभी के आभारी हैं। हम इन मित्रों से सक्रिय भागीदारी एवं सुझावों की अपेक्षा करते हैं।

'Kahaar' on Facebook

About 274 viewers (31% women are 69% Men) from various cities of India and abroad like Lucknow, New Delhi, Varanasi, Allahabad, Srinagar, Patna, Pantnagar, Ranchi, Kanpur, Gorakhpur, Jammu, Gandhi Nagar, Noida, Ajmer, Agra, Jaipur, Delhi, Haridwar, Azamgarh, Burwan (WB), Kolkatta, Gurgaon, Mumbai, Manda, Ghaziabad, Kota, (Rajasthan), Vishakhapatnam, Dehradun, Lotan (UP), Shahpura (Distt Jaipur, Rajasthan), Amritsar, Pune, Faridabad, Gulalkhera (UP), Hajipur (Bihar), Panipat, Tilonia (Rajasthan), Vernon Hills, IL (USA), Trieste Friule-Venezia (Italy), New York & Lincon (USA) Brotas, SP (Brazil) etc. About 282 views of 'Kahaar', Magazine have noticed during the last year and many of them shared it to their friends. We are thankful to our friends and invite them to participate. The facebook friends of 'Kahaar' Magazine are from India (274), United States of America (3), Brazil (1) China (1) Italy (1) Kuwait (1) and Nepal (1) as per the statements available in facebook account. We are grateful to all of them for their concerns and interest.

Have your say on Science & Society

सम्पादकीय

विज्ञान और उसकी दिशाएँ

विज्ञान की तकनीकी उपलब्धियों ने एक दौर में लोगों को इतना चमत्कृत किया, कि भगवान की तरह विज्ञान को भी सभी तरह के प्रश्नों और जवाबदेही से बाहर कर दिया गया। विज्ञान के भीतर प्रश्न ही प्रश्न हैं। विज्ञान की संस्कृति सवालों की संस्कृति है। विज्ञान का जन्म और उसका विकास ही प्रश्नों और इनके समाधान ढूढ़नें के प्रयासों से हुआ है। परंतु विज्ञान के बाहर वे प्रश्न सिरे से गायब हैं। यह न सिर्फ विज्ञान की गिरावट है, यह ज्ञान के उपयोग तथा समाज के सोच की सांस्कृतिक गिरावट भी है, जहाँ विज्ञान, साहित्य और कलाओं जैसे समृद्ध लौकिक ज्ञान की उत्पत्ति एवं विकास के बावजूद, इनका मानवीय, सर्वकालिक तथा सर्वजनीन उपयोग नहीं हो पा रहा है। विज्ञान सभी लोगों की लौकिक समृद्धि, और समृद्धि तथा ज्ञान से उपजी शांति का साधन नहीं बन पा रहा है। साहित्य भी एक बड़े उपेक्षित तथा शोषित समाज की मानसिक समृद्धि तथा शांति का साधन नहीं बन पा रहा है। कलाओं ने भी आम जनता के सांस्कृतिक विकास में वह योगदान देना बन्द कर दिया है, जो प्राचीन युग से चला आ रहा था। साहित्य, कला और विज्ञान का लोक विमुख (इलिट) हो जाना इसकी एक बड़ी वजह है। यह विज्ञान, साहित्य और कलाओं का उत्थान नहीं बल्कि क्षरण है।

भारत के संदर्भ में मोटे तौर पर कुछ जातियाँ और भौगोलिक क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से शोषित रहे हैं, जिन पर स्वतन्त्रता के बाद समय-समय पर स्पष्ट नीतियाँ बनी और शासन-प्रशासन के रुझानों के अनुसार उनकी मुख्य धारा में भागीदारी बढ़ी है। यह सब शिक्षा और चेतना विकास से ही संभव हुआ। शोषितों और उपेक्षितों की दूसरी जमात स्त्रियाँ रही हैं। उनकी भी मुख्य धारा में भागीदारी धीरे-धीरे ही सही नीतियों, शासन-प्रशासन के तत्कालीन रुझानों तथा शिक्षा के कारण ही सम्भव हो पा रहा है।

आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आवश्यक लौकिक ज्ञान से वंचित, उपेक्षित एवं शोषित एक बहुत बड़ी आबादी भारतीय गाँवों की है। गाँवों के विकास के लिए स्पष्ट नीतियाँ नहीं बनी है। शासन और प्रशासन के रुझान उपरोक्त दो वर्गों की तरह साफ नहीं हैं, न ही शासन तंत्र के इरादे ही स्पष्ट हैं। धन के आवंटन से लेकर नीतियों के कार्यान्वयन की जमीनी सफलता को लेकर पर्याप्त जवाबदेही न होने से, गाँवों के लिए आवंटित धन, भयानक बन्दर-बाँट और भ्रष्टाचार की गिरफ्त में है। शिक्षा के ढाँचे निहायत अपर्याप्त हैं एवं ग्रामीण लोगों की शिक्षा को लेकर न तो कोई स्पष्ट प्रोत्साहन की नीति है, न ही कोई उचित विमर्श है।

ज्ञान युग में शिक्षा का बीमार, भ्रष्ट, अपर्याप्त और दिशाहीन ढाँचा गाँवों की दिन पर दिन विकृत होती संस्कृति एवं शांति के लिए बड़ा खतरा है। इसे समय रहते समझा नहीं गया तो विश्व शांति के सभी प्रयास बड़े पैमाने पर असफल हो जाएंगें। विज्ञान को एक संस्कृति के बजाय एक तकनीकी के रूप में देखने का यह एक जीवंत फलित है। गाँवों ने विज्ञान को बिजली, लाउडस्पीकर, फोन और ट्रैक्टर के रूप में पाया है। बिजली के मीटर, तार, खम्भे, बिलों का भुगतान सब कुछ भयानक अराजकता, भ्रष्टाचार और अव्यवस्था का शिकार है। लाउडस्पीकर धार्मिक व्यवसायों के फैलाव के एवं मनोरंजन के साधनों को सहूलियत तो दे रहा है, पर साथ ही शिक्षा, शांति और निज़ता के खिलाफ एक भयानक हथियार के रूप में इस्तेमाल हो रहा हैं। अत्यंत उत्तेजित तथा ऊर्जावान युवकों (सामान्यतः किशोर तथा युवक लड़कों) के गुटीय संघर्षों में लाउडस्पीकर नए हथियार बन कर उभरे हैं। मोबाइल फोन जरूर एक अच्छे संचार साधन के रूप में उपलब्ध हो रहे हैं और आवश्यकता एवं प्रवृतियों के हिसाब से लोग इनका अच्छा और बुरा इस्तेमाल कर रहे हैं।

गाँवों को शिक्षा, कौशल विकास तथा लौकिक चेतना की बहुत आवश्यकता है। किसी भी व्यक्ति, समूह या देश के विकास में शिक्षा की भूमिका को गौण करके देखना उसको विकास की मुख्य धारा से बाहर रखने की सायास कोशिश है। अभावों से जूझते समाजों को आपसी संघर्षों से निकालकर शांति और विवेकपूर्ण सहजीविता के लिए शिक्षा एवं चेतना का विकास भविष्य का सबसे बड़ा औजार होगा। गाँवों के विकास के लिए आर्थिक मोर्चे पर कम लागत वाली टिकाऊ कृषि पद्धतियों को कृषि और लोगों के जीवन से जुड़े लघु उद्योगों, छोटे कार्यकारी समूहों एवं नैतिकता युक्त सामाजिक व्यापार से जोड़ना होगा। विज्ञान का उपयोग सांस्कृतिक चेतना, तर्कसंगत विचार एवं कार्य पद्धतियों तथा छोटे कम ऊर्जा की खपत वाले उपकरणों से जोड़ना होगा। विज्ञान का उपयोग कम लागत वाले नवाचारी उपकरणों एवं स्थानीय उपयोग के लिए विशिष्ट सुविधाओं के निर्माण एवं संचालन के लिए किए जाने की जरूरत है।

Rana Pratap

(राणा प्रताप सिंह)

कहार टीम के लिए

Editorial

Science and its Directions

The technological achievements of the science are staging it as GOD, where no space is left for any question or accountability. The culture of science is culture of queries and evolving solutions with defined and reproducible methodologies, but those queries are absent in the society for uses and misuses of the scientific outcomes.

It is not only reduction of science but also reduction of the knowledge business and social culture. In the contemporary society, the science, literature and arts have not played their adequate role in development of human values and peace in the society for all in a timeless scale, in spite of its rich origin and evolution. The science is not achieving a role in prosperity and peace for people at large, but has got reduced as a tool for power holders and market economy, which ignore the poor and weaker sections in the society who are unable to participate in mainstream . The literature and arts are also not attaining their role in the mental prosperity, exploration of truth and evolution of human values and ethical richness to a large number of deprived and exploited people. It is not only reduction of science, literature and arts, but also reduction of knowledge per se, which is considered to play a central role in the progress and happiness of the contemporary societies.

A group of castes, geographically marginalised people and ethical groups have been considered historically exploited and deprived of development and growth in Indian context. The remedial measures were adopted at the level of policies and practices by the sovereign state for upliftment of these groups and it was education which played a major role in their inclusion in the mainstream Indian society and economy to a great extent in urban regions. The same happened in another deprived and exploited group, the women. The rural India is third and the largest group of the deprived and exploited societies and like the two others; the Education is expected to play a crucial role in its upbringing. The adequate infra-structural and soft skill framework of education is absent or existing in very weak form in the rural India. In spite of giving a remedial approach to the education of Rural India, it has been highly ignored and buried deeply in corruption, un-accountability and cultural degradation.

Agricultural Ecosystems are degrading fast in spite of organic movements by the individuals, Government and NGOs. The small scale and cottage industries which were backward and forward linkages of the agriculture in rural India have been intensely damaged and destroyed by the mighty market in the past few decades with support of the State by the favorable ecosystems and policies for the market economy only. The science is represented as electricity, cell phone and loudspeaker in rural India. The electricity system is so messy, it is unable to provide peace and sustainability. Loudspeakers have become a nuisance for the large number of villagers and have become a tool of the conflicts between religions and self interest based directionless youth specially teenaged and growing boys who are wasting their energy in name of religious gatherings and political groupings and loosing their own future and long term peace and prosperity of the rural society. Mobile phones are getting used for good and bad by people as per their culture, consciousness and need and have come out as an useful technological outcome of the science. In routine science has reduced as technology and market tools. It has bigger role to play for growth of a sustainable, prosperous and peaceful human society for happiness and satisfaction of all its inhabitants. Science is a culture, a way of doing the things and solving our problems. It provide a procedure to find peace, prosperity and sustainable progress.

The rural India needs education, skill development, small scale cottage industries, low cost and energy efficient semi manual innovative tools and equipments for agriculture, transport and health management. It needs collectiveness, sustainable peace, prosperity, cultural and economic upliftment and knowledge of science, art and social order in a better and more organised way .

Rana Pratap

(Rana Pratap Singh)
For Kahaar Team

पंचायती राज–1

पंचायती राज और ग्रामीण विकास का खाका

❐ प्रो. रिपु सूदन सिंह एवं वीर कुमार राय

We feel that Panchayati Raj, seen as a key for the rural development is not fulfilling this dream, because it is not complete and not getting executed in scientific and participatory way. There is no mechanism to review the function of Panchayati Raj by independent agencies or government. Why does expenditure is not geting counted into visible impacts, no one asks? Prof. Ripu Sudan Singh and Mr. Veer Kumar Rai have described historical evolution, inherent powers and duties of the Panchayati Raj in India. It lacks the tradition of past in which the entire village was regulated by self governance of collective lodgics and powerful system for collective decison making in rural conflicts of minor values. A lot of that spirit has been left out in the new structures of Panchati Raj. This article opens this discourse in a lucid manner.

भारत का एक बड़ा हिस्सा गॉवों में बसता है। देश की कुल जनसंख्या की 68.4% आबादी ग्रामीण है। अतः गांव में आज भी भारत का हृदय धड़कता है। जब भी हम भारतीय संदर्भ में आधुनिकता और परम्परा की बातें करते हैं, तो शहर और गॉवों का चित्र मानस पर उभरता है। जहाँ शहर आधुनिकता और आधुनिक जीवन शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं, वहीं गॉव परम्परा और अतीत की निरन्तरता को प्रतिध्वनित करते हैं। आजादी के बाद विगत वर्षो में गॉवों और शहरों के बीच का द्वन्द भी कुछ हद तक कम हुआ है। जहाँ शहरों में गाँवों की सनातन परम्पराओं का स्थानान्तरण हुआ है, वहीं पर गावों में भी आधुनिकता और आधुनिक जीवन शैली और मूल्यों का विस्तार हुआ है। भारत उन थोड़े से देशों में है, जहाँ आधुनिकता के साथ-साथ परम्पराओं का अद्भुत संगम दिखाई देता है। 1991 के 73वें संविधान संशोधन में पँचायती राज की एक ऐसी व्यवस्था की गई, जिससे गाँव और शहर के बीच की दूरी कम हो। समाजवादी राज्य में प्रजातांत्रिक केन्द्रीयकरण की जगह प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण की अवधारणा को बल प्राप्त हुआ। इसका उद्देश्य था, प्रजातंत्र को आम आदमी के दरवाजे तक पहुँचाना, पर ऐसा नही हुआ।

महात्मा गांधी के जीवन में गाँव का जिक्र हर बात में आता है। वे गाँव का विकास पंचायतों के माध्यम से करने के प्रबल हिमायती थे। लोकनायक जयप्रकाश नारायण की सोच थी, कि गांवों को सामुदायिक भागीदारी के जरिए विकसित किया जाए जिसमें ग्राम पंचायत की प्रमुख भूमिका होती है। इससे यह स्पष्ट होता है, प्रजातंत्र सिर्फ राजनीतिक नहीं होता है। इसका विस्तार सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी होना चाहिए। प्रजातंत्र जहाँ आधिकारों का विस्तार है, वहीं पर यह व्यवस्था रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ और जीवनयापन की मूलभूल सुविधाओं की उपलब्धता और आम आदमी तक उसकी पहुँच को सुनिश्चित करने की व्यवस्था का नाम भी है। किसी भी राजनीतिक व्यवस्था का यह अंतिम उद्देश्य होता है, कि सामाजिक व्यवस्था सुचारू रूप से चले जिसके लिए समय समय पर नीतियाँ का निर्माण और नीतियों में बदलाव किया जाता है। यह प्रक्रिया अन्य देशों की तरह भारत वर्ष में भी अनन्त काल खण्डों से चल रही है।

भारत में पंचायती राज का उल्लेख ग्रामीण विकास एवं प्रशासन संचालन हेतु मौर्यकाल से ही मिलता है। मौर्यकाल की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी, जिसका अधिकारी 'ग्रामिक' कहलाता था। ग्रामिक ग्राम सभा का भी प्रधान होता था तथा उसका निर्वाचन गाँव वासियों द्वारा किया जाता था। इसी तरह गुप्तकाल में भी प्रत्येक ग्राम का अधिकारी 'ग्रामिक' कहलाता था। जिसकी सहायतार्थ एक समिति होती थी, जिसे 'ग्राम सभा' कहते थे। ग्रामसभा का प्रमुख कार्य मुकदमों का निर्णय, भूमि की सीमा का निर्धारण, सार्वजनिक हित के कार्य, कृषि कार्य और सिंचाई की उचित व्यवस्था करने का था। चोल कालीन युग में स्थानीय स्वशासन के अर्न्तगत पंचायतों का विशिष्ट महत्व रहा है। सल्तनतकालीन प्रशासन एवं मुगलकालीन प्रशासन में भी स्थानीय स्वशासन के अर्न्तगत ग्राम पंचायत के स्वरूप का उल्लेख मिलता है। मुगल प्रशासन में गाँव, शासन की सबसे छोटी इकाई होती थी। गाँव का प्रधान अधिकारी 'मुकद्दम कहलाता था, जो गाँव का मुखिया होता था। इसका प्रमुख कार्य लगान वसूल करना, गाँव में शांति एवं व्यवस्था स्थापित करना तथा सरकारी कर्मचारियों की मदद करना था।

ब्रिटिशकालीन प्रशासन में स्थानीय स्वशासन को बढ़ावा देने हेतु वर्ष 1870 में लार्ड मेयो ने भारत में स्थानीय शासन लागू करने की अनुशंसा की तथा लार्ड रिपन ने वर्ष 1882 में स्थानीय स्वशासन से संबधित प्रस्ताव पेश किया। अतः स्थानीय शासन बोर्ड की स्थापना हुई। रिपन की योजना के अनुसार, 1883–85 के मध्य विभिन्न प्रान्तों में स्थानीय स्वशासन अधिनियम पारित कर इस व्यवस्था को व्यापक रूप दिया गया। 1909 में विकेन्द्रीकरण पर रॉयल कमीशन ने रिर्पोट में लिखा, कि धन का अभाव ही स्थानीय संस्थाओं के प्रभावशाली ढंग से काम न करने में प्रमुख बाधा रही है। आयोग ने ग्राम पंचायतों, उप जिला बोर्डों तथा नगरपालिकाओं को प्रभावी बनाने हेतु सुझाव दिए। 1919 के माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार अधिनियम में स्थानीय स्वशासन को प्रान्तों को हस्तान्तरित कर दिया गया तथा 1935 के शासन अधिनियम के तहत राज्य सूची में स्थानीय स्वशासन को शामिल किया गया।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में सविंधान निर्माण के दौरान संविधान सभा में ग्रामीण विकास हेतु पंचायतो के महत्व के सन्दर्भ में महात्मा गाँधी ने कहा कि पंचायतों की शक्ति जितनी अधिक हो जनता के लिए उतना ही अच्छा है। अतः कई सदस्यों के विरोध के बावजूद संविधान के भाग 4 के नीति–निदेशक तत्व में पंचायत को शामिल किया गया। अनुच्छेद 40 के अन्तर्गत ग्राम सभा को

प्रोफेसर रिपु सूदन सिंह, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ में राजनीतिशास्त्र के आचार्य एवं अध्यक्ष हैं। वे छात्र कल्याण अधिष्ठाता भी हैं। वे ख्याति प्राप्त राजनीतिशास्त्री है। श्री राय उसी विश्वविद्यालय में शोध छात्र हैं।

स्वायत्त प्रशासन की इकाईयों के रूप में गठित किया गया। अतः ग्रामीण जनता के जीवन स्तर में वृद्धि के लिए वर्ष 1952 में ''सामुदायिक विकास कार्यक्रम'' एवं वर्ष 1953 में ''राष्ट्रीय विस्तार कार्यक्रम" को फोर्ड फाण्डेशन की मदद से लागू किया गया। परन्तु ग्रामीण विकास अपेक्षित नहीं हो पाया। इसीलिए सरकार द्वारा सामुदायिक विकास कार्यक्रम के बेहतर क्रियान्वयन के लिए 'बलवंत राय मेहता समिति (जनवरी 1957) की स्थापना की गई। नवम्बर 1957 को इस समिति ने 'लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण' योजना की सिफारिश की, जिसे पंचायती राज के रूप में जाना जाता है। मेहता समिति की सिफारिशों के बाद पहली बार 2 अक्टूबर, 1959 को राजस्थान के नागौर जिले में पंचायती राज लागू किया गया। तब से लेकर वर्तमान समय तक ग्रामीण विकास में पंचायतों की भूमिका को सशक्त करने हेतु कई समितियों का गठन किया गया। इनमें प्रमुख हैं :–

- अशोक मेहता समिति – वर्ष 1978
- दांतेवाला समिति – वर्ष 1980
- जी. वे. के. राव समिति – वर्ष 1985
- लक्ष्मीमल सिंघवी समिति – वर्ष 1986
- पी. के. थुंगन समिति – वर्ष 1988

पी.के. थुंगन समिति की अनुशंसा पर राजीव गांधी सरकार ने वर्ष 1989 में लोकसभा में 64वां संविधान संशोधन विधेयक प्रस्तुत किया, जो भारी बहुमत से पारित हो गया, परन्तु यह राज्यसभा में पारित नहीं हो सका। इसी प्रकार विश्वनाथ प्रताप सिंह सरकार ने भी प्रयास किया। अन्ततः वर्ष 1991 में नरसिंह राव सरकार ने पुनः इसे संवैधानिक आधार देने का प्रयास किया तथा 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 पंचायती राज, को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया जो 24 अप्रैल 1993 को लागू किया गया। साथ ही पंचायतों के कार्यों की सूची 11वीं अनुसूची में जोड़ी गई। इसके तहत पंचायती राज की निम्नलिखित विशेषताएं हैंः–

- एक गाँव या गाँवों के समूह में ग्राम सभा का गठन।
- त्रिस्तरीय पंचायती राज की स्थापना।
- जिला पंचायत
- क्षेत्र पंचायत
- ग्राम पंचायत
- पंचायतों के सभी सदस्यों का प्रत्यक्ष निर्वाचन।
- क्षेत्र पंचायत एवं जिला पंचायत के अध्यक्ष का अप्रत्यक्ष निर्वाचन तथा ग्राम पंचायत के अध्यक्ष का प्रत्यक्ष निर्वाचन करना।
- पंचायत के सभी स्तरों में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण का प्रावधान।
- पंचायत के सभी स्तरों पर अध्यक्ष एवं सदस्य हेतु एक तिहाई महिलाओं का प्रावधान।
- पंचायतों का कार्यकाल 5 वर्ष होगा।
- पंचायत सदस्यों के निर्वाचन हेतु न्यूनतम आयु 21 वर्ष होगी।
- पंचायतों के निर्वाचन हेतु राज्य निर्वाचन आयोग का गठन।
- पंचायतों की वित्तीय स्थिति के सुदृढ़ीकरण हेतु प्रत्येक पांच वर्ष पर राज्य वित आयोग का गठन।
- पंचायतों को आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय हेतु योजना का निर्माण एवं इनके क्रियान्वयन हेतु शक्तियों एवं राज्य विधानमण्डल द्वारा ग्यारहवीं अनुसूची के 29 विषयों को सौंपना।

इस प्रकार ग्रामीण विकास हेतु पंचायतों को संवैधानिक दर्जा दिया गया।

ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज का संबंध

ग्रामीण विकास, भारत के समग्र विकास का आधार स्तंभ है। ग्रामीण विकास का आशय ग्राम को शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तीकरण, सड़क, बिजली, पेयजल, नाली का निर्माण, कुटीर उद्योग की स्थापना, कृषि विकास, रोजगार के साधन उपलब्ध कराने, सार्वजनिक कुओं, तालाबों, जलाशयों का निर्माण एवं मरम्मत तथा रख-रखाव, शौचालय एवं स्वच्छता आदि के प्रबंधन से है। ग्रामीण विकास के वास्तविक क्रियान्वयन हेतु पंचायती राज की सशक्त भूमिका मानी गयी है। इसीलिए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि ''वास्तविक बदलाव निस्संदेह गाँव के भीतर से आता है, गाँव में रहने वाले लोगों से ही आता है और वह बाहर से नहीं थोपा जाता। इसके लिए पंचायत सशक्त माध्यम है।'' अतः पंचायती राज के द्वारा ग्राम पंचायतों को ग्यारहवीं अनूसूची में 29 विषय प्रदान किए गए हैं। इन विषयों के सन्दर्भ में पंचायती राज संस्थाएं ग्रामीण विकास मंत्रालय के ग्रामीण विकास विभाग, पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय एवं कृषि, सहकारिता और किसान कल्याण मंत्रालय के कार्यक्रमों के नियोजन और कार्यन्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

ग्रामीण विकास में पंचायतों की भूमिका को निम्न रूप में वर्गीकृत किया जा सकता हैः–

- आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय हेतु योजना निर्माण।
- आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय से सम्बधित योजनाओं का क्रियान्वयन।
- योजनाओं के क्रियान्वयन का मूल्यांकन एवं निरीक्षण करना।

पंचायतें गाँवों में आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, सड़क, बिजली, पेयजल, स्वच्छता, नाली का निर्माण, कुटीर उद्योग की स्थापना, कृषि विकास, रोजगार अवसर की उपलब्धता, गरीबी उन्मूलन, सार्वजनिक कुओं, तालाबों व जलाशयों का निर्माण, मरम्मत एवं रख-रखाव, शौचालय निर्माण एवं पर्यावरण प्रबंधन इत्यादि के संबध में ग्राम पंचायत स्तर पर योजना का निर्माण करती हैं।

पंचायती राज मंत्रालय के नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार देश भर में इस समय 608 जिला पंचायत, 6568 मध्यवर्ती और 247934 ग्राम पंचायतें हैं। ये पंचायतें ग्रामीण विकास में तीन रूप में भूमिका का निर्वहन करती हैं।

पंचायतों की ग्रामीण विकास में भूमिकाः-

ग्राम पंचायतें इन कार्यों को प्रभावी ढंग से नियोजन हेतु ग्राम सभा में चर्चा करती हैं तथा विभिन्न योजनाओं का निर्माण कर क्षेत्र पंचायत व जिला पंचायत के माध्यम से जिला नियोजन समिति को भेजती हैं। जैसे मनरेगा के तहत गाँवों में तालाबों, कुओं, सड़क निर्माण, जल प्रबंधन हेतु योजना बनाकर ग्राम पंचायतें राज्य सरकार को उचित प्रक्रिया के तहत भेजती हैं।

आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय के तहत कई योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। जैसे इंदिरा आवास योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, मनरेगा, स्वच्छ भारत मिशन, अंत्योदय योजना, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, खाद्य सुरक्षा अधिनियम, गोकुल पशु योजना, राजीव गांधी पेयजल योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, सांसद आदर्श ग्राम योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना आदि। इन योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु निम्नलिखित समितियों का गठन किया गया है:-

1) **विकास समिति-** इसका मूल कार्य कृषि ग्रामीण उद्योग एवं ग्रामीण विकास योजनाओं का निर्माण करना तथा क्रियान्वयन करना है।
2) **शिक्षा समिति-** इसके द्वारा ग्राम पंचायतें शैक्षिक कार्यों का प्रबंधन करती है। जैसे प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों पर ग्राम पंचायतों का नियंत्रण तथा प्राथमिक विद्यालयों में भोजन के प्रबंधन की निगरानी करना आदि।
3) **लोकहित समिति-** इसके द्वारा जन स्वास्थ्य एवं ग्रामीण कार्य से संबधित कार्यों या मामलों की देखभाल की जाती है।
4) **समता समिति-** इस समिति द्वारा महिलाओं, बच्चों, अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों तथा पिछड़े वर्गों के लोगों के कल्याण के लिए कार्य संपादित किया जाता है।

   ग्राम पंचायतों के ग्राम सभा में विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन, निरीक्षण एवं मूल्यांकन सामाजिक लेखा परीक्षण के माध्यम से होता है। जैसे इंदिरा आवास योजना का लाभ उचित व्यक्ति को मिला है, या नही, मनरेगा के तहत जरूरतमंद व्यक्ति को न्यूनतम 100 दिन का अकुशल रोजगार मिला है या नही, जाब कार्ड हुआ है या नही आदि।

ग्रामीण विकास के सन्दर्भ मे प्रमुख योजनाओं का अवलोकन

वर्तमान में ग्रामीण विकास हेतु कई योजनाएँ केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा संचालित की जा रही हैं। इनमें पंचायती राज संस्थानों की अहम भूमिका इस प्रकार है।

- महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार (मनरेगा) अधिनियम
- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन
- प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना
- इंदिरा आवास योजना
- स्वच्छ भारत अभियान
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम
- राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम
- राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार (मनरेगा) अधिनियम- इसकी शुरूआत 2 फरवरी 2006 को आन्ध्रप्रदेश के अंनन्तपुर जिले से हुई। इसके तहत ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी रेखा के नीचे के प्रत्येक परिवार के एक सदस्य को वर्ष में न्यूनतम 100 दिन अकुशल श्रम वाले रोजगार की गारंटी दी गई है। आँकड़ो के अनुसार वर्ष 2015-16 में 23,51,832 करोड़ मानव दिवस रोजगार सृजित हुआ, जिसमें से 22.27 प्रतिशत अनुसूचित जाति के लिए तथा 17.69 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के लिए था। महिलाओं की हिस्सेदारी 55.8 प्रतिशत रही। मनरेगा हेतु 38,500 करोड़ रूपये का आवंटन केन्द्र सरकार ने किया था।

मनरेगा मे पंचायतों का कार्य, काम के इच्छुक लोगों से पंजीकरण के लिए आवेदन लेना, जाँच व पहचान करना, जॉब कार्ड जारी करना, काम की पहचान कर योजना तैयार कर मंजूरी के लिए भेजना, आवेदन जमा करने के 15 दिनों के भीतर काम मुहैय्या कराना, विभिन्न योजनाओं एवं कामों का ग्राम सभा मे सामाजिक अंकेक्षण करना आदि है।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन- इसकी शुरूआत 3 जून, 2011 को राजस्थान के बाँसवाड़ा जिले से की गई। इस मिशन के तहत ग्राम स्तर पर वर्ष 2021-22 तक 8–10 करोड़ ग्रामीण गरीब परिवारों को स्वयं सहायता समूहों के फेडरेशन के रूप में गठित कर उनके माध्यम से लाभप्रद स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराये गये। यह लोगों को बेहतर जीवन यापन का स्थायी आधार प्रदान करने की योजना है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक चिन्हित निर्धन परिवार से कम से कम एक महिला सदस्य को स्वयं सहायता समूह में शामिल करने का प्रयास इस योजना मे करना है। जनवरी 2015 तक 316 जिलों के 2,125 सघन ब्लाकों में 20.95 लाख स्वयं सहायता समूह प्रोत्साहित किए गए। 24.5 लाख महिला किसानों को भी सहायता दी गई।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत पंचायत की भूमिका गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों और उनमें से भी सबसे ज्यादा गरीब और बेहद कमजोर की पहचान करने और उनके बीच स्वयं सहायता समूहों के संगठन करने का है। यह काम ग्रामसभा के जरिए संभव हो सकेगा।

प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना - इस केन्द्र प्रायोजित योजना की शुरूआत 25 दिसम्बर, 2000 से किया गया। इसके अन्तर्गत गरीबी कम करने की रणनीति के तहत मैदानी क्षेत्रों में 500 व इससे अधिक की जनसंख्या वाली तथा पहाड़ी जनजातीय एवं मरूस्थल क्षेत्रों में 250 जनसंख्या वाली सभी घरों को सम्पर्क प्रदान करना है।

इसमें ग्राम सभा अपनी नियमित बैठक में सड़क बनाने के लिए जमीन की जरूरतों पर विचार करती है तथा स्थानीय समाज और पर्यावरण पर बुरे प्रभाव का आकलन करती है। निर्मित सड़क के रखरखाव की जिम्मेदारी पाँच वर्ष तक सड़क बनाने वाले ठेकेदार की होती है तथा पाँच वर्ष के बाद जिला पंचायतों की होती है। सड़कों के निर्माण से गाँव की अर्थव्यवस्था बाज़ार से जुड़ जाती है। इससे ग्रामीण विकास को नयी दिशा मिलती है।

इंदिरा आवास योजना - इसका आरम्भ वर्ष 1985–86 में किया गया। इसके तहत गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों को घर बनाने हेतु मैदानी क्षेत्रों मे 70 हजार रूपये तथा पहाड़ी या नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में 75 हजार रूपये दिये जाते हैं। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार वित्तीय वर्ष 31 दिसम्बर, 2014 के दौरान 8.29 लाख घरों का निर्माण किया गया।

इस योजना के तहत पंचायती राज संस्थाएँ, जिला ग्रामीण विकास संस्थाओं से मिलकर तय करती हैं कि एक पंचायत में कितने घर बनेंगे या कितने का सुधार होना हैं। गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों में से इंदिरा आवास योजना के प्रतीक्षार्थियों की सूची से लाभार्थी का चयन ग्राम सभा करती है।

स्वच्छ भारत अभियान - इस अभियान की शुरूआत 2 अक्टूबर, 2014 को की गयी। स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य शौचालय निर्माण, कचरा प्रबंधन, गाँवों की स्वच्छता व प्रचुर मात्रा में पेयजल सुविधा को उपलब्ध कराना है। इसके तहत प्रतिदिन 14,000 शौचालयों के निर्माण को बढ़ाकर 48,000 तक करने की योजना है। साथ ही भारत को वर्ष 2019 तक खुले में शौच से मुक्त बनाने पर जोर देना है।

इसी उद्देश्य से हर गाँव को प्रति वर्ष 20 लाख रूपये मिलेगें और यह पैसा ग्राम पंचायत के पास जमा होगा। यहाँ पंचायत की भूमिका बगैर शौचालय वाले घर की पहचान कर शौचालय बनाने में मदद करना और सामुदायिक शौचालय के लिए जगह उपलब्ध कराने की होगी। प्रत्येक घर को शौचालय बनाने के लिए 12 हजार रूपये की मदद का प्रावधान किया गया है। सामुदायिक शौचालय के लिए 2 लाख रूपये की रकम तय की गयी है। जिसमें राज्य और ग्राम पंचायत की हिस्सेदारी रहेगी। साथ ही देश के प्रत्येक पंचायत में स्वच्छता दूत का चयन करना भी पंचायत का कार्य है।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम - सबके लिए भोजन को लक्षित योजना राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम को 5 जुलाई, 2013 से अध्यादेश के द्वारा लागू किया गया। इस योजना के अन्तर्गत चिन्हित प्राथमिकता वाले ग्रामीण क्षेत्रों के 75 प्रतिशत जनसंख्या वाले परिवारों के प्रत्येक व्यक्ति को 5 किग्रा0 खाद्यान्न प्रति व्यक्ति प्रति माह रियायती दर पर सार्वजनिक वितरण प्रणाली की उचित मूल्यों की दुकानों से मिलेगा। अन्त्योदय अन्न योजना के अन्तर्गत आच्छादित परिवारों को प्रति परिवार प्रति माह 35 किग्रा0 खाद्यान्न मिलेगा।

इसके तहत ग्राम पंचायत के सभी लाभार्थियों की पहचान करने तथा ग्राम सभा द्वारा छः महीने में कम से कम एक बार सामाजिक लेखा परीक्षण किए जाने का काम भी है।

राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम - इसका उद्देश्य वर्ष 2022 तक देश में प्रत्येक ग्रामीण व्यक्ति को उसके घर के दायरे में या अधिकतम 50 मी0 की दूरी में प्रति व्यक्ति 70 लीटर पानी उपलब्ध कराना है। इस योजना के क्रियान्वयन में भी ग्राम पंचायतों एवं समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित की कई है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम - 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार 1 अप्रैल, 2010 से लागू किया गया है। इसके अन्तर्गत शिक्षक-छात्र अनुपात 1:30 होना चाहिए। प्राथमिक विद्यालय ग्राम से 1 किमी0, माध्यमिक विद्यालय 3 किमी0 एवं उच्च विद्यालय 5 किमी0 की परिधि में होना चाहिए। विद्यालय में शिक्षा विकास संबधित विभिन्न कार्यक्रमों के क्रियान्वन एवं मूल्यांकन हेतु पंचायत शिक्षा समिति एवं पंचायत अभिभावक समिति होती है।

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन - राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (2005–12) 18 राज्यों को विशेष दर्जा देने के साथ देश भर में ग्रामीण आबादी के लिए प्रभावी स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने की चेष्टा करता है। इस मिशन के अन्तर्गत संचालित होने वाले विभिन्न योजनाओं जैसे जननी शिशु सुरक्षा योजना आदि के क्रियान्वन में रोगी कल्याण समिति के सदस्य के रूप में पंचायत के सदस्य एवं आशा कार्यकर्ता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

इस तरह ग्रामीण विकास में पंचायतों की अहम् भूमिका होती है, परन्तु ग्राम पंचायतें एवं ग्राम सभा अपने कर्तव्यों का निवर्हन सही ढंग से नहीं कर रही हैं। इस सबंध में कई चुनौतियां एवं समस्याएं हैं। इसमें मुख्य कारक भ्रष्टाचार, प्रशासनिक निष्क्रियता, पंचायतों को वित्त तथा कार्मिक कार्यों को न सौंपा जाना, ग्राम सभा की नियमित बैठक न होना, निर्वाचित प्रतिनिधि के प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था न होना, पति प्रधान का होना, भाई-भतीजावाद की समस्या एवं राजनीतिक दलों का अनुचित हस्तक्षेप इत्यादि है।

अतः पंचायतों के ग्रामीण विकास में भूमिका व महत्व को देखते हुए इसे प्रभावी बनाने हेतु द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग की सिफारिशें, जैसे पंचायतों को वित्त एवं क्रामिक कार्यों को सौंपना, सामाजिक लेखा परीक्षण की व्यवस्था, स्थानीय स्तर पर ओम्बुड्समैन की व्यवस्था आदि लागू किया जाए एवं 'डिजिटल इंडिया कार्यक्रम' के तहत पंचायतों में सामान्य सेवा केन्द्रः ई-पंचायत मोड लागू करना है। गाँवों को ब्रॉड बैंड से जोड़ना जरूरी है तभी सशक्त गाँव, सशक्त एवं सुदृढ़ भारत के निर्माण का सपना पूरा होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अरोडा, आर. के. एण्ड गोयल रजनी (2013) "इंडियन पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन इन्स्टीट्यूशन एण्ड इसूज",न्यू एज इन्टरनेशनल पब्लिसर्श
2. फडिया, बी० एल० (2009) "भारत में लोक प्रशासन", साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा
3. अवस्थी व अवस्थी (2015) "भारतीय प्रशासन", लक्ष्मी नारायन अग्रवाल, आगरा
4. महेश्वरी, श्रीराम (2008) "भारत में स्थानीय स्वशासन" श्रीराम महेश्वरी, ओरियण्ट लॉगमैन, दिल्ली
5. रामचंद्रन, पद्मा (2005) "भारत में लोक प्रशासन", नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली (2014)
6. भारत का संविधान", सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन इलाहाबाद, 2014
7. राय, (2013) "गांधी जी राष्ट्रीय आंदोलन और भारतीय संविधान", भारती भवन, पटना
8. श्रीवास्तव, शर्मा एवं चौहान (2011)"प्रादेशिक नियोजन और संतुलित विकास',वसंधुरा प्रकाशन, गोरखपुर
9. भारत (2016) प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
10. वर्थवाल, सी० पी० (2007)"स्थानिय स्वशासन", सुलभ प्रकाशन, लखनऊ

पंचायती राज-2

तीसरी सरकार के रूप मे पंचायत

❑ डा. चन्द्रशेखर 'प्राण'

After National Government and State Governments the Panchayats have been seen as third government by Political Planners and National Leaders. The Panchayats have been evolved through the historical experiences and governance systems during a long period of social evolution. Dr. Chandra Shekhar 'Pran' has established a social and educational movement as 'Third Government' and working for its useful involvement for rural planning and development. Most important leaders of Souverin India like Mahatma Gandhi, Jawahar Lal Nehru, Ram Manohar Lohiya and Jai Prakash Narayan also have expressed their views to signify the importance of Local Governance in true sense for the rural development. In ancient India the rural society had a self evolved participatory system of local governance to resolve the conflicts of its inhabitants which was considered as one of the most democratic governance by many global thinkers including British Rulers. This article gives an overview of the Panchayati Raj. We are publishing the booklet prepared by Dr. 'Pran' in serial way in this magazine. This is first part of the series.

आजादी के बाद जब देश का संविधान बनना तय हुआ तभी महात्मा गाँधी ने जमीनी स्तर पर आज़ादी व लोकतंत्र को आम आदमी के जीवन का उपयोगी अंग बनाने के लिए पंचायत को आधार के रूप में लेने की बात की थी। लेकिन कुछ कारणों से यह संभव नहीं हो सका। संविधान सभा की एक लम्बी बहस के बाद इस विषय को भविष्य के लिए छोड़ते हुए नीति निर्देशक तत्वों के अन्तर्गत शामिल करके राज्यों के खाते में डाल दिया गया। परन्तु साथ ही संविधान सभा ने पंचायत को एक नई संवैधानिक पहचान देते हुए Self Government अर्थात् अपनी सरकार के रूप में चिन्हित किया।

26 जनवरी, 1950 को भारत का जो संविधान लागू हुआ उसमें दो सरकारों का प्रावधान किया गया। संविधान के भाग 5 में संघ अर्थात् केन्द्र सरकार का विवरण तथा भाग 6 में राज्य सरकार का विवरण हैं। इस प्रकार पहली सरकार केन्द्र सरकार तथा दूसरी सरकार राज्य सरकार है। एक लम्बे समय तक इन्हीं दोनों सरकारों के द्वारा देश का शासन चलता रहा। वर्ष 1992 में 73वें संविधान संशोधन के द्वारा एक और सरकार का प्रावधान किया गया। संविधान के भाग 9 के अन्तर्गत पंचायत व 9 क के अन्तर्गत नगर पालिका के रूप में Self Government अर्थात् 'अपनी सरकार' का प्रावधान किया। नीति निर्देशक तत्व के अंतर्गत अनुच्छेद 40 में भविष्य की जो संकल्पना की गई थी, एक तरह से उसे ही समय और परिस्थिति की माँग एवं दबाव के फलस्वरूप मूर्तरूप देना पड़ा।

इस प्रकार पंचायतों को Self Government अर्थात् 'अपनी सरकार' के रूप में पूर्ण संवैधानिक दर्जा देकर देश में नए सिरे से तीसरी सरकार की स्थापना की गई। इस अपनी सरकार की आवश्यकता और माँग आजादी से पहले व आजादी के बाद देश के सभी प्रमुख राष्ट्र निर्माताओ एवं सामाजिक विचारकों द्वारा बराबर की जाती रही है। 1992 में 73वें संविधान संशोधन के द्वारा ही इसे पूरा करना अब सम्भव हुआ हैं।

सच्ची आज़ादी लोकतंत्र में जनता की प्रत्यक्ष भागीदारी तथा सत्ता का सही अर्थों में विकेन्द्रीकरण है। इन्हीं घोषणाओं के साथ आज से लगभग 20 वर्ष पूर्व देश में नए पंचायती राज को लागू किया गया था। तब से लेकर अब तक विभिन्न राज्यों में इस घोषणा को व्यवहार में उतारने की कोशिश अपने-अपने तरीके से की जाती रही है। यह कोशिश कितनी ईमानदारी के साथ की जाती रही अथवा वह कितनी सफल रही या असफल रही इस पर कई तरह के मतभेद हैं। कुल मिलाकर सच्चाई यही है कि जिस सोच और सपने के साथ नया पंचायती राज लाया गया है, उससे अभी वह कोसों दूर है। इसके कारण भी कई हैं। लेकिन इसमें जो सबसे बड़ा कारण है, उसमें जहाँ एक ओर अभी तक पंचायतों को संविधान के अनुसार समुचित अधिकार और दायित्य का न प्राप्त होना है, वही दूसरी ओर पंचायतों के प्रति लोगों की उदासीनता प्रमुख है। इस प्रकार आज़ादी से पहले और आज़ादी के बाद देश के सामान्य जनों के सशक्तिकरण और बेहतरी का जो भी खाका तैयार किया गया, उसमें पंचायत व्यवस्था को केन्द्र में रखा गया। लेकिन वर्तमान समय में पंचायत के प्रति सामान्य जनों की उदासीनता सर्वाधिक चिन्ता का विषय है।

यह उदासीनता इस अर्थ में नहीं है कि पंचायत के चुनाव में लोगों की भागीदारी कम है, बल्कि इस अर्थ में है कि पंचायतों के कामकाज में लोगों की कोई खास रूचि नहीं है। यह अरूचि जहाँ एक ओर पंचायतों में व्याप्त अनियमितताओं के कारण है, वहीं दूसरी ओर पंचायत के प्रति लोगों में स्वामित्व और अपनत्व का जो भाव आना चाहिए था, वह अभी तक नही आ पाया है। निश्चय ही इसमें कई नीतिगत एवं विधायी कमियाँ है, परन्तु लोगों की उदासीनता को ही बहाना बनाकर व्यवस्था की ओर से इन कमियों को बल प्रदान किया जाता है।

इसके चलते पंचायत का संस्थागत स्वरूप विकास ही नही हो पा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप पंचायत चुनाव में उसके अध्यक्ष (प्रधान/सरपंच/मुखिया आदि) का पद ही एकमात्र महत्वपूर्ण पद बन गया है। जिसके लिए छल, बल और धन का बड़े पैमाने पर प्रयोग हो रहा है। सामान्यतया ग्राम सभा और चुने हुए पंचायत सदस्यों की निष्क्रियता के कारण सरकारी विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में अध्यक्ष

डा0 चन्द्रशेखर 'प्राण' भारत सरकार के नेहरू युवा केन्द्र संगठन के राष्ट्रीय निदेशक के पद से 2013 में स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति लेकर 'तीसरी सरकार' अभियान के प्रमुख प्रेरक एवं संस्थापक के रूप में गाँवों के शासन को गाँधी जी के ग्राम स्वराज्य की अवधारणा से जोड़कर एक सघन अभियान के रूप में चला रहे हैं। प्रस्तुत है उनकी पुस्तक 'तीसरी सरकार' का एक हिस्सा।
Email : cspran854@gmail.com

की भूमिका केन्द्रीय हो गई है और पंचायत का मतलब सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की एजेंसी तक सीमित होकर रह जाने से यह सर्वाधिक विवादित और संघर्षपूर्ण हो गया है। इसी के इर्द गिर्द सारे छल-प्रपंच और अवैध तरीके से जीत का षड्यंत्र चलता है और यही शक्ति प्रदर्शन का केन्द्र बिन्दु बन गया है।

73वें संविधान संशोधन द्वारा पंचायती राज के माध्यम से आम आदमी की सत्ता में प्रत्यक्ष भागीदारी का प्रयास करते हुए 'पंचायती व्यवस्था' को 'अपनी सरकार' का दर्जा दिया गया है और इसके लिए कई महत्वपूर्ण प्रावधान भी किए गए हैं। जैसे, संविधान में विभिन्न स्तरों पर दायित्वों के निर्धारण के क्रम में 11वीं अनुसूची का निर्माण, स्थानीय निकायों के चुनावों को नियमित एवं व्यवस्थित करने के लिए राज्य चुनाव आयोग का गठन, संसाधनों को निश्चित करने के लिए राज्य वित्त आयोग का गठन, गाँव स्तर से लेकर जिला स्तर तक स्थानीय आवश्यकता और माँग के अनुसार योजना निर्माण हेतु, जिला योजना समिति का गठन, 'पंचायत व्यवस्था' को पूर्ण संवैधानिक मान्यता (जिसमें राज्यों के लिए यह एक बाध्यकारी प्रावधान हो) तथा तीसरी सरकार को चरितार्थ करने के लिए चर्चा और निर्णय हेतु 'ग्राम सभा' को संवैधानिक दर्जा देना आदि शामिल है।

यहाँ यह भी महत्वपूर्ण है कि महात्मा गाँधी ने पंचायतों की इस ग्राम स्तरीय व्यवस्था को 'सच्चे लोकतंत्र' तक पूर्ण सरकार (धारा सभा, न्याय सभा एवं व्यवस्थापिका) के रूप में चिन्हित किया था। इसी क्रम में पूर्व प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने सत्ता और अधिकार गाँवों को सौंपने का संकल्प लेते हुए, 1959 में पंचायती राज की शुरूआत की थी। लोकनायक जय प्रकाश ने तो इसे सहभागी लोकतंत्र का मुख्य आधार मानते हुए 'ग्राम पंचायतों को उसके सम्पूर्ण गौरव तथा समस्त अतीत कालीन सत्ता के साथ पुनर्जीवित करने का आह्वान किया था। डा. राममनोहर लोहिया ने चौखंभा राज्य के चिन्तन में देश की सरकार को चार भागों (ग्राम, जिला, राज्य तथा केन्द्र) में परिकल्पित किया था। **राजीव गाँधी ने नये पंचायती राज विधेयक के संसद में प्रस्तुत होने पर समस्त सांसदों को संबोधित करते हुए कहा था, कि यह एक क्रांति है, जो अधिकतम लोकतंत्र तथा अधिकतम शक्ति–हस्तांतरण पर आधारित है। यह क्रांति लोगो के हाथों में शक्ति सौंपती है। उन्होंने यह भी कहा था, कि हम पंचायत लोकतंत्र को वही दर्जा देंगे जो संसद और विधान सभाओं को प्राप्त है।**

पंचायत का 'अपनी सरकार' अर्थात् तीसरी सरकार के रूप में संस्थागत विकास हेतु कई स्तरों पर कार्यवाही की आवश्यकता है। यह कार्यवाही जहाँ एक ओर नीति व अधिनियम के स्तर पर की जानी है, वहीं दूसरी ओर समुदाय एवं व्यक्ति के स्तर पर भी होनी है। सवाल और बहस का विषय यही हो सकता है, कि इसे समानान्तर तरीके से चलाया जाना है, या फिर प्राथमिकता और आवश्यकता के आधार पर क्रमिक रूप में।

पंचायत का ऐतिहासिक संदर्भ

महात्मा गाँधी ने भारत की आज़ादी को भारत के गाँवों की आज़ादी के रूप में देखा था। इसलिए उनका मानना था कि जब तक भारत के गाँवों को आज़ादी नहीं मिलती, तब तक भारत की आज़ादी अधूरी है।

भारत में गाँव एक सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक इकाई है, जो परिवार और पड़ोस से मिलकर बनती है। इस सांस्कृतिक इकाई का जो स्वरूप प्रारम्भिक रूप में विकसित हुआ वह गाँव-समाज है। भारत का यह गाँव-समाज दुनियाँ के बेहतर लोकतंत्र के रूप में चिहिन्त होता रहा है।

इसी गाँव-समाज के बेहतर संचालन के लिए आपसी बैठक के रूप में जो सहज जीवन पद्धति अपनाई गई, उसे पंचायत की संज्ञा दी गई। संवाद, सहमति, सहयोग, सहभाग और सहकार जैसे पाँच तत्वों पर आधारित जीवन-शैली जिसे पंचायत कहा गया, उसी ने शताब्दियों से भारत के गाँव-समाज और प्रकारान्तर से भारत की संस्कृति को सुरक्षित और संवर्द्धित किया है।

अपने प्रारम्भिक काल से गाँव–समाज ने पंचायत की गतिशील परम्परा को संजोया है और वह अपने स्वावलम्बन तथा आत्मनिर्भरता के लिए इसी को आधार बनाया है। इतिहास के सभी कालों में यह परम्परा अक्षुण्ण रही है।

वैदिक साहित्य में सभा और समिति का संदर्भ आया है, जो इसी भावना की पुष्टि करता है। यह परम्परा इस काल में बहुत सुदृढ़ थी। इस काल में प्रत्येक गाँव एक छोटा स्वायत्त राज्य था।

रामायण काल और महाभारत काल में भी पंचायतों का अस्तित्व पूरी तरह से प्रभावी था। इस समय तक केन्द्रीय सत्ता का विकास काफी तेजी से होने लगा था। साथ ही राज्य ग्राम पंचायत की इस सहज, सामाजिक व्यवस्था का उपयोग अपने हितों में भी करने लगा था।

मौर्य काल में पंचायते गाँव जीवन की ही नहीं अपितु समस्त भारतीय जीवन का अंग बन चुकी थी। भारत में समृद्धि और न्यायपूर्ण व्यवस्था के पीछे इसी पंचायत प्रणाली का मुख्य योगदान रहा है।

गुप्त काल एवं मुगल काल में भी यह व्यवस्था अक्षुण्ण रही। मुस्लिम शासकों ने गाँव जीवन की इस स्वतःस्फूर्त व्यवस्था में कोई दखल नहीं दिया, बल्कि अपने स्थायित्व के लिए समय-समय पर इनका उपयोग ही किया। इसी के माध्यम से राज्य और लोक के बीच सही संवाद कायम रहा।

ब्रिटिश काल भारत के गाँवों की गुलामी और पंचायत प्रणाली के ह्रास का काल है। एक सोची-समझी रणनीति के तहत अपने प्रारम्भिक काल से ही व्यापारी बनकर आये अंग्रेजों ने इस प्राचीन एवं लोकप्रिय व्यवस्था पर सबसे अधिक चोट की, जिससे गाँव-समाज में टूटन और दरार पड़ गयी। जिसका सबसे बड़ा खामियाजा उसकी समृद्धि और आत्मनिर्भरता पर पड़ा। गाँव धीरे-धीरे परावलम्बी होने लगे। विपन्नता और संवादहीनता के कारण लोकमानस में व्यापक पैमाने पर असंतोष फैलने लगा। 1857 की क्रांति में इस असन्तोष का व्यापक प्रभाव था।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में अंग्रेजी राज्य द्वारा एक बार फिर से स्थानीय शासन के नाम पर ग्राम पंचायतों के पुनर्गठन का प्रयोग शुरू किया गया। कई तरह के आयोग बनाये गये। लेकिन इस सबके पीछे ग्राम्य जीवन को और अधिक गुलाम बनाने तथा अपनी केन्द्रीय सत्ता को मजबूत तथा लोकप्रिय बनाने का ही भाव प्रमुख रहा। शाही आयोग (1909 ई.) की रिपोर्ट इसका प्रमाण है।

स्वतंन्त्रता आन्दोलन के दौरान पंचायती व्यवस्था का सवाल

भी उठा था। लेकिन यह स्वर इतना प्रबल नहीं हो सका। सभी ने यह माना कि राजनैतिक आज़ादी के बाद गाँवों की आज़ादी स्वतः मिल जायेगी। वैसे महात्मा गाँधी की प्रेरणा से अनेक देशी राजाओं द्वारा पंचायती राज के पुनर्गठन का प्रयास छिटपुट रूप से चलता भी रहा। लेकिन कुल मिलाकर यह काफी कमजोर प्रयास ही रहा।

आज़ादी के बाद संविधान निर्माण के समय उसके निर्माताओं की दृष्टि में पंचायत को वह महत्व नहीं मिल सका जो मिलना चाहिए था। महात्मा गाँधी की दृष्टि में तो इसी को भारतीय संविधान का आधार बनाना चाहिए था, लेकिन उनकी परिकल्पना का सम्मान संविधान सभा नहीं कर सकी। गलती का अहसास होने पर समयाभाव का बहाना बनाकर नीति निर्देशक तत्वों (अनुच्छेद 40) के मध्य राज्यों के रहमोकरम पर पंचायत की व्यवस्था को छोड़ दिया गया।

स्वतंत्र भारत के शुरूआती दौर में कुछ राज्य सरकारों द्वारा पंचायती राज की स्थापना का आधा-अधूरा प्रयास तो किया गया लेकिन जन-सहभागिता और गाँवों के विकास के लिए प्रधानमंत्री पंडित नेहरू द्वारा समुदायिक विकास कार्यक्रम के रूप में एक नये धरातल की तलाश प्रारम्भ हो गई। जिसके चलते पंचायत प्रारम्भ में ही उपेक्षित हो गये। लेकिन सामुदायिक विकास कार्यक्रम की कमजोर सफलता की समीक्षा के निष्कर्ष के रूप में लगभग 9 वर्ष के बाद एक बार फिर से पंचायतों का सहारा लेने के लिए राज्य सत्ता को बाध्य होना पड़ा। बलवन्त राय मेहता कमेटी के सुझावों के आधार पर नये रूप में पंचायती राज व्यवस्था की स्थापना हुई। बड़े धूम-धमाके के साथ प्रारम्भ हुई यह कोशिश बहुत दूर तक नहीं चल पाई। कुछ ही वर्ष बाद फिर से सन्नाटा छा गया। राज्य सरकारों के रहमो करम पर छोड़ी गई पंचायत मरणासन्न स्थिति में पहुँच गई।

फिर तो एक लम्बा अन्तराल आया। करीब 20 वर्षों तक पंचायत व्यवस्था की चर्चा छिटपुट रूप में या दबे स्वर में कभी-कभार जरूरी उठती रही, लेकिन सरकार की दृष्टि अपनी शक्ति को अधिक-से-अधिक केन्द्रित करने में लगी रहीं राजनीति का संकट राष्ट्रीय संकट के रूप में प्रतिष्ठित हुआ और राष्ट्रीय एकता के नाम पर शक्ति और सत्ता का केन्द्रीकृत स्वरूप अधिक विकसित हुआ। इस प्रक्रिया में गाँव-समाज और पंचायत प्रणाली को ही सबसे अधिक झेलना पड़ा। गाँव और गाँव का लोक जीवन बुरी तरह से क्षत-विक्षत हुआ। कुछ प्रमुख सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यकर्ता लोकशक्ति और लोकसत्ता के लिए अपने आवाज उठाते रहे। लेकिन व्यवस्था का दबाव कुछ ज्यादा ही बना। सरकारें तो बदली लेकिन व्यवस्थागत परिवर्तन अधूरा ही रहा। इस बीच कई कमेटियाँ इसकी समीक्षा और विकास के लिए बनती-बिगड़ती रही, लेकिन व्यवहार में कुछ खास नहीं हुआ।

राजीव गाँधी के आगमन के साथ पंचायती व्यवस्था के पुनरूत्थान का नया अध्याय फिर से प्रारम्भ हुआ। संविधान संशोधन के माध्यम से कुछ व्यवस्थागत परिवर्तन करके नये पंचायती राज का खाका तैयार किया जाने लगा। उनके कार्यकाल में तो वह नहीं हो पाया, लेकिन उनके बाद वर्ष 1992 में 73वें संविधान संशोधन के माध्यम से नये पंचायती राज की स्थापना का प्रयास प्रारम्भ हो गया।

धीरे-धीरे 1994 तक लगभग सभी राज्यों के अधिनियमों में संविधान की मंशा के अनुरूप परिवर्तन किये गये और 1995 में नई पंचायती राज्य व्यवस्था के चुनाव अधिकांश राज्यों में सम्पन्न हो गये। इसी के साथ भारत के इतिहास में पंचायती राज का एक नया दौर प्रारम्भ हो गया।

प्रमुख राष्ट्रनायकों के विचार

महात्मा गाँधी

सच्चा लोकतंत्र केन्द्र में बैठे हुए बीस व्यक्तियों द्वारा नहीं चलाया जा सकता उसको प्रत्येक गाँव के लोगों को नीचे से चलाना होगा।

स्वतंत्रता नीचे से प्रारम्भ होनी चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक गाँव एक प्रजातंत्र अथवा पंचायत होगा, जिसके हाथ में सम्पूर्ण सत्ता होगी।

यह पंचायत अपने कार्यकाल में स्वयं ही धारा सभा, न्याय सभा और व्यवस्थापिका सभा का सारा काम संयुक्त रूप से करेगी।

अगर हिन्दुस्तान के हर एक गाँव में कभी पंचायती राज कायम हुआ, तो मैं अपनी इस तस्वीर की सच्चाई साबित कर सकूँगा, जिसमें सबसे पहला और सबसे आखिरी दोनों बराबर रहोगे या यों कहिए कि न कोई पहला होगा, न आखिरी।

अगर हम पंचायती राज का सपना पूरा करना चाहते है तो मानना होगा कि छोटे-से-छोटा हिन्दुस्तानी बड़े-से-बड़े हिन्दुस्तानी के बराबर ही हिन्दुस्तान का शासक है।

जवाहर लाल नेहरू

ग्राम स्वराज्य की यह पद्धति आर्यो की शासन व्यवस्था की बुनियाद थी। ग्राम सभाएँ अपनी स्वतंत्रता की इतनी जागरूकता से रक्षा करती थी कि राज्य द्वारा यह नियम ही बना दिया गया था कि राजा की अनुमति के बिना कोई सैनिक गाँव में प्रवेश न करें।

पंचायती राज के इस प्रयास का अन्ततः उद्देश्य यही है, कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाय कि वह भारत का एक सक्षम प्रधानमंत्री बन सके।

लोकतंत्र का मतलब यह नहीं कि राज्यों में या शिखर पर संसद हो, बल्कि वह कुछ ऐसी चीज है, जो प्रत्येक व्यक्ति की शक्तियों को उभारती हो और उसे प्रशिक्षित कर इस योग्य बनाती हो कि वह देश में अपना समुचित स्थान और आवश्यकता पड़ने पर कोई भी स्थान ग्रहण कर सके।

हमें गाँवों में सत्ता और अधिकार खासतौर से लोगों के हाथ में सौंप देना चाहिए। हमें पंचायतों को पर्याप्त अधिकार सौंपने चाहिए।

जयप्रकाश नारायण

मुझे ऐसा लगता है कि यदि हमारे राजनीति जीवन को पुनर्वासित होना है, तो गाँव को एक बहुत ही वास्तविक अर्थ में पुनः एक बार स्वशासी इकाई बनना होगा।

राजनीति के क्षेत्र में हम चाहते हैं, कि हमारी राजनीतिक संस्थाओं की गहरी जड़े जमें और वे बुनियादी निष्ठाओ के अधिकारी बनें तथा हमारे समष्टिगत अस्तित्व की वास्तविक अभिव्यक्तियों का रूप लें, तो ग्राम पंचायतों को उसके सम्पूर्ण गौरव तथा समस्त अतीत कालीन सत्ता के रूप लें, तो ग्राम पंचायतों को उसके सम्पूर्ण गौरव तथा समस्त अतीत कालीन सत्ता के साथ पुनर्जीवित करना ही होगा।

पंचायती राज सच्चे सहभागी लोकतंत्र का आधार बन सके

इसके लिए कुछ शर्तों की पूर्ति आवश्यक है –

1. व्यापक अर्थ में जनता का शिक्षण,
2. राजनीतिक दलों का हस्तक्षेप नहीं,
3. सत्ता का वास्तविक विकेन्द्रीकरण
4. वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
5. अधीनस्थ असैनिक सेवकों को पंचायत के प्रति पूर्ण उत्तरदायित्व तथा
6. लोकतांत्रिक प्रक्रिया का पूर्ण निर्वाह।

यदि स्वशासन का कोई ऐसा स्तर है, जहाँ जनता का पूर्णतम् योगदान व्यावहारिक रूप से सम्भव है, वह ग्राम स्तर ही है। केवल उसी स्तर पर प्रत्यक्ष लोकतंत्र की प्रक्रिया पर्याप्त रूप से कार्य करेगी।

अपने लोकतंत्र को एक वास्तविक आधार देने और उसकी प्रक्रिया में सम्पूर्ण जनता को सक्रिय एवं स्थाई रूप से शामिल करने के लिए यह आवश्यक है, कि हम पंचायत से भी नीचे जाकर स्वयं जनता तक पहुँचे और ग्रामीण समुदाय के सम्पूर्ण व्यस्क सदस्यों को एक विधिक सामूहिक निकाय–ग्रामसभा के रूप में गठित कर दें। पंचायत को इस ग्रामसभा की कार्यकारिणी के रूप में काम करना चाहिए और ग्रामसभा को विशिष्ठ उद्देश्यों के लिए दूसरी समितियों तथा कार्यकारी दल गठित करने का अधिकार होना चाहिए।

आज जो ग्राम पंचायतें राज्य सरकार के अधिकारियों अथवा स्वयं ग्रामीण समुदाय के अन्दर निहित एवं स्वार्थी हितों के हाथ का औजार बनी हुई है, उनका वह रूप समाप्त होगा और वे जनता की इच्छा को क्रियान्वित करने का समुचित साधन बनेगी।

ग्राम पंचायतों के चुनाव निर्विरोध होने चाहिए। चुनाव संबंधी संघर्षों के फलस्वरूप गाँवों में ऐसे तनाव पैदा हुए हैं, कि पंचायतों के कामकाज वस्तुतः ठप हो गये हैं। खतरा यह है कि कुछ वर्षों में हर व्यक्ति पंचायत और पंचायती राज के नाम से ऊबकर नौकरशाही के असैनिक सेवकों द्वारा ऊपर से होने वाले शासन का ही हृदय से स्वागत करने लगेगा और जनता का लोकतंत्र पूर्णतः विफल और काल्पनिक घोषित कर दिया जायेगा।

संविधान यथा-संभव स्पष्टतापूर्वक यह कहे कि हमारा एक विकेन्द्रीकृत राज्य होगा जिसके पाँच अवयव होगे-केन्द्र, राज्य जिला, ब्लॉक तथा गाँव

राममनोहर लोहिया

सर्वोच्च अधिकार केवल केंद्र तथा संघबद्ध इकाइयों में हीं नहीं रहने चाहिए, इन्हें तोड़कर छोटे-से-छोटे क्षेत्रों में जहाँ नर-नारियों के समूह रहते हैं, बिखरा देना होगा। संविधान बनाने की कला में अब अगला कदम चौखंभा राज की दिशा मे होगा। गाँव, जिला, प्रांत तथा केन्द्र, यही चार समान प्रतिभा और सम्मान वाले खंभे। भारती की संविधान परिषद् यह कार्य कर सकती थी। लेकिन वह मौका चूक गई।

यह चौखंभा राज्य केवल शासन का निरा प्रबंध ही नहीं है। यह ऐसा नहीं होगा कि बड़ी संसद कानून बनाएगी और गाँव तथा जिलों की संस्थाएँ इन कानूनों का पालन करेगी। यह एक जीवन का ढंग होगा जो मानव-जीवन के सभी क्षेत्रों से संबंध रखेगा, जैसे उत्पादन, स्वामित्व, व्यवस्था, योजना, शिक्षा आदि।

चौखंभा राज्य एक ढाँचा देता है और मार्ग दिखाता है। राज्य के साधारण जनों का संगठन इस प्रकार होगा और राज्य की सर्वोच्च सत्ता इस प्रकार बिखरी रहेगी कि उसके अंदर रहने वाला प्रत्येक समुदाय उस तरह अपना जीवन संविधान संशोधन के माध्यम से नये पंचायती राज की स्थापना का प्रयास प्रारम्भ हो गया।

धीरे धीरे 1994 तक लगभग सभी राज्यों के अधिनियमों में संविधान की मंशा के अनुरूप परिवर्तन किये गये और 1995 में नई पंचायती राज्य व्यवस्था के चुनाव अधिकांश राज्यों में सम्पन्न हो गये। इसी के साथ भारत के इतिहास में पंचायती राज का एक नया दौर प्रारम्भ हो गया है।

क्या उत्तर प्रदेश सरकार अपने इस दायित्व का निर्वाह कर रही है ?

- नहीं
- उ.प्र. पंचायती राज अधिनियम में 'न्याय पंचायत' संबंधी उक्त सभी प्रावधानों के अभी भी यथावत विद्यमान होने के बावजूद 1972 के बाद कभी भी उत्तर प्रदेश सरकार ने न्याय पंचायतों के गठन का दायित्व नहीं निभाया।

क्या आप चाहते है ?

- आपको आपके गाँव में ही न्याय मिले।
- आपके छोटे–मोटे विवाद बिना किसी बड़े खर्चे के आपस में ही सुलझ जाये।
- आपको आपकी समझ और आपकी भागीदारी के साथ सस्ता और सुलभ न्याय मिले।
- गाँव का भाईचारा और परस्पर सहयोग एवं परिवार व पड़ोस का प्रेम जो बिगड़ रहा है वह ठीक हो जाये।
- आपके गाँव के 'अपनी सरकार' की न्यायपालिका 'न्याय पंचायत' का पुनर्गठन हो।

तो फिर न्याय पंचायतों के गठन हेतु क्या करें ?

हमारी राय : आप से अपेक्षा

- पहला कदम : नगारिक तथा नागरिक संगठन अपने नागरिक अधिकार का प्रयोग करते हुए अपने स्तर से उत्तर प्रदेश सरकार तथा उसकी ओर से अधिकृत प्राधिकारी यानी जिलाधिकारी दोनों से लिखित रूप में मांग करें कि वे न्याय पंचायतों के गठन की प्रक्रिया तत्काल प्रभाव से शुरू करें।
- दूसरा कदम : न्याय पंचायत के गठन से होने वाले लाभ की जानकारी जन-जन तक पहुँचाये।
- ग्राम सभा की विशेष औपचारिक बैठक बुलाने हेतु ग्राम पंचायत/ग्राम सचिव को बाध्य करें।
- ग्राम सभा स्वयं ही 'अपनी सरकार' की विधायिका' है तो क्यों ने प्रस्तान के जरिये हमारी सभी ग्राम सभाएँ उत्तर प्रदेश सरकार को निर्देश दें कि वह न्याय पंचायतों के गठन के संवैधानिक दायित्वों का तत्काल प्रभाव से निर्वाह करें।

तीसरी सरकार अभियान द्वारा जनहित में जारी

सम्पर्क : 9648116222, 8400702128, 9415140217

ईमेल : tsaup15@gmail.com

पंचायती राज-3

पंचायती राज और ग्रामीण विकास की खाई

❐ प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह

The participation of local people in development at village, block and district level has been visualized as a boon for rural development. Independent democratic India has been churning on its potentials and possibilities for heath management, sanitary and educational benefits to rural India. The country is struggling to become a global economy on one hand, and suffering with a severe poverty, malnutrition, and sustainability crisis of development, on the other.

Why the efforts made through Panchayati Raj are not delivering the required results? We can't aspect Panchayats or rural administration linked from high offices to village units to work in a culture different than the culture of democratic governance and its bureaucracy. Feudal mindset of power holders, corruption in the entire system and centralization of powers on the top executors are the major bottlenecks of ill performance by partially resolved panchayati raj regulations and executions. It needs a thorough reviews, analysis and scientific outlook for its desired impacts. The inclusion of people who should be evolved as a potential democratic partners in governance e.g. SC/ST. women, Illiterate and semi literate populations have also not been skilled or educated for leadership and governance. Hence they are unable to understand the significance of the rural development programs of the government for their own collective benefit. These elected rural partners of governance get indulged in corruption and get happy with their mere share in the budgetary allocations and don't speak for their people. This procedures of rural governance and the gap in rural development outcomes through the present Panchayati Raj Agencies have been discussed in this article.

पंचायती राज पर एक समझदार व्यक्ति ने टिप्पणी की कि पंचायती राज कानून लागू होने के पहले, पंचायतों की भागीदारी ग्रामीण संस्कृति तथा ग्रामीण विकास में बेहतर थी। मै इस टिप्पणी से सहमत हूँ। विकास और खर्च में स्थानीय प्रतिनिधियों की भागीदारी की परिकल्पना हमारे पचांयती राज में सही तरीके से साकार नही हुयी है। भारतीय लोकतंत्र में आजादी के सात दशकों के बाद भी सामूहिक भागीदारी के ऊपर व्यक्तिगत चमत्कारिक नेतृत्व की ऐसी धमक है, कि कई बार सामूहिक भागीदारी औपचारिकता भर बन कर रह जाती है। पर यह भी नीचे के स्तरों पर जिले और ब्लॉक के स्तर तक जाते-जाते लगभग समाप्त हो जाती है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के जिन क्षेत्रों में हमारा आना–जाना है, वहाँ के अनुभव बताते हैं, कि गाँवों के स्तर पर पंचायती राज की सभी योजनाएँ ग्राम प्रधान तथा सरकारी अमले के बीच ही रहती है। पंचायत के चुने हुए सदस्यों तथा आम जनता के साथ विकास की योजना, कार्यो की रिपोर्ट तथा वार्षिक उपलब्धियों की खूबी और खामी को लेकर शायद ही कोई सार्वजनिक चर्चा होती है।

पंचायती राज की योजनाओं तथा प्रावधानों का खाका हमारे विशेषज्ञ लेखकों ने पिछले लेख में प्रस्तुत किया है। योजनाओं, सिद्धान्तों और वास्तविक स्थितियों का आकलन तथा अध्ययन किए बिना हम इसकी सफलता असफलता की समझ बनाएँ तो यह अवैज्ञानिक होगा तथा हमें दिग्भ्रमित करेगा।

केन्द्र एवं राज्य सरकारों की जिन नौ योजनाओं में पंचायती राज की अहम भूमिका है, उनकी नीतियों, योजनाओं, कार्यविधियों तथा उपलब्धियों पर बातचीत करना उचित रहेगा। यदि हमारे सुधी पाठक इन मुद्दों पर अपनी राय, अपना विश्लेषण तथा अपने अनुभवों को हमारे साथ प्रकाशन हेतु साझा करे तो हम इस बहस को ठीक तरह से आगे बढ़ा सकेंगे। पाठकों से इन मुद्दों पर कुछ पंक्तियों से लेकर एक पृष्ठ तक की टिप्पणियाँ हिन्दी, अंग्रेजी या किसी भी अन्य भाषा में आमंत्रित है।

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना एक अच्छी परिकल्पना है, परन्तु यह वाँछित तरीके से नहीं चलायी जा रही है। गाँवों में लघु उद्योग नही हैं और कौशल विहीनता तथा काम के अभाव में कृषि मजदूर कई महीने खाली बैठे रहते। ऐसे में उन्हे सरकारी मजदूरी पर सौ दिन प्रति व्यक्ति रोजगार उपलब्ध कराना गरीबी से लड़ने में उनके लिए मददगार साबित हो सकता है। इन मजदूरों की भागीदारी से कुओं तथा नालियों की सफाई की जा सकती है, परन्तु नियमित सफाई कर्मचारी अधिकतर गाँवों में सिर्फ कागजों में ही सफाई का कार्य करते हैं। चक रोडो की भराई और सार्वजनिक जमीन पर पार्को का निर्माण वृक्षारोपण, पानी की निकासी के लिए छोटी-बड़ी नालियों को जोड़ना, तालाबों का पुनर्रूद्धार आदि अनेकों तरह के सार्वजनिक हित के काम मनरेगा योजना में हो सकते है, पर आमतौर पर ऐसा हो नही रहा हैं। सभी पात्र लोगों का प्रधान या उनके सहयोगी नामांकन भी नही करते। जिनका करते हैं, उनके खातों में मजदूरी जाती तो है, परन्तु पैसा मजदूरों के हाथ से दलालों के हाथ में चला जाता है और सम्बन्धित लोगों में बंट जाता है ऐसा सुना जाता है। ऐसा कई अखबारों एवं समाचार चैनलों में प्रकाशित प्रसारित भी हुआ है। क्या मनरेगा के अन्दर हुए कार्यों का कोई ब्यौरा किसी भी सरकारी या ग्रामीण संस्थाओं द्वारा वार्षिक रूप से गाँव के लोगों के साथ और देश के लोगों के साथ सार्वजनिक तौर पर साझा किया जाता है? क्या ऐसी कोई प्रस्तुति ब्लाक या जिले के स्तर पर सक्षम अधिकारियों द्वारा जनता और प्रेस के सामने नही रखा जाना चाहिए? क्या ब्लाक या जिले के स्तर पर गाँवों के लिए आंवटित सार्वजनिक धन से हो रहे कार्यो के आकलन के लिए केन्द्र सरकारों द्वारा जनता मे से नामित व्यक्तियों की अधिकार प्राप्त नागरिक समितियाँ तैनात नही की जा सकती? इस तरह सरकारों को प्रगति का ब्यौरा सरकारी तथा गैर सरकारी दोनों माध्यमों से मिल सके?

प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना में अवश्य गाँवो को मुख्य सड़कों से जोड़ने का काम हुआ है, हाँलकि सड़कों की गुणवत्ता एवं इनका रख-रखाव एक बड़ी समस्या बनी हुई है। इंदिरा आवास की योजना ने गरीबों को टिकाऊ छत मुहैय्या कराने में

महत्वपूर्ण भागीदारी की है। इसमें स्वौच्छिक एवं गैर सरकारी संगठनों की मदद से अधिक प्रभावी एवं राष्ट्रीय स्वच्छता तथा सौंदर्यीकरण कार्यक्रमों को चलाने पर भी विचार करना चाहिए।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना, ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम, शिक्षा का अधिकार तथा राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की उपलब्धियाँ बहुत ही अस्पष्ट तथा अव्यवस्थित हैं। इनमें भ्रष्टाचार तथा अव्यवस्था की खबरें अक्सर सुर्खियाँ बनती हैं। इन योजनाओं की वैचारिक एवं सैद्धांतिक जरूरतों, योजनाओं के स्वरूप, कार्यकारी ढाँचों, उपलब्धियों के आकलन तथा विश्लेषण पर ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत स्वैच्छिक संस्थाओं तथा क्षेत्र विशेष के विशेषज्ञों के साथ मिलकर अधिक से अधिक काम करने की आवश्यकता है। **ग्रामीण क्षेत्रों की जरूरतों के अनुरूप शौचालयों के निर्माण तथा उनके इस्तेमाल पर अभी भी बहुत कम काम हुआ है। समुदायिक शौचालयों की सफलता अभी सम्भव नही है। इसके लिए उचित कार्य संस्कृति न तो गाँवों में है, न ही शहरों में। इनके निर्माण, रख रखाव और सफाई की व्यवहारिक दिक्कतें सार्वजनिक रूप से हल नहीं की जा सकती। इनकी जगह गाँव में कई स्थानों पर 10–20 शौचालयों का एक साझा गढ्ढा, किसी खाली या सार्वजनिक जगह पर बनाया जा सकता है और इन पर घरों के हिसाब से शौचालय बनाकर आसपास के परिवारों को दिया जा सकता है (चित्र 1)। साझे गढ्ढे, साझे जल स्रोत एवं उस क्षेत्र की सफाई तथा सौंदर्यीकरण का कार्य पंचायतें कर सकती है। साझे गढ्ढों के निर्माण से ग्रामीणों का शौचालय के गढ्ढे भर जाने के डर से उनका उपयोग नही करने की प्रवृत्ति में भी बदलाव आयेगा।**

पंचायतों का सही तरीके से प्रबंधन, उनकी क्षमता विकास तथा उनकी जवाबदेही तय करने का काम राष्ट्रीय एवं राज्य सरकारों का है, क्योंकि उन्ही के पास ढाँचा है, धन है, अधिकार है तथा जवाब देही भी। स्वैच्छिक संस्थाएँ तथा जिम्मेदार नागरिक सरकारी संस्थाओं के साथ भागीदारी कर सकते हैं, यदि उनके बीच अधिकारों, कार्यों तथा बजट की सही साझेदारी हो सके। पंचायती राज की लड़ाई अभी शुरूआती दौर में है। इस पर असली काम होना बाकी है।

पंचायत राज की सम्भावानएँ अभी ठीक से समझी ही नही गयी है, वरना भारतीय लोकतंत्र का एक पिरामिड की तरह विकास हो पाता जिसकी कल्पना गाँधी के ग्राम स्वराज में थी। अंग्रेज शुरूआती दौर में भारतीय गाँवों के स्वशासन एवं आत्म निर्भरता से अचंभित थे। नया पंचायती राज विकास योजनाओं का एक भ्रष्ट भागीदार तो बना, परन्तु न्याय व्यवस्था, सबकी भागीदारी और बुजुर्गों को सम्मान देने वाले उन पुराने मूल्यों का साझीदार नही बना जो भारतीय संस्कृति तथा अच्छे लोकतंत्र के प्राण हैं।

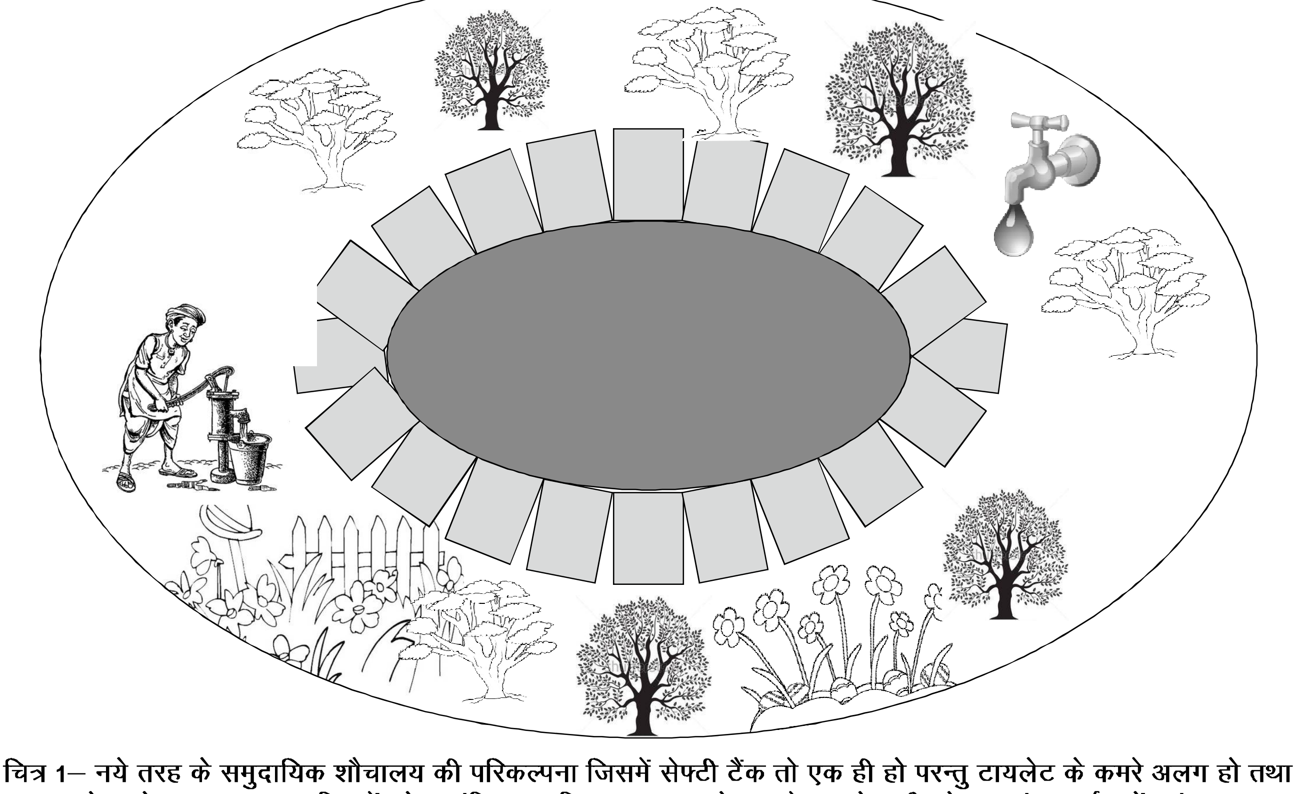

चित्र 1– नये तरह के समुदायिक शौचालय की परिकल्पना जिसमें सेफ्टी टैंक तो एक ही हो परन्तु टायलेट के कमरे अलग हो तथा हर टायलेट को अलग–अलग परिवारों को आवंटित कर दिया जाय। अपने–अपने टायलेट की लोग स्वयं सफाई रखें एवं ताला बन्द रखें, तथा सार्वजनिक जगह की देखरेख पंचायतें करें। इस तरह के साझे शौचालय लोगों की आपसी भागीदारी से भी बन सकते हैं, जिनके लिए वे साझे तौर पर धन जुटाये तथा सरकारी धन का साझा उपयोग कर लें। उस तरह साझे गढढ़ों से साझी जगह पर बने शौचालयों की कुल कीमत कम आयेगी, और सीटों तथा शौचालय के कमरों तथा साझे गढढ़ों की गुणवत्ता बेहतर होगी

पंचायती राज-4

ग्राम स्वराज से ही हिंद स्वराज का सपना साकार होगा

❒ स्व. श्री गुंजेश्वरी प्रसाद

ग्राम स्वराज की महात्मा गाँधी की परिकल्पना पूरी नहीं हुई। अधिकांश लोग मानते हैं कि अपने मूल रूप में नहीं तो नई परिस्थितियों से परिमार्जित रूप में ही सही गाँवों के विकास के लिए यह एक जरूरी सिद्धान्त है। नई तकनीकियों एवं नई पीढ़ी की वैश्विक समझ को समाहित कर गाँधी जी के ग्राम स्वराज के दर्शन से गाँवों की बदहाली से उन्हें मुक्ति मिल सकती है। स्वर्गीय श्री गुंजेश्वरी प्रसाद जी कभी दिनमान के सम्पादकीय टीम में थे, पर उन्होंने अपना बुढ़ापा गाँवो की बदहाली में काटा। तमाम बुरे अनुभवों के बावजूद वे अन्त तक गाँवो के अस्तित्व को बचाए रखने तथा उसे विकसित भारत का हिस्सा बनाने के लिए संघर्ष कर रहते रहे। यह आलेख जो 'ग्रामोत्थान' पत्रिका में प्रकाशित हो चुका है, हम श्री गुंजेश्वरी प्रसाद जी को श्रद्धांजलि देते हुए पुनर्प्रकाशित कर रहे है।

Mahatma Gandhi understood India and needs of the Independent India in different way than his contemporary colleagus who became rulers of the Indian democracy after its Independence. The Gandhi was for village sovereignism an independence of people within their small units with small enterpriunership, agriculture and community culture. Gandhi was different, more meaning full and more visionary and hence he is Mahatma (Sant) and Father of the Nation. The article discusses Gandhian thoughts on rural India.

मेरा अपना अनुमान है कि महात्मा गांधी जब तक जीवित थे, तब तक उनके जीवन को उनके करीब रहने वालों ने भी सही ढ़ंग नहीं समझा। सामान्य जनता ने उन्हें जन नेता के रूप में और संत के रूप में देखकर यह माना कि वह अंग्रेजी राज को हटाने और गुलामी के विरूद्ध राष्ट्रीय आजादी के लिए लड़ रहे है। लड़ाई भी हथियार से नहीं सत्य और अहिंसा के द्वारा लड़ रहे है। लेकिन उनके अहिंसा और सत्य के दर्शन को समझने और समझाने का जो बड़ा काम था, उसे उनके पीछे चलने वाले लोगों ने न समझा और न ही समझाया। ऐसे लोगों ने तो सिर्फ भारत माता की जय और महात्मा गांधी की जय का नारा ही लगाया तथा खादी वस्त्र पहना। खादी वस्त्र के पीछे गाँधी का क्या दर्शन था, उसकी गहराई में कुछ लोगों को छोड़कर बड़े से बड़े कांग्रेसी नेता भी नहीं गए। खादी का दर्शन अहिंसा, सत्य, असंग्रह, शारीरिक श्रम, निर्भीकता, विनम्रता, निष्ठा और दृढ़ संकल्प से जुड़ा हुआ नये भारत का मार्ग दर्शक सिद्धांत है। यह ऐसा सिद्धांत है, जो वर्ण विहीन, धर्म विहीन, शोषण विहीन, धर्म निरपेक्ष समाज की रचना का मार्ग प्रशस्त करता है। खूबी यह है कि यह कम पूंजी में व्यक्ति को स्वावलंबी और भीतर से आत्मविश्वासी बनाता है। इस देश के लोगों ने उनके समय में ही उनके विचारों पर कम ध्यान दिया तथा उनके पीछे भेड़ चाल ज्यादा रखी। **उन्होंने कहा था, ''चर्खा के द्वारा इंग्लैड में लंकाशायर की कपड़ा मिलों को बंद कर देंगे। इससे इंग्लैंड की अर्थव्यवस्था को गहरा धक्का लगेगा। अंग्रेज यहां से चले जायेंगे। भारत आज़ाद हो जाएगा''** उनके आह्वान पर विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई थी। लंकाशायर की मिलो में बनने वाले कपड़ों के विकल्प में खादी का जन्म हुआ। अंग्रेजी राज की अर्थव्यवस्था को आघात पहुंचा। अंग्रेजी राज के अफसरों ने भारत में खादी वस्त्र पहनने वालों के साथ दुर्व्यवहार किया। उन्हें जेल भी भेजा। यह आंदोलन पूरा अहिंसात्मक और असहयोग वाला, स्वावलंबी बनाने वाला स्वदेशी आंदोलन था।

देश जब आज़ाद हुआ तो पूरा देश उस महात्मा को भूल गया, जिसने नमक कानून के विरोध में नमक बनाने का आंदोलन चलाकर यह संदेश दिया था, कि जिन आवश्यक वस्तुओं से व्यक्ति कर जीवन चलता है, उस पर सरकारी टैक्स नहीं लगना चाहिए। खाने-पीने, दवा, पढ़ाई-लिखाई जैसे विषयों से संबन्धित वस्तुओं पर टैक्स नहीं लगना चाहिए।

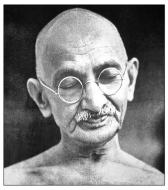

महात्मा गाँधी का दर्शन व्यापक है तथा उसकी बुनियाद में भारत के गाँव हैं। उनकी मान्यता थी कि भारत गाँवों का देश है। यदि गाँव मिट गए तो भारत भी मिट जाएगा। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को स्वावलंबी आज़ाद और अपने शरीरिक श्रम पर भरोसा करने वाला बनाने का सपना देखा था। आजाद भारत में पहले उनकी हत्या हुई। भले ही यह कुछ ही लोगों ने किया था, देश इस कृतघ्नता का मूल्य चुका रहा है। गांधी ने जो दिया, उसके बदले में उनकी मुर्तियाँ लगा दी गयी। उनके विचारों को उन मूर्तियों के नीचे दबा दिया गया। यह भारत की भूल थी। लोगों ने उनके कर्म और विचारों को भुला दिया हमें इसका प्रायश्चित करना चाहिए।

अंग्रेजी साहित्य के महान कवि शेक्सपीयर ने अपनी एक कविता में लिखा है, **''ब्लो, ब्लो, विंटर विंड, दाऊ आर्ट नाट सो अनकाइंड, ऐज मैन्स इनग्रेटीच्यूड''। ''बहो, बहो ऐ बर्फीली हवाओं, बहो, तुम मनुष्य जैसी कृतघ्न तो नहीं हो।''** मनुष्य की कृतध्नता बर्फ से भरी हवा से भी ज्यादा अनुदार होती है। बर्फानी हवाएँ शरीर और मन दोनों को कष्ट देती है। यदि आत्मा का अमरत्व सत्य है, तो इस देश के सत्ताधारियों और शासकों के आचरण से गाँधी जी की आत्मा ज्यादा दुखी होगी।

भारत गाँधी जी को क्यों भूल गया? इस बिन्दु पर विचार करने से पता चलता है, कि आज़ादी के बाद जिन लोगों के हाथ में सत्ता आई वे लोग, सत्ता के मद में चूर हो गये और उन्होंने गाँधी के दर्शन को भुला दिया।

राम चरित मानस में सुग्रीव का चरित्र इस सन्दर्भ में उचित दिखाई पड़ता है। बाली वध के पूर्व सुग्रीव ने श्रीराम से वादा किया था, कि सिंहासनारूढ़ होने के पश्चात वह सीता की खोज में उनकी मदद करेगा। लेकिन, बाली वध के बाद जब वह शासनारूढ़ हो

गया तो अपना वादा भूल गया। ऐसे ही जिन लोगों को सत्ता मिली वे लोग महात्मा गाँधी को भूल गए। **भूलने के तीन कारण सामने उपस्थित थे। अंग्रेजों ने अपना राज्य चलाने के लिए जिस नौकरशाही का गठन किया था, वह राजतंत्री व्यवस्था की नौकरशाही थी। वह नौकरशाही जनतंत्री व्यवस्था की विरोधी थी। वह इस विचार धारा में विकसित हुई थी, कि भारत का शासन जन प्रतिनिधि नहीं चला सकते हैं। अंग्रेजी सरकार की नौकरशाही जनतंत्री व्यवस्था के विरोध में थी, जो महात्मा गांधी के विचारों के विपरीत थी। तीसरी बात यह थी कि भारत में जो नए शासक शासन में आए, वे यूरोप की औद्योगिक सभ्यता तथा आर्थिक क्रांति के मुरीद थे।**

इसलिए इन शासकों को जोर गाँधी जी के कुटीर उद्योगों और व्यवसायों की ओर जाने के बजाय बड़े बड़े उद्योगों तथा कल कारखानों की स्थापना में लगा। और, आखिरी बात अंग्रेजी भाषा के द्वारा रामराज चलाने की थी। हिन्दुस्तानी भाषा के बजाय अंग्रेजी भाषा के प्रति रूचि थी। इन्हीं चार करणों से भारत सरकार के शासकों ने महात्मा गाँधी को भुला दिया। इस अर्थ में नई दिल्ली महात्मा गाँधी के विचारों का कब्रिस्तान बन गई। नगरों और महानगरों में महात्मा गाँधी की मूर्तियो को स्थापित करके शासकों ने देश की जनता को सन्देश दिया कि वह अब सिर्फ पूजा के पात्र हैं। और साथ ही यह जताया कि गाँधी अपनी लकुटी के साथ खड़े रहेंगें। आगे चलने की जरूरत नहीं है। इसी तरह राम और कृष्ण का मंदिर बनवाकर उनके कार्यों और आदर्शो को भुला दिया गया है। अब राम और कृष्ण पूजा मात्र पूजा के पात्र बन चुके है तो इसी प्रकार महात्मा गाँधी को भी भुला देने का काम हुआ है।

आज़ादी आने के बाद महात्मा गाँधी ने कहा था, ''राजनैतिक लड़ाई समाप्त हो गई। अब देश बनाने का असली कार्य शुरू हुआ है।'' आज़ादी आने के छः माह के भीतर उनकी हत्या हो गई। राष्ट्रीय क्रान्ति होने के बाद सामाजिक क्रान्ति करने का अवसर उन्हें नहीं मिला। सामाजिक क्रान्ति के लिए उन्होंने लोकशक्ति को जगाने का सपना देखा था। यही उनकी साधना भी थी। सत्ता को वह परिवर्तन का माध्यम नहीं मानते थे, वरन् उसे सेवा और सहकार का माध्यम मानते थे। सामाजिक परिवर्तन के लिए उन्होने शांतिपूर्ण संघर्ष को माध्यम बनाया था। सोवियत क्रान्ति के नेता लेनिन भी यह जानते थे। इसलिए आज़ादी के बाद गाँधी जी ने कोई पद स्वीकार नहीं किया। उल्टे उन्होंने कांग्रेस पार्टी को विघटित करके उसे लोक सेवक संघ बनाकर सामाजिक परिवर्तन के काम लग जाने की सलाह दी थी।

वह जानते थे कि कोई भी क्रान्ति सरकारी शक्ति से नहीं वरन जनशक्ति से होती है। क्रान्ति की प्रेरक शक्ति के विषय में उनका गहरा चिंतन था कि सामाजिक चरित्र को मानवीय रखना हो तो समाज को समता और बंधुत्व के बुनियादी तत्व को स्वीकार करना होगा। वह ऐसी क्रांति चाहते थे, जिससे उस समाज की रचना हो तथा जिससे समाज के कमजोर से कमजोर व्यक्ति के लिए राजसत्ता पर दबाव बन सके। अब तक जितनी भी क्रान्तियाँ हुई हैं, उन क्रान्तियों से महात्मा गाँधी के सोच की क्रान्ति की पद्धति भिन्न थी। स्वभावतः राज्य बल प्रयोग का साधन नही होता है। नई समाज रचना और हर व्यक्ति के कल्याण की चिंता करने की सोच राज्यसत्ता में नहीं होती है। राज्य सत्ता नैतिक-अनैतिक से निरपेक्ष होती है। इसे नैतिक बनाने के लिए समाज में नैतिक शक्तियों को खड़ा करना होता है। मात्र कानून बना देने से कोई समाज नहीं बदलता है।

इतिहास में 70 वर्षों का कोई बहुत बड़ा अर्थ न हो मगर व्यक्ति के जीवन में 70 वर्ष का बड़ा महत्व होता है। जो बच्चा सन् 1947 में पैदा हुआ वह बूढ़ा हो चुका है। उसने इतने लंबे समय में कोई महात्वपूर्ण परिवर्तन नहीं देखा। वह तो आज स्वतत्रंता के 70 वर्षों बाद लोकतंत्र में लोक लुप्त हो चुका है। **लोक की जगह तंत्र दैत्य बनकर सामने खड़ा है। महात्मा गांधी राष्ट्रीयकरण नहीं चाहते थे। रेलवे, बैंक, जीवन बीमा कंपनियों और तमाम उद्योगों का राष्ट्रीयकरण हुआ है। राष्ट्रीयकरण के द्वारा नौकरशाही मजबूत हुई है और भ्रष्टाचार बढ़ा है।**

इस समय देश के समक्ष सबसे बड़ी समस्या भ्रष्टाचार को लेकर है। भ्रष्टाचार की गिरफ्त में जन प्रतिनिधि, सांसद, विधायक, शासन के मंत्री और बड़े-बड़े नौकरशाह हैं। राष्ट्रीयकरण में नौकरशाही इतनी शक्तिशाली बन जाती है, कि जनता मात्र उपभोक्ता बनकर रह जाती है। जिस व्यवस्था में जन उपभोक्ता हो और तंत्र भोगवादी हो, उसे जनतंत्र नहीं कहा जा सकता है। **अंग्रेजी राज की शिक्षा प्रणाली अपने पुराने स्वरूप में चल रही है। अब तक शिक्षा में सुधार के लिए कई आयोग और कमेटियाँ बनी लेकिन कोई सुधार नहीं हुआ। अधिकतर भारत के राज्यों में शिक्षक, शिक्षार्थी, जनता, नौकरशाही तथा जन प्रतिनिधि के कुविचारों के सामान्जस्य से शिक्षा में भ्रष्टाचार तथा विद्यार्थियों द्वारा नकल के समावेश पर अंकुश नही लग पा रहा है। जीवन की यह मूलभूत नीव जब नही सुधर पा रही है, तो विकास का क्या होगा? यह अत्यंत चिंतनीय है।**

अब सवाल यह कि इस समय जो प्रचलित लोकतांत्रिक प्रणाली है, उसके द्वारा क्या इस समाज के स्वरूप को बदला जा सकेगा? भूमि सुधार, आवास भूमि और काश्तकारी कानून के परिप्रक्ष्य में अनेक कानून बने हुए हैं, मगर सही कानून निष्प्राण है। दहेज विरोधी कानून बना परन्तु रोजाना यह रोग बढ़ता जा रहा है। इतना बड़ा अभिशाप अब उच्चता का प्रतीक बन गया है। जो जातियाँ तिलक-दहेज से मुक्त थीं, उनमें भी यह रोग बढ़ता जा रहा है। तो फिर कानून बन जाने या बना देने से यह रोग नहीं रूकेगा। इसके लिए सामाजिक आंदोलन और शांतिपूर्ण संघर्ष करने के अलावा कोई रास्ता नहीं है। ये सारे काम सरकार के वश में नहीं है। इस स्थिति को बदलने के लिए गाँव-गाँव में क्रान्ति की ज्योति जलानी होगी। जर्मन अर्थशास्त्री शुमाकर ने लिखा है, ''सरकार प्रचलित व्यवस्था की कार्य पालिका से अधिक कुछ नहीं होती है और न इस व्यवस्था के दर्शन को क्रियान्वित करने से अधिक कुछ करती है''। सच तो यह है, कि प्रचलित व्यवस्था के दर्शन को कैसे बदला जाय? पूरे देश की लगभग 60 प्रतिशत

आबादी गाँवों में रहती है और शेष 40 प्रतिशत नगरों और महानगरों में रहती है। जो 40 प्रतिशत लोग शहरों में रह रहे हैं, उनमें कुछ हिस्सा विभिन्न प्रकार के मजदूरों का है, कुछ चौथे वर्ग और कुछ तीसरे वर्ग के कर्मचारी हैं। शेष व्यापारी, उच्चाधिकारी, मंत्री और राज नेता हैं। शहरों में यद्यपि गंदगी है, गंदी बस्तियाँ हैं, इसके बावजूद लोग गाँवों से शहरों की और अबाध रूप से जा रहे हैं।

शहरों का एक छोटा सा वर्ग ही संपन्न है। संपन्न लोगों में एक वर्ग ऐसा है, जो पाश्चात्य जीवन शैली के सुखों का भोग कर रहा है। इस छोटे वर्ग का जो शिक्षित तथा आर्थिक दृष्टि से संपन्न है, भी यही वर्गीय दर्शन है। इस दर्शन का प्रभाव गाँवों के विशिष्ट वर्ग पर पड़ रहा है और वे भी शहरों की और जा रहे है। **इस व्यवस्था की दृष्टि यह है, कि जो हमारे पास है, उससे अधिक हमारे पास हो जाय। सारी राजनीति, सारी शिक्षा, सारे विषेशाधिकार इसी छोटे शीर्षस्थ वर्ग तक सीमित है।** यह जरूरी नहीं है, कि सभी पूँजीपति हों, मगर सबके सब विषेशाधिकारयुक्त हैं। सार्वजनिक क्षेत्र ही औद्योगिक अर्थ रचना का सबसे बड़ा हिस्सा है।

जहां तक ग्राम स्वराज का प्रश्न है, इस विषय की ओर देश के शासकों ने आज़ादी के बाद से आज तक ध्यान नहीं दिया। शासन सत्ता के विकेंद्रीकरण के परिप्रेक्ष्य में जिस तरह का पंचायती राज अस्तित्व में आया, उसमें आत्मा है ही नहीं। अगर ग्राम पंचायतों में आत्मा होती तो गाँवों से शहरों की ओर पलायन क्यों होता?

सरकार के बजट का ज़्यादा धन शहरों के ऊपर खर्च होता है। उद्योग और कल कारखाने शहरों में स्थापित होते हैं। उच्च स्तर के अस्पताल, अच्छे स्कूल, अच्छी सड़कें, ज्यादा से ज्यादा बिजली की अपूर्ति और सुरक्षा की व्यवस्था शहरों में होती है। इसलिए रोटी–रोजगार के लिए गांवों के मजदूर और शिक्षित शहरों की ओर जा रहे हैं। अगर गाँवों में ही रोजगार के साधन मुहैया कराए जाँए और गाँवों को मुख्य सड़को से जोड़ा जाय तो गांवों से पलायन रूक सकता है।

आखिर मशीनों के आने से पूर्व भारत के गांव स्वावलंबी थे। गांवो में कुटीर उद्योग थे। बुनकरी, बढ़ई गिरी, लुहारी, चमड़े का करोबार और कई तरह के हस्तशिल्प के काम होते थे और ऐसे कुटीर उद्योगों में काम आने वाली वस्तुओं का उत्पादन भी गांवों में ही होता था। मतलब कुटीर उद्योग और कृषि दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए थे। महात्मा गांधी कुटीर उद्योगों के विकास की बात करते थे। वह चाहते थे, हर गांव अपनी जरूरत का सामान पैदा न करें। अगर किसी वस्तु की जरूरत हो, और अपने गांव में न हो तो पड़ोस के गांव से ले ले।

महात्मा गांधी की सोच में ऐसे गांव की तस्वीर थी, कि जिसके पास खेल का मैदान हो, स्कूल हो, चारागाह की भूमि हो, पुस्तकालय हो और खेती की सिंचाई के साधन हों तथा बाग हो। इसके अतिरिक्त जो भूमि बचती है उसमें सब्जी पैदा की जाय। इसके लिए ग्राम पंचायत की व्यवस्था पर उन्होंने विचार किया था, कि पूरे गाँव से पांच व्यक्ति जो पढ़े लिखे हों, सालभर गाँव की हर व्यवस्था की पहरेदारी करें। आपसी झगड़ों का निपटारा करें। पुनः अगले साल के लिए भी पांच व्यक्ति चुने जाँय। ग्राम स्तर से केन्द्र से ऐसे ही राज्य और केन्द्र के लिए चूने जाँय। ग्राम स्तर से केन्द्र स्तर तक प्रशासनिक, न्यायिक कार्यो का विकेंद्रीकरण हो इस व्यवस्था में कहीं कोई टकराव नहीं था। प्रतिनिधि के स्थायित्व का प्रश्न नहीं था। हर प्रतिनिधि सालभर तक ही पट्टेदारी कर सकता था।

गाँधी के सपनों के ग्राम स्वराज की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि वह चाहते थे कि जो घर-मकान बने उसकी सारी सामग्री 5 मील की दूरी में मिल जाय। चुनार, मिर्जापुर या जबलपुर न जाना पड़े। इस प्रकार उनकी सोच में न कोई आरक्षण था, और न तो कोई जाति भेद था। चुनाव व्यय तो बिलकुल नहीं था । राजनीति शास्त्र के विद्वानों ने इस व्यवस्था को राज्यसत्ता विहीन अराजक व्यवस्था कहा है। लोकनायक जय प्रकाश नारायण ने इसे दलविहीन लोकतंत्र कहा था। डा. राम मनोहर लाहिया चौखम्भा राज कहते थे।

आज़ादी के बाद शासकों ने गाँधी के सपनों को तार–तार कर दिया। पूरी सत्ता चार खम्भों ग्राम, जिला, राज्य और केद्र के बजाय सिर्फ दो खम्भों, केंद्र और राज्य में केन्द्रीकृत हो गयी।

भारत का जो संविधान निर्मित हुआ , उसे महात्मा गाँधी ने नहीं देखा था। उसमें उनके सपनों का समावेश भी नहीं हो पाया है। इस संविधान के द्वारा जो लोकतंत्र स्थापित हुआ, उसकी जड़ें भारत के बाहर इंग्लैण्ड, अमरीका, कनाडा और आस्ट्रेलिया में थीं। ऐसे संविधान के प्रकाश में जन प्रतिनिधियों के निर्वाचन हेतु निर्वाचन आयोग बनाया गया। चुनाव प्रणाली को इतना खर्चीला बनाया गया कि समाज का कमजोर वर्ग मात्र मतदाता बनकर रह गया। इसके साथ ही दलित जातियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था कर दी गई। महातमा गाँधी के सपने में ऐसी चुनाव प्रणाली की व्यवस्था को प्रस्तुत किया गया है उसमें लोकसभा, विधानसभा और जिला पंचायत के चुनाव में भाग लेने की बात तो दूर का सपना है। ग्राम पंचायतो का चुनाव भी इतना खर्चीला हो गया है कि कमजोर वर्ग का आदमी चुनाव नहीं लड़ सकता है।

खूबी यह है कि हर पाँच वर्ष में ग्राम पंचायतों का चुनाव होता है। ग्राम प्रधान और ग्राम पंचायत के सदस्य चुने जाते है लेकिन न कभी ग्राम पंचायत की बैठक होती है, और न तो कभी ग्राम सभा ही आहूत होती है। सारा काम ग्राम पंचायत अधिकारी, लेखपाल और ग्राम प्रधान मिलकर रजिस्टर में कर लेते हैं। ग्राम पंचायत और पंच सदस्य अनपढ ग्राम प्रधान गाँव की आय और व्यय के बारे में नहीं जान पाते है। इस व्यवस्था को देखकर यही आभास होता है, कि अंग्रेजी राज में अपना शासन चलाने के लिए जिस तरह हर गाँव में अपनी सरकार का एक पंचवर्षीय मुखिया बनाते थे। ग्राम प्रधान गाँव के कामकाज से दूर रहकर कमाने के चक्कर में लगा रहता है। फिर भी क्या पुलिसवाला और क्या तहसील वाला उसी की बात सुनते हैं।

महात्मा गाँधी की ग्राम पंचायत अल्पमत और बहुमत की नहीं थी। उनकी पंचायत सर्वमान्य थी। लेकिन इस सरकार द्वारा गठित ग्राम पंचायतों अल्पमत और बहुमत का प्रतिनिधित्व करती हैं।

जागेगी हर बस्ती

❒ श्री शरद गोकस

जागेगा हर बस्ती का इक-इक कोना
अनपढ़ होने का दुख हमको नहीं है ढोना-2

आजादी के बाद भी ये कैसी है गुलामी।
इक टुकड़ा रोटी की खातिर इज्जत खोना
इज्जत खोना... जागेगा, हर बस्ती...

अनपढ़ जीवन, बंजर धरती सा दुखदायी।
जीवन की धरती में अक्षर उगले, सोना।
उगले, सोना.... जागेगा, हर बस्ती...

अंधकार की साजिश में हम आंखें मूंदे
कैसे देखें लोकतंत्र का सपन सलोना
सपन सलोना... जागेगा, हर बस्ती...

अपना दु:ख, अपनी किस्मत से हम क्यों बांधे।
हक की खातिर पढ़ना है, अब छोड़ो रोना
छोड़ो रोना,
जागेगा, हर बस्ती का इक कोना कोना
अनपढ़ होने का दुख हमको नहीं है ढोना

लेखकों के लिये आमंत्रण

कहार पत्रिका के आगामी अंकों में प्रकाशन हेतु निम्न विषयों पर आलेख/रिपोर्ट (आंकड़ो, चित्रों तथा संदर्भों सहित), छायाचित्र, रेखाचित्र, कार्टून, साहित्यिक रचनायें (कहानी, कविता, नाटक, लघु संरचनाएं, व्यंग्य, संस्मरण, यात्रा विवरण, डायरी आदि) के रूप में आमंत्रित हैं। रचना के साथ रचनाकार का चित्र, संपर्क का पूरा पता (ई–मेल सहित), तथा रचना के स्वरचित एवं अप्रकाशित होने का स्वयं का प्रमाण पत्र तथा कॉपीराइट ट्रान्सफर का अधिकार पत्र भी भेजें। प्रकाशित रचनाओं पर रचनाकार को (इच्छा जाहिर करने पर) नकद या पुस्तकों के रूप में उचित परिश्रामिक भी दिया जायेगा।

अपेक्षित विषय

शहर एवं महानगरः इनकी संस्कृति, पर्यावरण एवं स्वच्छता, विकास एवं फैलाव, विकास के मॉडल, शहरों का जीवन, शहरों का अर्थतंत्र एवं विज्ञान, स्मार्ट शहर, आदि।

गाँव एवं कस्बे : इनकी संस्कृति, पर्यावरण एवं स्वच्छता, जीवन पद्धति, गाँवों का अर्थतंत्र एवं विज्ञान, लघु उद्योग एवं कौशल आधारित उद्योग धन्धे, कृषि, बागवानी, पशुपालन, स्मार्ट गाँव, गाँवों का विकास मॉडल, गाँव बनाम शहर, गाँव बनाम कस्बे, गाँव से पलायन, गाँवों की शिक्षा, गाँवों का स्वास्थ्य ढांचा, पंचायते, गाँव के युवा, गाँवों का भविष्य इत्यादि।

शिक्षा : प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च शिक्षा एवं शोध शिक्षा का स्वरूप एवं इनकी चुनौतियाँ, शिक्षा के ढाँचे, शिक्षा की संस्कृति, शिक्षा की आवश्यकता, शिक्षा के लाभ, भारतीय शिक्षा तंत्र की समालोचना, विज्ञान शिक्षा, विज्ञान शोध, विज्ञान संस्कृति एवं शिक्षण संस्थाये, मानक शिक्षा व्यवस्था, भारतीय शिक्षा पद्धतियाँ आदि।

स्वास्थ्यः स्वास्थ्य के ढाँचे, कार्य पद्धति, अर्थतंत्र, संस्कृति, अंग्रेजी, आयुर्वेद, होम्योपैथी, नेचुरोपैथी, योग आदि चिकित्सा एवं स्वास्थ्य पद्धतियाँ, सबका स्वास्थ्य, अपना स्वास्थ्य अपने हाथ आदि।

अन्य : कृषि, संस्कृति, उद्योग, विकास बनाम टिकाऊ विकास, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, राजकाज, शासकीय योजनायें, शासकीय संस्कृति, शासकीय तंत्र, जीवन और लोक से जुड़े अन्य रूचिकर और जरूरी विषय।

ग्रामीण पहल

जरूरत है सही शुरूआत की

❒ प्रोफेसर भगवान सिंह

पानी का संरक्षण महत्वपूर्ण जरूरत के रूप में सर्व स्वीकृत है। पानी के संरक्षण के लिए कुँओ के महत्व को नाकारा नही जा सकता। गाँवों में हैण्डपम्प, पाईप लाईन और ट्यूबवेल आने से कुऐ उपेक्षित हो कर नष्ट होते जा रहे है। प्रोफेसर भगवान सिंह ने इस लेख में कुँओं की आवश्यकताओं को रेखंकित करते हुए उनके पुनरोद्धार के लिए किये जा रहे अपने प्रयासो तथा उसके प्रभावो को रेखांकित किया है।

Water conservation and cleanness are key aspect for survival of all life forms including human being. The tradition wisdom of water utilization and conservation in Indian Villages has become more relevant in era of the increasing water crisis due to pollution and global warming. The present article reports several initiatives of villagers to restore wells in a village on initiative of the author.

इस साल गर्मी की छुट्टियों में मै अपने गाँव गया तो सबसे सुखद अनुभव हुआ कुएँ को लेकर। वर्तमान युवा पीढ़ी भले ही इस बात से अवगत न हो, लेकिन सर्वविदित तथ्य रहा है कि पहले गाँव से लेकर शहरों तक पानी कुएँ से ही सुलभ होता था। कुएँ के अतिरिक्त पशु-पक्षियों को पानी सुलभ कराने के लिए पोखर, तालाब हुआ करते थे। शहरों में बोरिंग और मोटर के चलन ने कुओं को समाप्त करना शुरू किया, लेकिन गाँवों में कुएँ काफी समय तक आबाद रहे। साथ ही खेतों की सिंचाई का काम भी इनके जरिये होता था। ढेकुल, रहट जैसो उपकरणों से कुओं का जल निकाल कर पटवन का काम किया जाता था। इससे पानी की तनिक भी फिजूलखर्जी नही होती थी। किन्तु पिछले दो-तीन दशकों के दौरान गाँवों मे हैड़ पंप, बोरिंग-मशीन का चलन इतनी तेजी से बढ़ा कि लोग कुओं से उदासीन होकर पीने से लेकर सिंचाई तक के कार्य या तो हैड़ पंप से या बोरिंग से करने लगे। नतीजतन इन कुओं का अस्तित्व संकट में पड़ता गया और कई कुओं को लोगों ने ईट-मिट्टी से भरकर पाट दिया।

एक कुआँ मेरे घर के पास स्थित शिव-मंदिर से सम्बद्ध रहा है। शिवालय से जुड़े इस कुएँ के सारे शिवभक्त लोटा में पानी भर-भर कर शिवलिंग पर ढारते थे। इस कुएँ से ढेकुल, रहट लगाकर खेत पटवन का भी काम होता था। लेकिन इस कुएँ से ढेकुल, रहट लगाकर खेत पटवन का भी काम होता था। लेकिन इस कुएँ के अगल-बगल दो-दो हैड पंप लग जाने के कारण सारे शिवभक्त कुऐं की जगह हैण्ड पम्प का पानी चढ़ाने लगे। इसके बगल में ही बोरिंग हो जाने के कारण इससे पटवन का काम लेना

भी लोगो ने छोड़ दिया। नतीजा यह हुआ कि यह कुआँ भी अन्य कुओं की तरह लगातार ईट-मिट्टी से भर गया। यह कुआँ भी अन्य कुओं की तरह समाप्त होने के कगार पर पहुँच चुका था। पिछले साल गाँव गया तो इस कुएँ का पुनरोद्धार करने का प्रस्ताव और आर्थिक सहायता देने का आश्वासन देकर मै भागलपुर आ गया। सुदामा चौबे, दयाशंकर सिंह एवं उनकी धर्मपत्नी कुन्ती देवी ने यह कार्य सम्पन्न कराने की जिम्मेदारी ली। इनसे दूरभाष पर मेरा संपर्क बना रहा और कुएँ से निमित कुछ निर्देशो को मैं देता रहा। छः-छः मजदूरों के सहारे इस कुएँ के पुनरोद्धार का कार्य तीन दिनों तक चला। उसमें जमा समस्त ईटों एवं मिट्टी को निकाला गया और उनका जल-स्रोत फिर सक्रिय हो गया। कुआँ पानी से लबालब हो उठा। कुएँ में पाइप लगाकर एक चापाकल लगा दिया ताकि इसके पानी का इस्तेमाल होता रहे। इस कार्य को सम्पन्न कराने में लगभग पच्चीस हजार खर्च हुए जिसमें मध्यप्रदेश विधानसभा सचिवालय द्वारा गाँधी-दर्शन-पुरस्कार के अंतर्गत मुझे प्रदान की गई राशि की अहम भूमिका रही।

इस बार गाँव गया, तो इस दम तोड़ते कुएँ के जिन्दा होते देखकर मन आह्लादित हो उठा इससे अधिक आह्लादित हुआ यह देखकर कि इस कुएँ के पुनरोद्धार कार्य से प्रेरित होकर एक अन्य ग्रामीण रमाशंकर चौबे ने भी अपने घर के पास के मरते कुएँ का पुनरोद्धार कराया है और उसका जल अब लोगों के काम आने लगा है। दूसरी खुशी इस बात की हुई कि धरती से पानी निकालने

प्रोफेसर भगवान सिंह तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, में हिन्दी के आचार्य हैं। वे ख्यातिप्राप्त गाँधीवादी हैं और गाँवों के विकास के लिए सक्रिय हैं। यह आलेख 'गाँव' पत्रिका के अक्टूबर 2014 अंक से साभार लिया गया है।

वाले हैंड पंप, बोरिंग जैसे आधुनिक तकनीक से मोहाविष्ट युवा पीढ़ी में कुओं के प्रति आकर्षण बढ़ चला है, क्योंकि वह भी पानी की फिजूलखर्ची को रोकने लगा है। सच तो यह है, कि अत्यधिक पानी निकासी के कारण गर्मी में कई हैड़ पंप के या बोरिंग के जल स्तर इतने नीचे चले जाते हैं, कि उनसे पानी आना बंद हो जाता है, जबकि कुएँ कभी सूखते नही थे।

कुछ युवकों से भेट हुई तो वे और दो-तीन सार्वजनिक कुओं का पुनरोद्धार कराने का आग्रह करने लगे। जब इस नई पीढ़ी को मैने बताया कि कैसे पहले इन कुओं से ढ़ेकुल या रहट के जरिए सिंचाई के कार्य सम्पन्न होते थे, तो ऐसे उपकरणों के लिए उनका मन मचलने लगा। आज की तारीख में ये उपकरण लुप्तप्राय हो चुके हैं मेरे क्षेत्र में न तो ढेकुल बनाने-चलाने वाले इल्मदार रहे न रहट का नामोनिशान रहा। काश! आज गाँधी होते, तो जिस तरह उन्होने लुप्तप्राय हो चुके चरखे को खोज निकाला और हाथ-पैर को बेकार करने वाले मशीनीकरण के बरक्स पूरे देश में हस्त उद्योग के रूप में चरखे का जाल बिछा दिया, उस तरह आज वे पानी की फिजूलखचर्जी को रोकने एवं हाथ-पैर के श्रम पर आधारित ढेकुल, रहट जैसे लुप्तप्राय हो चुके उपकरणों को खोज निकालते। निस्संदेह यह एक असंभव हो चुके कार्य को संभव बनाने की चुनौती होती, किन्तु इसमें संदेह नही कि आज भी तालाब की तरह पुरातन हो चुके ये कुएँ काफी उपयोगी हैं। हैण्ड पंप तथा बोरिंग आदि गर्मियों में दगा दे जाते है, किन्तु इन कुओं

का पानी कभी सूखता नही था। यह कारण था कि इन कुओं को इनार या इनारा यानि वर्षा के देवता इन्द्र का इन्द्रासन भी कहा जाता था। इनार या इनारा इन्द्रासन का ही अपभ्रशं रूप है। बढ़ते जल संकट, जल स्तर के निरंतर नीचे होते जाने के संकट को ध्यान में रखते हुए कुओं एवं ढेकुल तथा रहट जैसे उपकरणों की वापसी वांछनीय जान पड़ती है। वस्तुतः आज प्रौद्योगिकी की कोख से मानव श्रम को विस्थापित करने वाले पैदा हो रहे नाना यंत्रों के बरक्स श्रम आधारित इन पुराने उपकरणों की वापसी कम से कम जल संकट से निपटने के लिए अत्यन्त वांछनीय प्रतीत होती है।

इस बार इस सुखद अनुभूति के साथ गाँव से लौटा कि गाँवो के अभिन्न अंग रहे कुओं को न मिटने देने को एक छोटी-सी मुहिम मेरे खिती कला गाँव में आकार लेने लगी है। सचमुच नई तकनीक के अंध मोह से पड़कर जिसे पुराने समझ कर मिटा देने में हम विकास की गति देख रहे हैं, उस पुराने में अब भी काफी दमखम है। जरूरत है उसकी वांछनीयता से नई पीढ़ी को अवगत कराया जाये। जो, दूसरा सुखद अनुभव हुआ वह कि "कैसे युवा शक्ति या स्त्री-शक्ति को संगठित कर छोटे-मोटे रचनात्मक कार्य कराए जा सकते हैं।

मेरे घर के पास स्थित इस शिव मंदिर में गाँव के सभी लोग आकर पूजा करते है, कथा कहलवाते है, या फिर अष्टयामक आयोजन करते है। इस अष्टयाम में दलित वर्ग के गायक भी शामिल होते है। यानि शिवभक्तों की भरमार है, किन्तु एक से दो बीघा में फैले इस मंदिर-परिसर में फैली गंदगी, घास-पात के उगे जंगल की सफाई से इनका कोई वास्ता नही, ऐसा देखकर महसूस हुआ। सड़ रहे फूल, बेल-पत्र, अनर्गल खर-पतवार के फैले फूहड़ जंगल को हटाकर परिसर को साफ-सुथरा रखने में इन शिवभक्तों की कोई अभिरूचि नही। मानों वे शिव की नही बल्कि उनके आसपास मौजूद गंदगी की पूजा करते हैं। मंदिर के पास बीस-पच्चीस आम के पेड़ो का बगीचा है, छायादार पीपल का है इसकी छाया तले बच्चे गिल्ली-डंडा या क्रिकेट खेलते हैं। बहुत से युवक एवं बुजुर्ग बैठकर निरर्थक गप्पे मारते हैं। कुछ युवक तो दिन में ही मदिरापान कर मस्ती में खो जाते है। लेकिन उनसे यह नही होता है, कि कुछ घंटो का श्रम कर शिवालय-परिसर की सफाई कर दें।

एक दिन मेरी पत्नी वहाँ पूजा करने गई तो परिसर में फैली गंदगी की वीभत्सता ने उन्हे मर्माहत कर दिया। घर आते ही वे मेरे पीछें पड़ गई कि मै वहाँ की गन्दगी साफ करवाऊँ। एक दिन कुछेक युवकों को गंदगी साफ करने के लिए ललकारा भी, लेकिन उन पर कोई असर नही हुआ। सो एक दिन सुबह-सुबह दो–तीन बच्चों को लेकर मै परिसर की सफाई कार्य में जुट गया। एक दो पढ़े लिखों ने व्यंग्य भी किया कि आप तो गाँधी जी हो गए। उनके व्यंग्य से तिलमिलाने के बजाय मेरा मनोबल और बढ़ गया और उन्हे बताया कि गाँधी आसमान से नही टपके थे, महानता के शिखर पर पहुँचे थे। फिर सोचा कि जब 'गाँधी' की संज्ञा पा ही गया, तो क्यों न इस कार्य में पत्नी को भी शामिल कर 'कस्तूरबा' की याद ताजा कर दूँ। सो उन्हें एक बच्चे को बुलाने को भेज दिया। शहरों में रहने वाली औरतें भी गाँवों में आकर पर्दानशीन एवं घर के आँगन तक सिमट कर रह जाती है। लेकिन कमाल हुआ यह देखकर कि घर की औरते भी सफाई में लग गई। यह एक अच्छी शुरूआत है।

ग्राम संस्कृति

बिगड़ता ग्राम्य परिवेश-सुधार की सम्भावनाएं

❐ डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय

गाँव की बिगड़ती अर्थिक सामाजिक स्थितियों की चर्चा अकसर होती रहती है। डा0 पाण्डेय ने कहार के पाठको लिये गाँव की सांस्कृतिक स्थितियों कि गिरावट एवं इसके सुधार के उपायो का बड़ा सटीक उल्लेख किया है।

The Rural culture is degrading very badly, which has been culminated into a major impediment for the rural development, rural peace, and happiness. The rural India was a classical example of participatory wisdom and co-operative development. This culture has been degraded to self ego, personal glorification and ill practices. Dr. Ved Prakash Pandey, who understand the rural problems with intellectual approach and vision, being one of the rural inhabitants for long time has described these problems in rural culture and has suggested the remedies for its improvements

मेरा सारा जीवन गाँव में बीता। सारी शिक्षा या तो गाँव में या गाँव से आ-जाकर हुई। शिक्षक और प्राचार्य के रूप में लगभग चालीस साल ग्राम सभाओं में स्थित कॉलेजों में बिता। सेवानिवृत्ति के बाद भी गाँव में ही दस साल हो गये। यह सब मैं इसलिए लिख रहा हूं, कि मुझे थोड़ा-बहुत जो ज्ञान अनुभव हुआ वह गाँव के बारे में ही हुआ। सारी जिन्दगी मैंने गाँव को निकट से देखा–भोगा। पाया कि गाँवों की जिन्दगी एकदम बदल गयी है। क्या-से-क्या हो गये गाँव। देखते-देखते इतनी खराबी–बुराई आ गयी कि गाँव में रहना मुश्किल हो गया।

इन्हीं गाँवों के लिए कभी विचारकों, कवियों, लेखकों ने कितना अच्छा कहा था। कभी 'भारत माता ग्राम वासिनी, कहा गया तो कभी, ''अहा, ग्राम्य जीवन भी क्या है।'' किसी ने 'भारत की आत्मा गाँवों में बसती है, तो किसी ने 'भारत गाँवों का देश है' और 'असली भारत गाँवों में बसता है' कहा था। आज गाँव का वर्तमान इतना खराब हो गया है, कि पंजाब के मशहूर शायर बल्ली सिंह चीमा को कहना पड़ता है, 'गाँव में रहना कितना मुश्किल, रहकर ही तुम जानोगे/चण्डीगढ़ में ही भाती हैं, झील किनारे गाँव की बातें'। गाँव मे रहते हुए मैंने अनुभव किया कि यदि गाँव में रहना है और ठीक से रहना है, तो कुछ मुद्दों पर ध्यान देना जरूरी है।

परदोष-दर्शन की प्रवृत्ति

गाँव के जीवन में परदोष-दर्शन की प्रवृत्ति ज्यादा पायी जाती है। दूसरों की कमी, अभाव, असफलता और बुराई की जानकारी जुटाने में लोग अधिक रूचि लेते हैं। इस काम में अपना कीमती वक्त बर्बाद करते हैं। जानकारी प्राप्त हो जाने के बाद उसका प्रचार, कभी-कभी बढ़ा-चढ़ाकर भी, करने में लग जाते हैं। यह सब करके उन्हें क्या मिलता है? क्षुद्र प्रवृत्तियों को क्षणिक तृप्ति-संतोष। इससे व्यक्ति का कोई लाभ नहीं होता न शारीरिक, न बौद्धिक, न आत्मिक। हानि ज्यादा होती है। किसी की कमी देखने और बार-बार उसकी चर्चा करने से दृष्टि सोच-नकारात्मक होती चली जाती है। ऐसा करने वाले के व्यक्तित्व का रंग धूमिल-फीका होता चला जाता है। आगे चलकर वह सन्देह, अविश्वास, घृणा, शिकायत और शत्रुता का शिकार हो जाता है।

इस दुष्प्रवृत्ति से बचने का उपाय बड़ा सरल है। ऐसे हर आदमी को गाँधी जी को अपने सामने रखना चाहिए, जो अपनी कमी को पहाड़ जैसी और दूसरे की कमी को राई के समान देखने के हिमायती थे। गाँधी जी का यह भाव मंगलकारी है। ऐसा करने से व्यक्ति धीरे-धीरे दोषमुक्त होता हुआ एक आकर्षक-आदर्श व्यक्तित्व-चरित्र का स्वामी बन जाता है। अपने समाज में प्रशंसित-प्रतिष्ठित हो जाता है। कालक्रम में मैत्री और मुदिता का आधार बनता है और धीरे-धीरे सर्वप्रिय हो जाता है। ऐसा करते हुए कोई भी व्यक्ति शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक-आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर सकता है।

ईर्ष्या द्वेष का काँटा

गाँव की जिन्दगी में ईर्ष्या-द्वेष का काँटा ज्यादा है, श्रद्धा-प्रेम के फूल कम। दुर्भाग्य से निचले दर्जे का स्वार्थ, वैमनस्य, झगड़ा-फसाद, उठा-पटक भी कम नहीं है। सन्देह-अविश्वास भी गाँव के वातावरण में ज़हर की तरह घुला हुआ है। निन्दा-शिकायत तो जैसे उसके संस्कार का हिस्सा-सा हो गया हो। मेरी दृष्टि में ऐसा सुशिक्षा की कमी के कारण है। ऐसा नहीं है कि गाँव में अब शिक्षा की कमी है। पुरानी पीढ़ी के थोड़े से अस्त होते हुए लोगों को छोड़ दे तो शेष सभी शिक्षित हैं। हाँ, यह और बात है कि वे अल्प शिक्षित हों या अधिक, यह निश्चित है कि उन्हें मूल्यपरक-संस्कारयुक्त शिक्षा नहीं मिली है। यही कारण है कि गाँव की मानसिकता में उन तत्वों की बेहद कमी है जिसे हम मूल्य कहते हैं। मूल्य-अर्थात्- प्रेम, करूणा, क्षमा, विश्वास, सेवा, सहयोग, विनम्रता, धैर्य, लज्जा, आदर और लिहाज आदि। आवश्यकता है ईर्ष्या-द्वेष से बचकर मूल्यों में जीने की। मूल्यों की कमी का एक प्रमुख कारण और भी है और वह है आदमी के पास समय, एकान्त, चिन्तन, मनन और विचार का नितान्त अभाव। गाँव का आदमी खेती-बारी, माल-मवेशी, रोजी-रोजगार, नौकरी-व्यापार के मोर्चे पर इस कदर व्यस्त-पस्त और परेशान है, कि उसके पास कभी-कभी एकान्त में बैठकर शान्त मन कुछ सोचने-विचारने, उत्तम साहित्य का अध्ययन करने शुद्ध-बुद्ध पुरूषों स्त्रियों से बात करने, अपने अन्दर झाँककर देखने की फुरसत नहीं है। यदि कभी उसे थोड़ा–सा समय मिल भी जाता

डा0 वेद प्रकाश पाण्डेय, किसान पी0जी0 कालेज, सेवरही (कुशी नगर) के रिटायर्ड प्रचार्य है। प्रचार्य पद से अवकाश लेने के बाद वे अपने गाँव में रहते हैं। वे ख्याति प्राप्त वक्ता एवं साहित्यकार हैं। वे 73 वर्ष की आयु में गोरखपुर का इतिहास लिखने जैसे श्रमसाध्य और वृहद कार्य कर रहे हैं। उनकी तमाम महात्वपूर्ण पुस्तको की सूची में सहित्य अकादमी, दिल्ली से प्रकाशित पं0 धरीक्षण मिश्र की जीवनी भी है।

है, तो वह उसे व्यर्थ की बातचीत, गप–शप, निन्दा–स्तुति, उठा-पटक में नष्ट कर देता है। यही कारण है कि वह उस दुनिया में पहुँच ही नही पाता जहाँ विचारों के मोती मिलते है। वह कभी उस धरातल को छू ही नही पाता है, जहाँ आत्मचिन्तन के जरिए वह चीज हासिल होती है जिसे पाकर शुद्ध-बुद्ध-प्रबुद्ध हुआ जाता है। गौतम-गाँधी बना जाता है।

अतीत की कड़वी यादों का दंश

एक तीसरा कारण भी है। गाँव का आदमी अपने अतीत के खूँटे से बुरी तरह चिपका होता है। पिछले जमाने की बातें, घटनाएँ, झगड़े कहा-सुनी, लेन-देन, धोखा-धड़ी उसकी स्मृति में इस प्रकार भरे होते हैं, जैसे बखार में भूसा। गुजरे जमाने की बातें उसे जीने नहीं देती हैं। उसे क्षण-क्षण उत्तेजित-उद्वेलित करती हैं और कभी प्रतिक्रिया, कभी प्रतिशोध के लिए प्रेरित भी। अतीत के नकारात्मक पहलू उसे बीमार बना देते है, छोटा और खण्डित कर देते हैं। स्मृति लोक में धूल की तरह इनके जमे होने से वहाँ नये विचार, नयी कल्पना, नये भाव, वर्तमान की समस्याओं से जूझने, भविष्य के सपने देखने और उनमें रंग भरने का अवसर तथा अवकाश ही नही देते। इस प्रकार का जीवन जीते हुए मनुष्य लगातार छोटा-बौना होता जाता है। इतना छोटा कि अपने छोटे होते जाने का हिसाब भी नहीं लगा पाता। जानने योग्य बात यह है, कि आदमी अपने अतीत को एकदम भुला न दे, याद रखे, हाँ, उसका प्रयास होना चाहिए कि अतीत के सकारात्मक एवं मूल्यवान कालखण्डों को ही याद रखे। उन्हीं क्षणों को याद रखे जो गर्वित कर सके, प्रेरित तथा सक्रिय कर सकें। ऊर्जावान और प्रकाशवान बना सकें। मन के उन तमाम अँधेरे कोनों को देखने से बचे जहाँ साँप-बिच्छू-गोजर पैर पसारे पड़े हुए हैं। बुरी, नकारात्मक और मनुष्य को छोटा बनाने वाली बातों से बचने का उपाय बड़ा सरल है। बेहतर और कलात्मक जीवन के लिए जरूरी है, कि व्यक्ति अपनी सोच की दिशा में थोड़ा परिवर्तन करे। वह चाहे तो खुद को जलाने वाली ईर्ष्या की आग की जगह श्रद्धा के फूल उगा सकता है। द्वेष को स्पर्धा में, सन्देह को विश्वास में, असहयोग को सहयोग में, निन्दा को प्रशंसा में, बुराई को भलाई में, शत्रुता को मित्रता में बदलकर अपनी नीरस जिन्दगी में अमृत-रस घोल सकता है। स्वयं को लघुता की खाई से निकालकर उच्चता के शिखर पर प्रतिष्ठित कर सकता है। बामन से विराट हो सकता है। सुन्दर जीवन जीने की लालसा और इसके लिए किया गया प्रयत्न सामाजिक जीवन में सुख, सौहार्द, प्रेम, शान्ति, मैत्री और प्रगति की सुगन्ध भर सकता है। एक ऐसा वातावरण रच सकता है, जिसमें रहना प्रीतिकर लगे, सुखद और सार्थक लगे।

एक दुखद पहलू

आज के अधिकांश कवि, विद्वान, लेखक और विचारक गाँव की जिस मानसिकता पर ज्यादा चिन्तित हैं और अपने लेखन में करारा

व्यंग्य कर रहे हैं, वह है गाँव के व्यक्ति की वह सोच जिसके तहत वह अपने बारे में कम सोचता है और दूसरों के बारे में ज्यादा। अपने दुख से कम दुखी होता है, दूसरें के सुख से ज्यादा दुखी। अपने उत्थान के बारे में कम सोचता है, दूसरे के पतन के बारे में अधिक। इस सन्दर्भ में कुछ उदाहरण प्रस्तुत है–

''छोटे-छोटे दल में सारा गाँव बँट गया है
मुखिया जी टोपी पर अपने कलफ कर रहे हैं।'' - **महेश अश्क**

''ये टोला वाभन का / वो हरिजन का / ठाकुर का कुआँ बीच में / कैसा भूगोल गाँव का / सुबह मरी मिलती हैं ताल में मछलियाँ / रंजिश में जलती हैं आँख की पुतलियाँ।''- **वसु मालवीय**

''आपन देवाल गिरे त गिरे / देयाद के बकरी मरे के चाहीं।
छूसरे के पेड़ पर झटहा मारे खातिर / तूरही के परी आपन डाढ़।''
-**निलय उपाध्याय**

''मटिया के मथवा छपरवा ना छहियाँ / रहिया, रोकेलें जहाँ पाँव रे / रितिया-पिरीतिया के विखरल पँखुरिया / सूझे ना कतहूँ मोरा गाँव रे / टूटि-टूटि बिखरे सनेहिया के पलना / दिनवा जहरवा रइनि भइली छलना / अँखियन से लोरवा बहावे अमरइया / बिहँसे बबूरवा के छाँव रे / गिरत बटोहिया सम्हारे नाहीं बहियाँ / अपने जोहेले अब दाँव रे।'' - **कमलेश राय**

यह सोच, यह भाव यह विचार सहज मानवीय चिन्तनधारा के सर्वथा विपरीत है। जिन्दगी की सहज-स्वाभाविक-सनातन राह है। अपने बारे में शुभ सोचना और दूसरे के बारे में भी शुभ ही सोचना (सर्वे भुवन्तु सुखिनः)। अपने दुख से दुखी और अपने सुख से सुखी होना, साथ ही दूसरे के दुख से दुख और सुख से सुख का अनुभव करना। अपने उत्थान-विकास-तरक्की के बारे में सोचना-कोशिश करना और दूसरे की प्रगति में भी सहायक होना।

सूख गया गाँव का मन

वस्तुतः आज के गाँव का मन सूख-सिकुड़ गया है, कुछ कुछ सड़ भी। यही कारण है कि आज, जीवन के किसी भी क्षेत्र में, जो बड़ा है वह गाँव में रहना पसन्द नही करता। गाँव का वातावरण-परिवेश उसे रास नही आता। सेवानिवृत्ति के पश्चात बुद्धिजीवी, सुखी, संवेदनशील और सौम्यभाव वाले लोग गाँव-घर वापस ने आकर किसी शहर-कस्बे में बस जा रहे है। यह स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती। इसमें परिवर्तन अपेक्षित है। यह परिवर्तन गाँव के बाशिन्दे ही कर सकते है। जरूरी है, सोच की दिशा का बदलना। पुराने मूल्यों की वापसी, पुराने भाई-चारा की वापसी, पहले जैसे प्रेम, सहयोग, आदर, लिहाज की वापसी और इस वापसी के लिए कोई कीमत नहीं चुकानी है, कोई कठोर परिश्रम नहीं करना है। सिर्फ भाव बदलना है। वैसे ही जैसे बिल्ली बदलती है। वह जब चूहा पकड़ती है, तो उसके दाँत वज्र जैसे कठोर-नुकीले-पैने हो जाते हैं और वही (बिल्ली) जब अपने बच्चे का गला (कहीं अन्यत्र ले जाने के लिए) पकड़ती है, तो उसके दाँत फूल जैसे कोमल हो जाते हैं। क्या है यह? क्यों है यह? बस सोचना यही है और करना भी यही है। बदल जायेगा वातावरण। आज का विकर्षण कल आकर्षक में बदल जायेगा।

नशीले पदार्थो का प्रचलन (फैशन)

यह कहने की बात नही है कि नशीले पदार्थो के सेवन से होने वाली हानि और आने वाली विपत्ति का पता किसे नही है। अब ऐसा

कोई नहीं मिलेगा जिसे यह ज्ञान न हो कि नशा करने से नाना प्रकार की हानि होती है। सवाल ज्ञान का नहीं, मन की कमजोरी -दुर्बलता का है। अपने भीतर कमजोरी न आने देना और यदि दुर्भाग्यवश आ ही गयी है, तो उसे दूर कर देने की ताकत की कमी का हैं। नशा करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह विचार करना चाहिए कि नशा करने से धन की हानि होती है। धन की हानि को कोई महत्व न भी दे, तो इस बात से कैसे इन्कार कर सकता है कि इससे स्वास्थ्य की हानि होती है। नशा करने से सामाजिक प्रतिष्ठा गिरती है। लीवर खराब होता है। कैंसर जैसी गम्भीर बीमारी की सम्भावना बढ़ जाती है। परिवार की शान्ति खतरे में रहती है। बच्चों पर बुरा-विपरीत असर पड़ता है। दुर्घटना की सम्भावना प्रबल हो जाती है। पौरूष घट जाता है। कमजोरी बढ़ जाती है। धनाभाव की दशा में कर्जा लेना पड़ जाता है। खेत-घर-आभूषण (जेवर) बेचने की नौबत आ जाती है। अच्छा रिश्ता मिलना मुश्किल हो जाता है। नशाखोर व्यक्ति पर से लोगों का विश्वास-भरोसा उठ जाता है। समाज की नजर में नशे का आदी निठल्ला, गया-गुजरा, बेपानी, बेगैरत मान लिया जाता है। इतनी हानि कम है क्या? अब बचा क्या जिन्दगी में? धन, स्वास्थ्य, सम्मान, शान्ति, शक्ति , स्वाभिमान, सूख, सुरक्षा और साख न हो तो जिन्दा रहने का मतलब? उपर्युक्त बातों का ख्याल करके कोई भी-वह किशोर हो, युवा हो या प्रौढ़-सब प्रकार के नशीले पदार्थ से दूर रहकर बेहतर सम्मानित जीवन जीने का प्रयास कर सकता है।

सहकार-भाव

अब से 25-30 वर्ष पहले पैदा हुए गाँव के सभी लोगो की गाँव के सामाजिक जीवन में सहकार (सामूहिक सहयोग की भावना) भाव का पता ठीक-ठीक होगा। उन्हे यह अच्छी तरह मालूम होगा कि ग्राम-जीवन में शुभ-अशुभ, सुख-दुख के सारे कार्य कैसे लोग मिलजुल कर स्वयं कर लेते थे, और किये गये कार्यो के लिए कोई मजदूरी (खर्च) नही लेते थे। बहुत थोड़े से ऐसे कार्य थे, जिसके लिए मजदूरी के रूप में पैसा या अनाज खर्च होता था। मिट्टी की दीवारों वाले खपरैल (खपड़ैल) के मकानों में धरन-बड़ेर चढ़ाना हो या झोपड़ी (पलानी) का फरका (एक भाग) उठाना हो, कुएँ के निर्माण में झाम खींचना हो या ईट का पिजावा लगाना हो, बछड़ा कुटवाना (बधिया करने का एक देशी तरीका) हो, बैलों को नाल ठुकवाना हो या गाय-बैल-भैस को ढरका-ढरकी (दवा पिलाना) देना हो, गर्मी के दिनों में पशुओं के खौंग (खुरपका रोग जिसमें जानवर की खुरों में कीड़े पड़ जाते है) हो जाने पर कीड़े निकालना और दवा डालना हो। किसी के घर तिलक, यज्ञोपवीत, विवाह, यज्ञ, गृह-प्रवेश और श्राद्ध आदि में होने वाले भोज का सारा (भोजन पकाना और परोस का खिलाना) कार्य गाँव के मर्द-औरत मिलकर कर लेते थे। इससे न केवल आर्थिक बचत होती थी, बल्कि लोगों में एक दूसरे के प्रति प्रेम, आदर और विश्वास झलकता था। सहयोग भाव का यह एक अद्भुत उदाहरण था। इससे ग्राम्य जीवन के सहयोग, संगठन, सद्भाव, परस्परावलम्बन और श्रम जैसी उपयोगी शक्तियों का पता चलता है। सभी एक दूसरे के काम आते थे। कोई अपने को अकेला-तनहा और कमजोर नही समझता था।

सामुदायिक जीवन का एक दूसरा महत्तवपूर्ण पहलू भी था। वह था, भोजन पकाने, रखने और परोसने में काम आने वाले बड़े बर्तनों का। प्रायः सभी के घरों में ऐसे बर्तन होते थे। किसी के घर हण्डा, किसी के बटुला, किसी के थारा–परात, किसी के लोहे की बड़ी कडाही, किसी के पीतल की बाल्टी, डब्बू पल्टा, ट्रे, कलछुल और पवना (छनौटा), किसी के भगौना, पेट्रोमेक्स तो किसी के ड्रम होता था। इक्का-दुक्का को छोड़कर वक्त पर लोग एक दूसरे को अपना सामान सहर्ष दे देते थे। इसके लिए आज की तरह कोई खर्च या भुगतान नहीं करना पड़ता था। सहयोग तथा सहकार का एक तीसरा नायाब उदाहरण और भी था। श्रम-सहयोग और बर्तन-भांड के आदान-प्रदान के साथ-साथ लोग बिछौना-गद्दा, चद्दर-दरी, तकिया-खटिया (चारपाई), कुर्सी मेज और चौका, बाँस-बल्ली (नाच-नौटंकी में काम आने के लिए), गैसबत्ती (पेट्रोमेक्स), बैलगाड़ी, टायरगाड़ी आदि से भी एक दूसरे की मदद करते थे। इससे भी गृहस्थ-समाज को बहुत बड़ी सहायता और राहत मिल जाती थी। उपर्युक्त उदाहरणों के अवलोकन से यह बात जाहिर हो जाती है, कि ग्राम-जीवन में सहयोग-सहकार भाव से लोगो को बड़ी आर्थिक-भौतिक राहत सुलभ थी। साथ ही आदमी अन्यथा भाग-दौड़ से भी बच जाता था और उसकी वह श्रम-शक्ति कही और खर्च होती थी। लोगों का बचा हुआ समय किसी दूसरे रचनात्मक कार्य में लग जाता था। तत्कालीन ग्रामीण जीवन की यह एक बड़ी खूबी थी।

चौपाल और अलाव

इसके अतिरिक्त ग्राम-जीवन का एक और पक्ष था जो बड़ा प्यारा-मनभावन और जीवनदायी थी। वह था लोगों का आत्मीय भाव-अपनापन-परस्पर का विश्वास भरोसा। लोग एक दूसरे के घर-द्वार आते-जाते थे। चौपाल-अलाव जिन्दा थे। आपसदारी रखने वाले लोग कभी भरी दोपहरी में, कभी अपने-अपने खेत-खलिहान, घर-द्वार, माल-मवेशी से फुर्सत पाकर, थोड़ी देर एक साथ बैठते, बोलते-बतियाते, हँसते-हँसते थे। गाँव की भाषा में सुख-दुख करते थे। भविष्य की योजना बनाते थे। वर्तमान की किसी समस्या से निजात पाने का रास्ता तलाशते थे। चार लोग मिलकर विकट-सी लगने वाली समस्या का समाधान खोज लेते थे। सुर्ती, बीड़ी, गाँजा, तमाकू (तम्बाकू) खाते-पीते, अपनी कहते दूसरे की सुनते, थोड़ी देर के लिए ही सही, तनाव से मुक्त हल्के हो जाते तथा आराम पाते थे। बदले माहौल में सब बन्द हो गया। अलाव रहे न चौपाल। सम्पर्क, संवाद और विमर्श का वह आधार टूट गया। युवा वर्ग को इस पहलू पर विचार करना चाहिए।

राम लीला और कीर्तन

गाँव में रामलीला होती थी। कीर्तन-भजन होते थे। गाँव के समीप के पोखरे, नदी-पट, सरोवर और मन्दिर के निकट किसी साधु की कुटी-मठिया होती थी। गाँव के भक्ति-भाव, धर्म-कर्म में रूचि रखने वाले गृहस्थों के मनोरंजन, सत्संग, ज्ञान, आत्मोन्नति, संस्कार तथा विश्राम आदि के लिए ऐसी जगहों का खास महत्व था।

बाग-बगीचे-गाँव में आम, कटहल, महुआ, गूलर, बड़हर इमली, जामुन के बड़े-छोटे, सघन बाग-बगीचे होते थे। गाँव की जिन्दगी में इनका बड़ा महत्व था। ये बाग-बगीचे सामुदायिक-सांस्कृतिक जीवन की प्राण ऊर्जा देते थे। इनसे गाँव को कितना कुछ मिलता था-इस पर विस्तार से लिखना यहाँ न तो जरूरी है, न मुनासिब। हाँ जानने लायक बस इतना ही है, कि ये उपयोगिता तथा अर्थागम की दृष्टि से तो जरूरी और मूल्यवान थे ही, सौन्दर्य, स्वास्थ्य, सुरूचि, परहित, भेट-उपहार और पर्यावरणीय सुरक्षा-सन्तुलन की दृष्टि से भी इनका विशेष महत्व था।

खलिहान

गाँव में जगह-जगह खलिहान थे। खलिहान किसान की प्राण-लक्ष्मी अन्नपूर्णा के बैठने का आसन था। चैत-क्वार के महीने में इनमें कटी हुई फसलों के ढेर होते थे। यहीं मड़ाई होती थी। जब तककटाई-मड़ाई-पिटाई-दँवरी-ओसवनी-गल्ला-भूसा- रहठा-खूँटी की ढुलाई का काम चलता था, तब तक खलिहान गाँव चिक्का, कबड्डी, वालीबाल आदि खेलते थे। छोटे बच्चे पुआल खरहियों पर चढ़ते-उतरते कूदते-छिपते हुए खेलते थे। गर्मी के दिनों में इन खलिहानों में गाँव में आने वाली बारातें ठहरती थी। खलिहान गाँव के लिए खेल के मैदान (मिनी-मुक्त स्टेडियम), बारातों के टिकने ठहरने का आश्रम-स्थल, नाच-तमाशा-नाटक-नौटंकी के लिए मुक्ताकाशी मंच था। सबसे बढ़कर यह कि यहाँ किसी बात के लिए किसी को कोई शुल्क-भुगतान नहीं करना पड़ता था।

परती-परास

गाँव में जगह-जगह परती जमीनें थीं चारागाह थे। परती जमीनों में किसान सीजन पर गोबर रखते थे जिससे उपले, गोइंठा पाथा जाता था। यहीं पर घूरा होता था जहाँ किसान-गृहस्थ अपने जानवरों को गोबर, कूड़ा, कचरा, बुहारन रखता था। जिससे खाद बनती थी। चारागाह पशुओं के चरने के काम आते थे।

आपसदारी

गाँव में व्यावसायिकता एवं बाजारवाद के पाँव नही पड़े थे। खाने के बाद बचा हुआ फल, सब्जी, दूध-दही बेचना बुरा माना जाता था।

लेन-देन (हाथफेर)

गाँव की जिन्दगी में एक वक्त वह भी था, जब आपस में लेन-देन, हाथफेर (उधार) और अदला-बदली खूब प्रचलित था। किसी की गाय या भैस यदि दूध नही दे रही है, तो दूसरे के घर से लोग नापकर दूध ले लेते थे और जब अपने घर होता था, लौटा देते थे। इसी प्रकार घटने या जरूरत पड़ने पर आटा, तेल, नमक और घी भी परस्पर लेते-देते थे और तो और शाम को चिराग जलाने के लिए आग तक माँगने का रिवाज था। भादो और माघ के महीने छोटे किसानों-खेतिहर मजदूरों के लिए प्रायः अभाव संकट के (दिन) होते थे। इन दिनों अन्न की कमी रहती थी। धनी घरों से लोग सवाई ब्याज (सूद) पर खउहट (खाने के लिए अनाज) लेते थे। अपने घर होने (चैत-क्वार में) पर ब्याज सहित वापस कर देते थे।

भाँज (साझा)

ग्राम्य जीवन में सहकारिता का एक नायाब उदाहरण भाँज (साझा) का प्रचलन था। किसी के यदि एक ही बैल होता था, तो वह चाहकर भी खेती नहीं कर सकता था। खेती के लिए कम-से-कम दो बैलों की आवश्यकता होती थी। ऐसे में वह किसी ऐसे किसान की तलाश करता था, जिसके पास भी एक ही बैल हो। फिर दोनो भाँज से अपना काम आसानी से कर लेते थे। दोनों की खेती बिना किसी अतिरिक्त खर्च के हो जाती थी। भाँज-चारे का, दूसरे शब्दों में कहें तो सहकार भाव का, यह एक बड़ा कारगर और सरल उपाय था।

खेतो की सिंचाई

इसी प्रकार खेतो की सिंचाई के प्राचीन तरीके में भी भाँज का व्यवहार-चलन था। पहले सिंचाई ताल, पोखरी, आदि के पानी से होती थी। गड़ही-पोखरा-पोखरी से पानी खींचने के लिए बेड़ी (बाँस की महीन फट्टियों से बनी छिछली टोकरी) का उपयोग होता था। टोकरी के दोनों ओर दो-दो डोर (रस्सियाँ) बँधी रहती थी। रस्सी के मुँह (छोर) पर फूस की मुठिया बनी रहती थी। इसी टोकरी से पानी खींचा (उलीचा) जाता था। जहाँ से पानी खींचा जाता था वह स्थान थोड़ा नीचा होता था। उसे बोदर कहा जाता था। पानी खींचने वाले मजदूर या स्वयं किसान होते थे। सबेरे से शाम तक पानी उलीच कर खेतों को सींचा जाता था। खेतों तक पानी ले जाने के लिए पतली नालियाँ बनायी जाती थी। ये नालियाँ दूर तक जाती थी। इस पर जितने किसानों के खेत होते थे, वे मिलकर पानी चलाते थे और क्रमशः दूर के खेतों की सिंचाई करते हुए पानी के स्रोत के निकट आते थे। इस पद्धति में नालियों की रखवाली भी करनी पड़ती थी, ताकि नाली के फूट जाने से पानी बह न जाय और लोगो का परिश्रम बेकार-व्यर्थ न चला जाय।

इस पद्धति में कभी एक बेड़ी से काम लिया जाता था जिसमें एक साथ दो आदमी काम करते थे और कभी डबल (दो) बेड़ी इस्तेमाल होती थी जिसमें एक साथ चार आदमी लगते थे। काम करने वालों को आराम मिले, इसके लिए डबल (दुहरी) व्यवस्था करनी पड़ती थी। हर बेड़ी पर दुहरी व्यवस्था होती थी। एक पर चार और दो पर आठ आदमी लगाये जाते थे। इससे काम करने वालों के हाथ, पैर और कमर पर बड़ा जोर पड़ता था। डबल व्यवस्था होने से लोगों को बीच-बीच में सुस्ताने का मौका मिल जाता था।

खेते में एक या दो आदमी हाथा (हत्था) चलाते थे। हाथा लकड़ी का बना हुआ एक ऐसा देशी यंत्र था, जिसका निचला हिस्सा बेलचा जैसा होता था और ऊपर लम्बा सा हत्था (कुदाल की तरह) होता था। इसी हत्थे को पकड़कर व्यक्ति पौदर (खेत में पानी इकट्ठा होने की एक छोटी-छिछली जगह) से पानी उठाकर फसल के ऊपर फेंकता-उलीचता था। काम श्रमसाध्य था। अतः हाथों से किसी प्रकार खेतों को कभी एक बार, कभी दो बार सींच दिया जाता था। सौभाग्य से यदि पूस-माघ महीनों में वर्षा हो जाती थी, तो किसान बहुत खुश होते थे। भाँज-सहकारिता-सहयोग का यह एक ऐसा उत्तम उदाहरण था, जिसमें कोई आज किसी का पानी चलाता था, तो दूसरा किसी दूसरे दिन पहले वाले का। परस्पर के इस भाई-चारे से जिन्दगी सरल थी और खर्च नहीं के बराबर।

विराट व्यक्तियों का अभाव

पहले प्रायः हर गाँव में अथवा दो-चार गाँव के बीच कुछेक ऐसे बड़े लोग होते थे, जो गाँव-क्षेत्र की छोटी-मोटी ढेर सारी समस्याओं का समाधान कर देते थे। लोगों को थाना-कचहरी नहीं जाना पड़ता था। अब ऐसे भले, ऊँचे रसूख वाले, प्रभावशाली, व्यक्तित्व सम्पन्न

लोगों का नितान्त अभाव हो गया है। और यदि कही ऐसे लोग है भी तो गाँव का आदमी उन्हें अपने से बड़ा-श्रेष्ठ मानने को तैयार नहीं है परिणामस्वरूप संकट की प्रत्येक अवस्था में 100 नं0 पर फोन और फिर तीन-तेरह का चक्कर शुरू हो जाता है।

रास्ता और पानी की जटिल समस्या

ग्राम्य-जीवन रास्ता और जल-निकासी की समस्या से त्रस्त है। गाँव का आदमी घर-घारी या चरन बनाते समय बगल से गुजरने वाले रास्ते में अतिक्रमण करना मानो अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता है। कई ऐसे घर होते हैं, जिनके नाबदान का पानी बाहर नही जा पाता। कहीं-कहीं वर्षा का जल भी निकल नहीं पाता। इससे कभी-कभी बड़ी दिक्कतें पैदा हो जाती हैं। ऊबकर तमाम लोग गाँव से बाहर निकलकर खेत में या सड़क पर घर बनाकर रहने लगे हैं। रास्ते में घूरा रखना, गोबर पाथना, खूँटा गाड़ देना, पशु बाँधना, पानी बहाना आम बात है। गाँव की जिन्दगी, इन बातो से बुझती जा रही है। इसका निदान-समाधान करने के लिए युवा-शक्ति को विवेक, त्याग, सूझ-बूझ और ऊँची सोच का सहारा लेना चाहिए।

गन्दगी का साम्राज्य

गाँव का जीवन गन्दगी का पर्याय हो गया है। खेतों में प्रायः हर समय कोई-न-कोई फसल खड़ी रहती है। झूँगा-झाड़ समाप्त हो गये है। घरों में शौचालय हैं नहीं। जिनके हैं वे इस्तेमाल नहीं करते। आबादी बढ़ गयी है। लोग गलियों, चकरोडो, खेत की मेड़ों, सड़कों पर शौच करने लगे हैं। हर ओर गन्दगी। चलना, साँस लेना मुश्किल। चारों ओर कूड़ा-कचरा। थोड़ी-सी समझ और सभ्यता से इन समस्याओं से मुक्ति पायी जा सकती है। स्वच्छता से स्वास्थ्य का सीधा रिश्ता है। पर्यावरण की शुद्धता और सुरूचि के लिए भी ऐसा करना आवश्यक है। ऐसे छोटे-छोटे प्रयासों से गाँव का जीवन-स्तर उन्नत किया जा सकता है।

बड़े-बूढ़ो का आदर और उनका उपयोग-आज पूरे विश्व में वृद्धजनों का अनादर हो रहा है, उनकी उपेक्षा हो रही है। यह सभ्य संसार के मुह पर तमाचा है। बुजुर्गो की इज्जत सर्वत्र होनी चाहिए। उनका आदर-अभिवादन-सेवा करके युवकों-बच्चों को उनका प्रेम-आशीष प्राप्त करना चाहिए। उनके ज्ञान, अनुभव, विशेषता, सम्पर्क और पहुँच का लाभ लेना चाहिए। यह प्रत्येक स्तर पर पूरे समाज के लिए मंगलकारी है।

माहौल बनाएँ

युवा शक्ति मिलकर अपनी सकारात्मक सोच और सक्रियता से ऐसे माहौल का सृजन कर सकती है, कि बाहर जा बसे लोग वापस लौटने का मन बनाने लगें। गाँव का सुखी, शिक्षित, सौम्य व्यक्ति शहर जाकर के किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट हो जाने के बावजूद, शहर जाकर बसने का विचार छोड़ने को विवश हो जाय।

युवक स्वयं, जीवन के किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट हो जाने के बावजूद, गाँव में रहना चाहें। यदि किसी कारण से वे गाँव निवास न कर सकें तो गाँव के जीवन-स्तर को उठाने, उसे प्राणवान बनाने में सहयोग करें। इस तरह वे मिट्टी का ऋण अदा कर सकते हैं।

मेरी दृष्टि में लोगों के सामूहिक प्रयास से गाँव अच्छी संज्ञा पा सकते हैं और गाँव से नगर की ओर का दुर्भाग्य पूर्ण पयालन रूक सकता हैं।

मेरे इतना कुछ कहने का तात्पर्य यह नहीं है, कि बीते समय को हम वापस ला सकते है। यह कदापि सम्भव नहीं है। जरूरी भी नहीं। आज के बदले समय में, हमारे चाहने के बाद भी, हालत पहले जैसे नहीं हो सकते। गुजरे जमाने के बाग-बगीचे, ताल-पोखरे, खेत-खलिहान, परती-परास वापस नही आ सकते। जिसकी वापसी सम्भव हो सकती है और जिसके लिए व्यक्ति प्रयत्न कर सकता है, वह है सद्भावना की वापसी। समाज के संवेदनशील-सज्जन सद्भावी लोग मिलकर कोशिश करें तो आशा की जा सकती है, कि स्थितियाँ, धीरे–धीरे बदलें और माहौल बने। आज जो संवेदनहीनता की जड़ता है, वह टूटे। परस्पर मेल-मिलाप, बात-चीत, आदर-लिहाज, सहयोग सहकार शुरू हो। सद्भावना, सहयोग, प्रेम और विश्वास के बिना जिन्दगी नीरस हो जाती है। जिन्दगी में रस बना रहे, इसके लिए सद्भावना-सहकार-समादर सबसे जरूरी तत्व हैं।

गाँव के दूर तक नष्ट हो जाने के बावजूद देखने मे आता है, कि किसी विपत्ति, दुर्घटना की घड़ी में किसी के द्वार पर भीड़ उमड़ आती है। सैकड़ो लोग जमा हो जाते हैं। थोड़ी देर की मौन-मुखर मौजूदगी और प्रायः कोरी सहानुभूति के साथ कुछ अन्तरंगो को छोड़कर सभी बिखर जाते हैं। बाद में शायद ही कोई सद्भावना का भाव लेकर पलटता हो।

आजकल गाँव में जो कुछ दिखाई देता है, वह मेरे जैसे व्यक्ति को असहज कर देने वाला है। सामान्यतः लोग दूसरों के यहाँ मिलने नहीं जाते। बूढ़े-बीमार-अशक्त व्यक्ति के पास जाकर न लोग बैठते है, न बातचीत करते हैं। सेवा सहायता तो दूर की बात है। और जब उसकी मृत्यु हो जाती है, तो सारा गाँव, सारा काम छोड़कर इकट्ठा हो जाता है। यह क्या है? इससे जाहिर क्या होता है? यह संवेदना-सहानुभूति किस काम की है? ऐसे में मुझे किसी शायर का यह कलाम बहुत मौजूँ लगता है-

सारा शहर जिसके ज़नाज़े में था शरीक
वह शख़्स तनहाइयों के ख़ौफ से मर गया।

मेरी सदिच्छा है, कि गाँव की वर्तमान जिन्दगी में सार्थक बदलाव आये। तमाम संकटों-दबावों और तनावों से बोझिल जिन्दगी में कुछ चैन आये। वहाँ रहकर जीवन जीना अच्छा लगे। कुछ उम्मीद जगे, कुछ सपने साकार हों। लोगों की जिन्दगी में थोड़ा ही सही, मनसायन होता रहे।

पर्यावरण

ऐल्कोहल आसवनी उद्योग के अपशिष्टों का पर्यावरण पर दुष्प्रभाव एवं उनका जैवीय अपघटन

❑ गौरव सक्सेना, आकाश मिश्रा व डॉ. रामनरेश भार्गव

Alcohol distribution industry provides lot of employment to the people in India. but it produces pollutants like spent wash which produces intolerable foul smell in the surrounding. When it is used as irrigation water or added as inorganic nutrient, organic amendment for improving soil condition and fertility, it disturbs soil and water conditions. Plants, aquatic macrophytes , algae and water microbes are known to remove are degrade the toxic substances in the polluted water. Dr. Bhargava and his co-workers have described the toxicity of alcohol industry spent wash and have suggested its bio remediation strategies.

ऐल्कोहल आसवनी उद्योग को हम तकनीकी रूप से ''शराब का कारखाना'' अथवा ''डिस्टिलरी'' के नाम से भी जानते हैं। यह विश्व का एक सबसे महत्वपूर्ण उद्योग है। यह उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए लाखों लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है। भारत मे लगभग 200 से भी अधिक एल्कोहल आसवनी उद्योग हैं। जहाँ एक ओर यह उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरण प्रदूषण के प्रमुख कारकों में से भी एक है।

ऐल्कोहल आसवनी उद्योग से निकलने वाले अपशिष्ट जल को ''स्पेन्ट वॉश' कहते हैं, जो कि मृदा और जल प्रदूषण के साथ ही जीव-जन्तुओं के लिए दुष्प्रभावी होता है। आसवनी अपशिष्ट जल, कार्बनिक और अकार्बनिक पदार्थों की उच्च मात्रा से भरपूर एक अम्लीय, और गहरे भूरे रंग का तरल पदार्थ है। जो मेलानोइडिन नामक केमिकल के कारण होता है। मेलानोइडिन जल में घुलनशील व जीवाणुओं द्वारा अपघटित न होने वाला एक रंग है। यह जीवों के लिए कैंसरजनक होता है। आसवनी अपशिष्ट जल में जैवीय ऑक्सीजन माँग तथा रासायनिक ऑक्सीजन माँग का स्तर उच्च होता है, जो कि जल प्रदूषण का संकेतक है। आसवनी अपशिष्ट जल के भौतिक-रासायनिक गुण तालिका संख्या 1 में प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका संख्या 1 : आसवनी अपशिष्ट जल के भौतिक–रासायनिक गुण

भौतिक रासायनिक गुण	अपशिष्ट जल	अनुमेय सीमा
पी एच	6.4	5.5–9
कुल ठोस पदार्थ (मिग्रा / लि॰)	4,285	21,00
जैव–रासायनिक ऑक्सीजन मांग (मिग्रा / लि॰)	544	30
रासायनिक ऑक्सीजन मांग (मिग्रा / लि॰)	2433	250
कुल कठोरता (मिग्रा / लि॰)	565	300
कैल्सियम (मिग्रा / लि॰)	182	169
क्लोराइड (मिग्रा / लि॰)	860	600

आसवनी अपशिष्ट जल, पानी और मिट्टी के प्रदूषण का एक प्रमुख स्रोत है। जब आसवनी अपशिष्ट जल को जल निकायों में छोड़ा जाता है, तब यह सूर्य की किरणों को जल में पहुंचने से रोकता है। इस प्रकार जलीय पौधों की प्रकाश-संश्लेषण प्रक्रिया को कम करने और जल निकायों में आक्सीजन की मात्रा को कम करके जलीय जीवन को प्रभावित करता है। यह पोषक तत्वों से समृद्ध है और परिणामस्वरूप जल निकायों में शैवालों की वृद्धि दर को बढ़ा देता है। यह प्रदूषक जल में घुली ऑक्सीजन की मात्रा को कम कर देता है, जिससे अवायवीय स्थिति बन जाती है और एक अजीब सी गंध आने लगती है।

इसके अलावा, आसवनी अपशिष्ट जल, मछलियों व अन्य जलीय जीवों में गंभीर विष सा प्रभाव डालता है। यह मछलियों व अन्य जलीय जीवों के भ्रूण विकास को बाधित करता है। आसवनी अपशिष्ट जल में कार्बनिक व अकार्बनिक यौगिक प्रचुर मात्रा में होते हैं, जो कि जल निकायों में कई किस्म के रोगजनक जीवाणुओं की वृद्धि के लिए पोषक तत्वों का काम करते हैं। आसवनी अपशिष्ट जल में कई प्रकार के अंतः स्रावी ग्रंथियों को नुकसान पहुंचाने वाले यौगिक भी पाये जाते हैं, जो कि जीवों में नाजुक हार्मोनल संतुलन को बिगाड़ते हैं तथा उनकी प्रजनन क्षमता को कम कर देते हैं।

भारत में आसवनी उद्योग आम तौर पर अपने मेलानोइडिनयुक्त अपशिष्ट जल का निर्वहन आस-पास के नदी-नालों व नहरों में करते हैं, जिसका उपयोग किसानों द्वारा

लेखक पर्यावरणीय सूक्ष्म–विज्ञान–विभाग, पर्यावरण विज्ञान विद्यापीठ, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, रायबरेली रोड, लखनऊ 226025 से सम्बद्ध हैं। *Email- bharagavarnbbau11@gmail.com,ramnaresh_dem@bbau.ac.in*

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से फसलों की सिंचाई में किया जाता है। यह पौधों की वृद्धि को कम कर देता है। इसलिए, वातावरण में अंतिक निपटान से पहले आसवनी अपशिष्ट के जल का पर्याप्त उपचार आवश्यक है।

आसवनी अपशिष्ट जल का उपचार भौतिक, रासायनिक या जैविक विधियों द्वारा किया जाता है। भौतिक रासायनिक उपचार में बहुत सारे रसायनों का उपयोग होता है, फिर भी पर्याप्त रूप से अपशिष्ट जल का उपचार नहीं हो पाता। इसके अलावा, यह मंहगा है और कीचड़ की एक बड़ी मात्रा का उत्पादन करता है जिसका निपटान बहुत मुश्किल होता है। इससे अंततः पर्यावरण में प्रदूषण बढ़ता है।

सूक्ष्म-जैवीय उपचार एक अच्छा विकल्प हो सकता है। यह एक कारगर अपशिष्ट प्रबंधन तकनीक है, जिसमें दूषित क्षेत्र से प्रदूषणकारी खतरनाक पदार्थों को सूक्ष्म-जीवों द्वारा कम विषाक्त या गैर विषैले पदार्थों में तोड़ दिया जाता है। सूक्ष्म-जैवीय उपचार में सूक्ष्म-जीवों, मुख्य रूप से जीवाणुओं का उपयोग किया जाता है। यह एक कम लागत और पर्यावरण के अनुकूल उपचार विधि है। कई शोध वैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रकार के जीवाणुओं जैसे एसीटोबेक्टर, सिउडोमोनास, बेसिलस, इस्चेरिचिया, जेंथोमोनस आदि को आसवनी अपशिष्ट जल के उपचार में कारगर पाया है। हालांकि, सभी प्रदूषकों का आसानी से जैविक उपचार नहीं हो पाता जैसे विशेष रूप से जहरीले भारी धातुओं; कैडमियम, क्रोमियम, जिंक इत्यादि, जिनको सूक्ष्मजीव आसानी से अवशोषित नहीं कर पाते। इस स्थिति में जलीय पौधों या ''वेटलेंड प्लांट्स'' जैसे जलकुंभी इत्यादि का उपयोग इन विषाक्त पदार्थों को हटाने के लिए किया जाता है। इसे तकनीकी रूप से पौध उपचार या ''फाइटोरेमेडीएशन'' कहते हैं। इसके बावजूद, आसवनी अपशिष्ट जल की वजह से पर्यावरण में प्रदूषण और जीव-जन्तुओं में विषाक्तता की समस्यायें अभी भी आमतौर पर सामने आ रही हैं। इसलिए आसवनी अपशिष्ट जल के प्रभावी उपचार के लिए नए जीवाणु उपभेदों व पौधों या फिर नई तकनीकी की खोज करने की जरूरत है। जिससे कि आसवनी अपशिष्ट जल से होने वाले पर्यावरणीय प्रदूषण को रोका जा सके।

SUBSCRIPTION FORM

कहार

टिकाऊ विकास के ज्ञान का वाहक

(जनसामान्य के लिए एक बहुभाषाई पत्रिका)

NAME (IN CAPITALS):..
OCCUPATION:..
....
ADDRESS:...
....
PO. OFFICE.................. DISTT......................
STATE........................... PIN CODE................
MOB. NO..
E-mail:..
SUBSCRIPTION DATE:
One Year☐ Three Year ☐
FROM........201... TO ....201........................
Payment mode: Check ☐ Demand Draft ☐
Cash ☐ Amount Rs. ..../-
Check/D.D. No...
Issuing Date..
Issuing Bank...
Signature......................... Date...................

सहयोग राशि	व्यक्तिगत	संस्थागत
एक प्रति(single copy) :	25 रुपये	50 रुपये
वार्षिक(one year) :	100 रुपये	200 रुपये
त्रैवार्षिक(three year) :	300 रुपये	600 रुपये

सहयोग राशि 'प्रोफेसर एच्.एस. श्रीवास्तव फाउण्डेशन फॉर साइंस एण्ड सोसायटी, लखनऊ' के नाम भेजें।
The subscription amount must be in favor of "Professor H.S. Srivastava Foundation for Science and Society, Lucknow".

In case amount paid in Cash:
Name of the Authorized person
....
Signature:

To be Filled by the Editorial office:
Subscriber No.......................... Subscription Date:.......................

04,पहली मंजिल, एल्डिको एक्सप्रेस प्लाजा, शहीद पथ उतरेटिया, रायबरेली रोड, लखनऊ- 226 025 भारत
ई मेल : kahaarmagazine@gmail.com/cceseditor@gmail.com
वेबसाइट : www.kahaar.in https://www.facebook/kahaarmagazine.com

स्वास्थ्य

सुनहरा शकरकन्द : विटामिन 'ए' का एक महत्वपूर्ण स्रोत

❒ कु अंजली साहनी, रविन्द्र कुमार, और डा. आर सी चौधरी

वर्ष 2016 का विश्व खाद्य पुरस्कार (कृषि के क्षेत्र का नोबल पुरस्कार) डा. जान लो, डा. मारिया आन्द्रादे, डा. रोर्बट मवांगे और डा. होवर्थ बुइस, को दिया गया। ये लोग अफ्रीका में सुनहरे शकरकन्द के उत्पादन और उपभोग के माध्यम से विटामिन 'ए' की कमी को दूर करने का कार्य कर रहे थे। इस पुरस्कार से ही स्पष्ट है कि विटामिन 'ए' की कमी एक भयावह महामारी का रूप ले रही है और इससे बचने के उपायों की खोज महत्वपूर्ण है। अफ्रीका और पूर्वी भारत की जनसंख्या में विटामिन 'ए' की कमी का स्तर एक समान ही है। भारत में विटामिन 'ए' की कमी उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, बिहार, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ और बंगाल में अधिकतम है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में विटामिन 'ए' की कमी 41 से 74 प्रतिशत के बीच है (तालिका 1)। गोरखपुर और सन्त कबीर नगर के दो प्राथमिक विद्यालयों में विटामिन 'ए' की कमी के सर्वेक्षण कराये गये। सर्वेक्षण के परिणाम अत्यन्त चौकाने वाले थे। एक विद्यालय के बच्चों में विटामिन 'ए' की कमी 74 प्रतिशत पायी गई। यदि इन बच्चों का बचपन इस कुपोषण का शिकार है, तो इनके आगे का जीवन, विशेषकर आँखो की बिमारियो, कितनी भयावह होगी, इसकी कल्पना नही की जा सकती।

तालिका 1–विटामिन 'ए' की कमी के कारण कुपोषित बच्चे (बी.आर.डी. मेडिकल कालेज, गोरखपुर, गुप्ता, वर्ष 1987)

आयु वर्ग	विटामिन 'ए' की कमी से ग्रसित बच्चे
2 महीने से 1 वर्ष	10%
1-2 वर्ष	43.3%
2-3 वर्ष	45.8%
3-4 वर्ष	61.9%
4-5 वर्ष	53.8%
5-6 वर्ष	55.3%
औसत	40.9%

विटामिन 'ए' की कमी दूर करने के प्रयास

भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा अन्य संस्थाओं द्वारा विटामिन 'ए' की कमी के और इससे होने वाली समस्याओं के बारे में जागरूकता अभियान चलाया जाता रहा है। इसके फलस्वरूप विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक महत्वपूर्ण योजना पोषित की थी। इस योजना के अन्तर्गत वयस्कों को विटामिन 'ए' के कैप्सूल तथा बच्चों को विटामिन 'ए' युक्त द्रव्य की कुछ बूंदे नियमित रूप से दिया जाना था। विषय का महत्व देखते हुये इसका शुभारम्भ बड़े ही संजीदा ढ़ंग से किया गया था। प्रारम्भ के कुछ वर्षो के परिणाम अत्यन्त आशाजनक एवं प्रभावी थे। परन्तु यह कार्यक्रम भी भ्रष्टाचार एवं कुप्रबन्ध की भेट चढ़ गया। अन्ततः इस योजना को बन्द कर देना पड़ा। पुनः राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत चिकित्सालयों में विटामिन 'ए' की कमी को दूर करने के लिये जागरूकता अभियान चलाये जा रहे हैं। जिला स्तर के कुछ चिकित्सालयों में विशेष कुपोषण केन्द्र स्थापित किये गये है, जहाँ पर बच्चों को विटामन 'ए' युक्त घोल पिलाया जाता है। लेकिन इस केन्द्र से अवकाश के बाद इन बच्चों को विटामिन 'ए' कहाँ से मिलता रहेगा इसकी कोई व्यवस्था नही है।

विटामिन 'ए' कुपोषण निवारण की अन्य विधियाँ

भोजन में विटामिन 'ए' के अनेक स्रोत हैं, जो शाकाहारी एवं मांसाहारी खाने से उपलब्ध हो सकते हैं। माँसाहारी खाने में ठण्डे देशों में पाये जाने वाली मछलियाँ जैसे-कार्ड, सार्डिन, कलेजी आदि प्रमुख हैं। शाकाहारी खाने में सभी रंगीन भोज्य पदार्थ जैसे-हरे साग, पके टमाटर, पपीता, आम आदि भी विटामिन 'ए' के स्रोत हैं। गरीबी और उपलब्धता या अनुपलब्धता के कारण अधिकांश परिवार उपरोक्त शाकाहारी या माँसाहारी खाने का लगातार सेवन नही कर सकते। इस कारण अधिकांश परिवार विटामिन 'ए' युक्त भोजन नही खा पाते। ऐसे परिवारों का विटामिन 'ए' के कुपोषण का शिकार होना स्वाभाविक है।

अतः खोज है, एक ऐसे भोज्य पदार्थ की, जो सस्ता और सुलभ रूप से उपलब्ध हो। इसका एक प्रमुख स्रोत जो आसानी से उपलब्ध है और कम कीमत में पूरे वर्ष खाया जा सकता है, वह है सुनहरा शकरकन्द। सुनहरा शकरकन्द सामान्य शकरकन्द की एक प्रजाति है जिसका गूदा सफेद न होकर पीला अथवा नारंगी रंग का होता है। इसके गूदे का रंग पीला या नारंगी होने का कारण इसमें बीटा कैरोटीन है, जो मनुष्य के शरीर में विटामिन 'ए' में बदल जाता है।

डा. चौधरी पी.आर.डी.एफ., 59 कैनाल रोड़, शिवपुर सहबाजगंज गोरखपुर 273014 से सम्बद्ध हैं। लेखक ने वैश्विक अनुभव तथा तमाम देशों में नौकरी करने के बाद रिटायर होकर इस संस्था का निर्माण किया है, और विज्ञान का गाँवों के विकास के लिए उपयोग कर रहे हैं। उन्होंने इस संस्था से ही काला नमक धान की बौनी प्रजाति विकसित किया है, तथा सुनहरे शकरकन्द की स्थानीय उपयोग लायक नई किस्में विकसित कर रहे हैं।

सुनहरे शकरकन्द के गुण

सुनहरा शकरकन्द विटामिन 'ए' की कमी वाले क्षेत्रों के लिए एक वरदान है। विटामिन 'ए' से भरपूर यह शकरकन्द एक खास किस्म की शकरकन्द है, जिसको खाने से आँख की बिमारियाँ नही होती हैं। इसके गूदे का रंग पीला या नारंगी होता है। सुनहरा शकरकन्द के 100 ग्राम कन्द में 20 मि. ग्रा. से अधिक बीटा कैरोटिन पाया जाता है। खाने के बाद बीटा कैरोटीन मनुष्य के पाचन तंन्त्र मे जाकर विटामिन 'ए' के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इस शकरकन्द में पीला या नारंगी रंग बीटा कैरोटीन नामक वर्णक (रंग) के कारण ही होता है। इसी से इसमें विटामिन 'ए' की प्रचुर मात्रा होती है। सुनहरे शकरकन्द की 100 ग्राम मात्रा खाने से पूरे एक सप्ताह तक विटामिन 'ए' की पूर्ति हो जाती है। चूंकि विटामिन 'ए' के अन्य स्रोत जैसे आम, गाजर, पपीता आदि केवल खास मौसम मे ही उपलब्ध हो पाते हैं, सुनहरे शकरकन्द को पूरे वर्ष उगाया और खाया जा सकता है।

सुनहरा शकरकन्द दुनिया की दूसरी मूल कन्द है। अफ्रीका में यह तीसरा प्रमुख खाद्य पदार्थ है। लेकिन भारत में यह गरीब आदमी का खाना या अकाल की फसल के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। कुछ क्षेत्रों को छोड़कर अन्य क्षेत्रों में शकरकन्द का केवल विशेष त्यौहारों तथा धार्मिक अनुष्ठानों आदि में ही प्रयोग किया जाता है। सामान्य रूप से यह दैनिक भोजन का अंग नही माना जाता है, यद्यपि इसमें प्रचुर मात्रा में पोषक तत्व पाये जाते हैं (तालिका 2)।

सुनहरे शकरकन्द में चार विभिन्न प्रकार की चीनी पायी जाती है। ग्लूकोज, फ्रक्टोज, सुक्रोज, और मालटोज। इसमें चूंकि सुक्रोज और फ्रक्टोज की मात्रा न्यूनतम होती है और फाइबर (भोजन का रेशा) अधिकतम होता है, अतः मधुमेह (डायबिटिज) के रोगी भी इसका सेवन कर सकते है। यह अग्नाशय को दुरूस्त और अन्य ऊतकों को भी सुरक्षित रखता है। इसका सेवन शरीर के सभी अंगों को सुचारू रूप से चलाने में मदद करता है। सुनहरा शकरकन्द कैंसर व यकृत सम्बन्धित बिमारियों को रोकने में मदद करता है। इसमें उपलब्ध विटामिन 'ए' शरीर की कोशिकाओं के विकास और इनकी कार्य प्रणाली के लिये अत्यन्त आवश्यक है। सुनहरे शकरकन्द को पकाने या उबालने से इसमें पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ जाती है।

सुनहरे शकरकन्द के उत्पाद

पी.आर.डी.एफ. संस्था ने बीस प्रकार के विभिन्न उत्पाद तैयार किये हैं, जो कि सुनहरे शकरकन्द की पत्तियों और कन्द के उपयोग से बनाये जाते हैं। ये उत्पाद कन्द को भूनकर अथवा उबालकर खाने के अतिरिक्त हैं। इन उत्पादों में पत्ती का साग, पत्ती के पकौड़े तथा कन्द के चिप्स, कन्द का गुलाब जामुन, कन्द की सब्जी, कन्द का जैम, कन्द का शरबत, कन्द का कटलेट, कन्द का आचार, कन्द का आटा, कन्द का पराठा व पूरी, कन्द का नमकीन कुरमुरा, कन्द का मीठा कुरमुरा, कन्द का सेवड़े, कन्द का समोसा, कन्द की खीर, कन्द का आइसक्रीम आदि हैं।

तालिका 2–सुनहरी शकरकन्द एवं गाजर के पोषक तत्वों की तुलना

मुख्य पोषक तत्व	सुनहरी शकरकन्द	गाजर
प्रोटीन	1.6g	0.9g
विटामिन A (%DV)	14187IU (284%)	16706IU (334%)
Beta-Carotene	8509ug	8285ug
विटामिन B1 (%DV) Thiamin	0.078mg (5%)	0.066mg (4%)
विटामिन B2 (%DV) Riboflavin	0.061mg (4%)	0.058mg (3%)
विटामिन B3 (%DV) Niacin	0.557mg (3%)	0.983mg (5%)
विटामिन B5 (%DV) Pantothenic Acid	0.8mg (8%)	0.273mg (3%)
विटामिन B6 (%DV)	0.209mg (10%)	0.138mg (7%)
लोहा (%DV)	0.61mg (3%)	0.30mg (2%)
पानी	77.28g	88.29g
ओमेगा 3s	1mg	2mg

(Sources: USDA & http://www.Health Alicious Needs.com)

सारांश

पूर्वी उत्तर प्रदेश में विटामिन 'ए' की कमी भयावह रूप में व्याप्त है। नन्हे-मुन्ने बच्चों से लेकर वृद्ध तक इससे प्रभावित हैं। विटामिन 'ए' के कुपोषण के उपचार के लिये भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अनेक प्रयास किये गये हैं। विटामिन 'ए' के कैप्सूल और द्रव्य चिकत्सालयों और कुपोषण केन्द्रों पर दिये जाते हैं, किन्तु सामान्य रूप से ये उपलब्ध नही हैं। इसके अतिरिक्त ये महंगे हैं तथा आम जनता इसको लगातार प्रयोग नही कर सकती। **विटामिन 'ए' की कमी से लड़ने का एक आसान, अत्यन्त कम खर्चीला और टिकाऊ उपाय है, इस सुनहरे शकरकन्द को पैदा करना और उसका उपयोग करना। पी.आर.डी.एफ. संस्था के पास सुनहरे शकरकन्द की चार प्रजातियाँ-एस.टी. -14, सीप-440127, ए. 33 और पी.आर.डी.एफ.-1 उपलब्ध है। किसान इसको उगाकर उपयोग कर सकते हैं। सुनहरे शकरकन्द के उगाने और खाने से विटामिन 'ए' के कुपोषण का सस्ता, सरल एवं टिकाऊ उपाय मिल सकता है।**

विचार

नर तो समाप्त हो जाएगा नारी ही बचेगी

❒ डा. राम स्नेही द्विवेदी

Women are pure breed (xx), whereas, men are hybrid (xy). Y chromosome (male) have been found to be weaker and degrade faster than x chromosome (female). It has been observed that 1700 genes were present each on x and y chromosome about 500 million years back. Now only 45 genes are available on y chromosome (male) as against that of more than 1,000 healthy genes on x chromosomes (female). Based on this, it is now estimated that male (y) will be vanished with in a period of 0.125 million years and only the female (x) will survive in the universe. Modern Science has proved that the egg of one female can be fertilized with the nuclear x chromosome of other female to give the birth of a male child. This will lead to start a new way of proliferation of male and female in the universe. All these processes including the birth of Lord Ganesh solely by Godess Parvati/Lakshmi and extinction of male from the universe has been mentioned in the Vedas and Purana especially in Shivpurana, Vishnupurana and Durgapurana. This might be one of the important reason for advocating the respect and protection of female in Veda and Puranas of India since time immemorial

यह नारी के तुष्टीकरण, खुशामद या प्रशंसा की बात नहीं कि पूरे विश्व में लोग कहते हैं "LADIES FIRST" " लेडीज फर्स्ट " यानी महिलाएँ पहले। भारत में तो यहाँ तक कहा जाता है कि-

''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः''

यानी जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवता बसते है अर्थात वहाँ सुख, शांति, प्रेम तथा जीवन का स्थायित्व बना रहता है। यह संदेश सबके लिए है कि पुरूष नारी एक दूसरे का, पुरूष पुरूष का तथा नारी नारी का सम्मान करे।

नारी महान इसलिए है, कि वह जन्मदात्री है, पालक-पोषक है, प्रथम शिक्षक (गुरू) है, मार्गदर्शक तथा प्रेरक है। पुरूष में ये सभी गुण नहीं होते। बिना पुरूष के संयोग से भी बच्चे पैदा हो सकते हैं। आज का विज्ञान भी ऐसा बताता है। भारत के वेदों-पुराणों में लिखा है, कि श्री गणेश जी को माँ पार्वती ने अपने शरीर के त्वचा (उत्तक) से पैदा किया था। नारी की महानता निम्न कारणों से है।

1. नारी विशुद्ध नस्ल (वर्ण) (xx) की है तथा पुरूष वर्णशंकर (मिश्रित नस्ल) (xy) है।
2. नारी में पुरूष की अपेक्षा अधिक संख्या में क्रियाशील शारीरिक अंग होते है।
3. नारी में पुरूष के अपेक्षा अधिक संख्या में शारीरिक क्रियाएं होती है।
4. नारी के त्वचा के नीचे पुरूष की अपेक्षा 1.25-2.0 गुना अधिक वसा जमा होती है।
5. डिफ्यूजन ट्रेसर इमेजिंग ब्रेन स्कैन द्वारा पाया गया है, कि नारी का दिमाग पुरूष से भिन्न होता है। इनमें याद्दाश्त, सामाजिकता एवं ध्यान आकर्षित करने वाली तंत्रिकाओं में बेहतर कनेक्टीविटी होती है। इनमें मोटर सेल्स अधिक विकसित होता है; इसलिए सामान्यतया इनकी वाकपटुता, याद्दाश्त, एवं सामाजिकता पुरूष से अधिक होती है।
6. औरतों की बीमारी की अवरोधक क्षमता egg cells; अंडा कोशिकाओं के कारण पुरूष से अधिक होती है इसलिए सामान्यतया ये दीर्घायु भी हैं।
7. सामान्यतः पुरूष महिलाओं से अधिक बलवान है। किन्तु भारत के वेद-पुराणों में माँ दुर्गा को सबसे शक्तिशाली (सर्वशक्तिमान), सरस्वती को विद्या की देवी तथा लक्ष्मी को धन संपत्ति की देवी माना गया है। इसलिए दुर्गा, सरस्वती एवं लक्ष्मी सबको क्रमशः शक्ति, विद्या एवं धन संपत्ति देती हैं।
8. सामाजिक तौर पर नारी का कार्यक्षेत्र पुरूष से अधिक होता है। क्योंकि पुरूष के कार्यक्षेत्र में बच्चों का पालन पोषण एवं घर के कार्य जैसे, भोजन बनाना इत्यादि नहीं के बराबर होता है।

अब प्रश्न उठता है कि नर कैसे समाप्त हो जाएगा और नारी कैसे बचेगी।

नर में गल क्रोमोजोम तथा नारी में गग क्रोमोजोम होते हैं। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के मानव अनुवंशिकी प्रो0 ब्रीयन साइकेस ने वर्ष 2003 में एक पुस्तक " A FUTURE WITHOUT MEN" (भविष्य पुरूष के बिना) लिखा, जिसमें यह दर्शाया है कि Y क्रोमोजोम (पुरूष 1,25,000 (एक लाख पच्चीस हजार) वर्षों बाद निष्क्रिय (क्षीण) हो जाएगा और पुरूष समाप्त हो जाएगा। आस्ट्रेलिया की क्रमिक विकास अनुवंशिकी प्रो. जेनी ग्रेम ने उसी वर्ष में ही बताया कि पुरूष 50,000,00 (पचास लाख) वर्षों में समाप्त हो जायेगा। प्रो. ग्रेम बताती है कि X तथा Y क्रोमोजोम में 1700 जीन करीब 20-50 करोड़ वर्ष पहले थे। अब Y (पुरूष) क्रोमोजोम में केवल 45 जीन्स बचे हैं जब कि X (स्त्री) क्रोमोजोम में अब भी स्वस्थ 1000 जीन बचे हैं। प्रो. ग्रेन का अनुमान है कि 45 जीन जो Y (पुरूष क्रोमोजोम में बचे है वे करीब 50 लाख सालों में क्षीण हो जाएगे। इसलिए पुरूष समाप्त हो जायेगा तथा केवल नारी ही बचेगी। इससे यह साबित होता है कि Y (पुरूष) क्रोमोजोम X (स्त्री) क्रोमोजोम के तुलना में अधिक कमजोर हैं तथा इसके जीन शीघ्रता से क्षीण (निष्क्रिय) होते हैं।

अवकाश प्राप्त निदेशक, 150 – जे, साएथ सिटी, रायबरेली रोड, लखनऊ

इन अनुसंधानों पर 28 अप्रैल 2014 में ''नेचर'' पत्रिका में टिप्पणी तथा कुछ खंडन भी है, जो जनमानस के तुष्टीकरण के लिए काफी है। किन्तु पुरूष जीन नारी जीन के तुलना में अधिक कमजोर है और वह तेजी से क्षीण हो रहा है, इसे नकारा नहीं जा सकता।

शिव पुराण में लिंग शक्ति (X या Y क्रोमोजोम) की उपादेयता के संबंध में एक घटना का उल्लेख है, जिसमें यह लिखा है कि शिव जी पार्वती के साथ बैठकर सभी देवताओं तथा ऋषियों-मुनियों को शिक्षा (उपदेश) देते थे। सभी श्रोता प्रवचन से पहले शिव-पार्वती की परिक्रमा करके प्रवचन सुनते थे। एक भृंगी (श्रृंगी) ऋषि थे, जो केवल शिव जी की परिक्रमा करके प्रवचन सुनते थे। भृंगी ऋषि ने शिव जी से कहा कि मैं आप का भक्त हूँ और आपकी परिक्रमा करके प्रवचन सुनता हूँ किन्तु अन्य श्रोता गण शिव-पार्वती की परिक्रमा क्यों करते हैं? शिव जी ने बताया कि शिव से स्त्री शक्ति (विज्ञान के अनुसार X क्रोमोजोम 'स्त्री') निकाल दें तो शिव ''शव'' हो जाएगा। भृंगी ऋषि बोले जो भी हो मैं आप की ही परिक्रमा करूँगा। भृँगी ऋषि के नासमझ को दूर करने के लिए शिव जी ने अर्धनारीश्वर का रूप धारण करके प्रवचन देने बैठ गये। सभी श्रोतागण अर्धनारेश्वर शिव तथा पार्वती की परिक्रमा करके प्रवचन सुनने बैठे किन्तु भृंगी ऋषि शिवजी के शरीर के पुरूष भाग की परिक्रमा भौंरा बनकर किये तथा प्रवचन सुने।

प्रवचन के बाद पार्वती जी ने कहा कि यह अच्छी बात है कि आप पुरूष होते हुए केवल पुरूष की ही पूजा करते है। क्यों न आप के शरीर से स्त्री शक्ति (वैज्ञानिक भाषा में X क्रोमोजोम) निकाल दिया जाए। शिव जी के सकारात्मक सहमति से पार्वती जी ने अपने आध्यात्मिक शक्ति से नारी तत्व भृंगी ऋषि के शरीर से निकाल दिया। भृंगी ऋषि की शरीर राख बन गई। वे चिल्लाने लगे माँ हमें बचाइये। हमसे गलती हो गई। हमारे नासमझी के लिए हमें माफ कर दीजिए। शिव जी के आग्रह पर माँ पार्वती ने भृंगी ऋषि के राख वाली शरीर में फिर नारी तत्व (X क्रोमोजोम) डाल दिया। इसके बाद भृंगी ऋषि अपना पूर्ववत शरीर पा गये। वे माँ पार्वती एवं शिव जी के चरणों में गिरकर बार बार क्षमा याचना किये।

वेदों और पुराणों में भी यह संकेत है कि पुरूष तत्व (विज्ञान की भाषा में Y क्रोमोजोम) स्त्री तत्व (विज्ञान की भाषा में X क्रोमोजोम) से कमजोर होता है तथा वह शीघ्र क्षीण हो जाता है। इसलिए एक दिन सृष्टि पुरूष विहीन हो सकती है। यही कारण है कि अनंत अनंत काल से छोटे बालकों के स्वास्थ्य के उपर छोटी बालिकाओं के तुलना में अधिक ध्यान दिया जाता है। औरतें भी छोटे बालकों या पुरूष के स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देती हैं, छोटी बालिकाओं के अपेक्षा। औरतों में रोगों की अवरोधक क्षमता पुरूषों से अधिक होती है, क्योंकि एग सेल्स से एन्टी बायोटिक पदार्थ पैदा होते है। इसलिए इनकी मृत्यु दर कम होती है।

विज्ञान के शोधों के अनुसार केवल नारी से भी पुरूष पैदा हो सकता है। प्रो. ब्रीयन साइकेस के अनुसार नारी सृष्टि को अकेले चला सकती है। एक नारी का अंडा दूसरे नारी के न्यूक्लियस के X क्रोमोजोम से निषेचित यानी गर्भित (फर्टिलाइज) हो जाएगा। यह फर्टिलाइज्ड अंडा बनावटी परखनली में भी विकसित हो सकता है। इससे लड़का या लड़की कोई भी पैदा हो सकता है। इन वैज्ञानिक शोधों तथा भारतीय वेदों-उननिषदों के आख्यानों के आधार पर यह कहना सार्थक होगा कि सृष्टि की रचना श्री महामाता दुर्गा जी ने ही किया था, ब्रह्मा इत्यादि ने नहीं किया था। ऐसे तथ्य दुर्गापुराण में मिलते है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहना रोचक तथा तर्कसंगत होगा कि पुरूष के संरक्षण के साथ-साथ नारी का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि जब पुरूष कमजोर तथा निष्क्रिय (क्षीण) हो जाएगा, तो पुरूष विहीन अवस्था में सृष्टि को चलाने के लिए नारी ही सक्रिय होगी तो पुरूष पैदा होंगे तथा यह दुनिया विकसित एवं संचालित होगी। इसलिए यह नारा कि **''बेटी बचाओ तथा बेटी पढ़ाओ''** बहुत सार्थक, बुनियादी सोच, दूरदृष्टि वाला तथा समृद्धिशाली लगता है।

गहन अध्ययन के बाद यह लेख राष्ट्र तथा सृष्टि (विश्व) के हित में लिंग संरक्षण के संदर्भ में जागरूकता पैदा करने के लिए यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

विचार

जीवन में मूल्य चेतना की आवश्यकता

❒ डॉ. अंजलि सिंह

The culture and value system are important for social order and happiness. It has been realized since early days and have been included in all the religions and social philosophies. Dr. Anjali Singh has described the need of education and incorporation of the value system in our contemporary society

संसार के समस्त जीवो में मनुष्य को श्रेष्ठ कहा गया है, क्योंकि मानव मात्र का विवेक रुपी गुण उसे अन्य जीवों से भिन्न बनाता है। मनुष्य की क्षमताएं उसे अजेय सिद्ध करती है, किन्तु अजेय होने का भाव उसे दम्भी बनाता है। विभिन्न परिस्थितियों में मनुष्य के मन में भिन्न-भिन्न भावनाएं उठ सकती हैं। इन भावनाओं की झलक, व्यक्ति के व्यवहार में परिलक्षित होती हैं, अपने व्यवहार (कर्म) के अनुभव के आधार पर मानव एक जैसे व्यवहार की पुनरावृति करता है अथवा प्रायश्चित करता है। इस प्रकार स्पष्ट है, कि मानव के मन की भावनाएं परिस्थितिजन्य होती हैं जिनसे प्राप्त अनुभव के द्वारा उसकी प्रवृति का निर्धारण होता है। मानवीय प्रवृति सत्कर्म अथवा दुष्कर्म की हो सकती है। इन भावनाओं पर मनुष्य किस प्रकार नियन्त्रण करेगा, यह उसके संस्कारों एवं मूल्यों पर निर्भर करता है। मानवीय प्रवृति से परिवार तथा समाज दोनों ही प्रभावित होते हैं। यह कहना अधिक तर्क संगत होगा कि व्यक्ति विशेष घटनाक्रम तथा संस्कारों का मानवीकरण है। इस प्रकार परिवार में प्राप्त संस्कार और अनुभवजन्य-मूल्य मनुष्य चरित्र निर्माण के निर्धारक तत्व हैं।

मानव कर्म आवश्यकताजन्य हैं। मनुष्य के जन्म के साथ आवश्यकताओं का आरम्भ नियति है। आवश्यकताएं वर्तमान परिदृश्य को प्रस्तुत करती हैं, किन्तु आवश्यकताओं के पुनरागमन की प्रवृति के कारण संचय का महत्व और व्यक्ति का लोभ बढ़ता चला जाता है। यद्यपि कर्म करना व्यक्ति की नियति है, किन्तु स्वार्थपूर्ण कर्म जिनसे जाने अनजाने दूसरों का या अपना भी हित बाधित होता है, मानव व्यवहार के दोष हैं। भविष्य की चिंता तथा भूतकाल के लिए प्रायश्चित मनुष्य का सहज स्वभाव है

न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोश्नुते।
न च सं न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ।। 4

मनुष्य न तो कर्मो का आरम्भ किये बिना निष्कर्मता यानि योगनिष्ठा को प्राप्त होता है और न कर्मों के केवल त्यागमात्र से सिद्धि अर्थात सांख्यनिष्ठा को ही प्राप्त होता है ।

सुख की प्राप्ति का उद्देश्यः

सभी प्रकार के कर्म सुख प्राप्ति के उद्देश्य से किये जाते हैं, किन्तु खुशी ऐसी स्वाति बूँद बन गयी है, जो चातकरुपी मनुष्य को अकाल का आभास करा रही है। मानव की ऐसी स्थिति के पीछे का कारण मनुष्य की अपनी प्रवृति है क्योंकि वह अपनी खुशी को स्वयं ही पहचान नही पाता है। 'यदि मेरा पड़ोसी किसी वस्तु का क्रय करता है, तो वह मेरे लिए दुःख का कारण तो नहीं है'। ऐसा विवेक सभी में नहीं पाया जाता। अपने स्वभाव वश अधिक से अधिक साधन एकत्र करना मनुष्य के जीवन का ध्येय बन गया है ।

"व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते"।। 5

जिन लोगों का मन चंचल होता है वे निर्णय लेने में अपने को असमर्थ पाते हैं अर्थात् परिस्थितियों के आधीन परवश हो जाते हैं तथा सुख प्राप्ति की चाह में दुष्कर्म भी कर सकते है ।

मानव मूल्यों का अत्यधिक निम्न स्तरः

आज का मानव मंगल ग्रह पर भी जीवन की सम्भावनाओं को खोज रहा है। मंगल ग्रह पर जीवन की सम्भावना तलाशना अनुचित नहीं किन्तु इन प्रयासों में विवेक, मूल्य-चेतना कही पीछे रह गये हैं। आज रहने के लिए गगनचुंबी इमारतें हैं, इमारतों में सुंदर भवन है और भवन के हर कक्ष से जुड़ा शौचालय भी है, किन्तु उन ऊँची इमारतों में रहने वाले मनुष्यों में मूल्यों का स्तर यह है कि बेटियां अपने ही घरों में सुरक्षित नहीं है। समाचार-पत्रों में मानव मूल्यों के अधोपतन का विवरण प्रतिदिन मिलता ही रहता है ।

कच्ची सड़कों की जगह कंकरीट के मीलों भागते राजमार्गों ने ले ली है। बसों की जगह मेट्रो का साम्राज्य फैला हुआ है। किन्तु राजमार्गों एवं मेट्रो में सफर करती हमारी आने वाली पीढ़ी की सुरक्षा पर एक बहुत बड़ा प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है। खान-पान का स्तर यह है, कि दालरोटी का रूपांतरण पीजा, बर्गर,चाउमीन में हो चुका है। इसी का परिणाम है, कि खेलने की उम्र में हमारे बच्चे बीमार होने के कारण अस्पतालों की लाईन में आते जा रहे हैं। उस देश में जहाँ श्रीराम के राज्य में किसी के भी घर में ताले नही लगाये जाते थे। आज सत्ता में बैठे हमारे प्रतिनिधि मंत्री, देश का धन स्विस बैंक खातों में रखते हैं। धन्वन्तरी के देश में डॉक्टर मरीज के गुर्दे और दिल का सौदा करते पाए जा रहें हैं ।

काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवतः ।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ।। 6

"इस मनुष्यलोक में अपने कर्मो के फल को चाहनेवाले लोग देवताओं का पूजन किया करते हैं। जिससे उनको कर्मो से उत्पन्न होनेवाली सिद्धि शीघ्र मिल जाये ।"

अपने स्वार्थ-सिद्धि हेतु व्यक्ति ईश्वर को भी रिश्वत दे रहा है । सभी प्रयास भौतिक सुख प्राप्ति हेतु किये जाते हैं। इन सुख सुविधाओं की चकाचौंध में आत्म चिंतन कर सके इतना समय है कहाँ किसी के पास ?

मूल्यों का आधार धर्म हैः

धर्म, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा पारिवरिक रीति-रिवाजों एवं मान्यताओं का अवलम्ब है। धर्म एक ऐसी व्यवस्था है, जो मूल्यों एवं दर्शन के माध्यम से नीतियों एवं विधाओं की स्थापना करती हैं।

डॉ. अंजलि सिंह, डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पूर्नवास विश्वविद्यालय (उ0प्र0 सरकार), मोहन रोड, लखनऊ में अर्थशास्त्र विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर है।

जिनसे प्रेरित होकर समाज में आचार-संहिता की विस्थापना होती है। **धर्म वह है, जिसे धारण किया जाता है।** इसीलिए धर्मचारी व्यक्ति (स्थितप्रज्ञ) सुख दुःख में एक जैसे भाव को धारण किये मूल्यों की पुनरावृति करता है ।

"सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ" ।।7

मन में राग द्वेष या हर्ष शोक आदि किसी प्रकार के विकारों का न होने वाला ही सभी परिस्थितियों में अजेय रहता है। (गीता जीवन के प्रत्येक पक्ष हेतु उदाहरण प्रस्तुत करती है यही नही हिन्दुस्तान से अधिक इसे विदेशों में पढ़ा जाता है) इसी प्रकार धर्मचारी व्यक्ति समाज में उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।। 8

श्रेष्ठ पुरुष तथा संतजन जो-जो आचरण करते है,समाज के अन्य पुरुष भी वैसा-वैसा ही आचरण करते हैं। वो जो कुछ भी प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, समस्त मनुष्य समुदाय उसी के अनुसार कर्म करते हैं ।

मानव प्रवृतियां एवं त्रेगुणः

मनुष्य के कर्मो के रचयिता परमेश्वर नहीं है ,कर्मो के संयोग मानव प्रवृति अथवा गुणों (तमस, रजस,सत्) पर निर्भर करते है ।

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सुजाति प्रभुः।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते।। 9

संसार में तीन प्रकार के व्यक्ति होते है-एक वे जो आलसी हैं, दूसरे वे जो आक्रामक हैं, तीसरे जो सदैव आनन्द में रहते हैं। आलसी व्यक्ति तामसिक, आक्रामक व्यक्ति राजसिक तथा आनंद में रहने वाले व्यक्ति सात्विक प्रवृति के होते। प्रवृतियां जन्मजात भी होती हैं किन्तु खान-पान,रहने के अंदाज से प्रवृतियां बदलती रहती हैं। उच्च प्राण (सात्विक) का भोजन तथा प्रणायाम की आदत सत्व की वृद्धि करते हैं इसके विपरीत बासी, मसालेदार भोजन तथा मांस आदि का सेवन तमस एवं रजस गुण बढ़ते हैं जिससे आलस्य, अवसाद जैसी प्रवृतियाँ बढती हैं ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2020 तक इस धरती पर अवसाद, मृत्यु का सबसे बड़ा कारण बन जायेगा। यदि हम देखें, तो पाएंगे कि युवा दो गुणों (रजस एवं तमस)में ही बंटे हैं। एक ओर तो इतनी उग्रता, क्रोध और हिंसा (घरेलू और सामाजिक) दूसरी ओर एकाकीपन अवसाद और आत्महत्या की प्रवृतियां हैं। इसकी मूल वजह भौतिकता का आवरण है जो हम सभी के दृष्टिकोण को धुंधला करता जा रहा है। मनुष्य की सुख भोगने की क्षमता सीमित है, किन्तु भौतिक संसाधनों की भूख अनंत है। अतः समस्या संसाधनो की सीमितता की न हो कर क्षमता की सीमितता की है। यदि ऐसा न हो तो किसी भी इन्द्रिय सुख के मध्य अन्तराल की आवश्यकता नही होती। हम निरंतर कह सकते, सो कर सकते या कुछ भी नही। भौतिकता की पराकाष्ठा यह है कि हम खाना खाते समय टीवी देखते है। पूजा करते समय टेलीफोन की घंटी सुनते हैं, नहाते समय लेटते है, तो नींद की गोली की जरूरत पडती है। घर में प्रत्येक साधन है, फ्रिज है, फ्रिज में मिठाई है, किन्तु मिठाई न खा सके ऐसी जरूरी बीमारी भी है। कहने का तात्पर्य हमें अपनी यह प्रवृति बदलनी होगी कि इस भाग दौड़ में हम क्या कर सकते है? क्यों कर रहें हैं? उससे क्या सुख हमे मिलेगा? कैसे यह दूसरों को दुखी कर सकता है? जैसा मन कही पीछे छूट गया है और बिना मन के किया गया काम अवसाद के सिवा और कुछ भी प्रदान कर सकता।

निष्कर्ष :

समाजिक-प्रवृतियां अनुभव-जन्य होती है। व्यक्तिगत अथवा संस्थागत क्रियाओं के परिणामों तथा अनुभवों पर सामाजिक व्यवस्था आधारित होती है । आपराधिक-प्रवृतियों के निराकरण के लिए सामाजिक न्याय, नियम तथा कानून की स्थापना की जाती है। धर्म समाज में ज्ञान के प्रकाश को स्थापित करने का काम करता है। जो व्यक्ति धर्माचरण करते हैं उनके लिए धर्म ही नियम-कानून के समान है। धर्म का पालन स्वनियंत्रित व्यक्ति ही करते हैं,उनके लिए कर्म ही पूजा के समान है। अन्यथा धर्म की आड़ में कभी-कभी पुजारी तक भी अधर्म करते हैं। मानव मन में प्रति पल धर्म-अधर्म के मध्य कुरुक्षेत्र का युद्ध चलता ही रहता है। कहीं धर्म की विजय होती है कहीं अधर्म का साम्राज्य। धर्म-अधर्म में से व्यक्ति किस पथ पर अग्रसर होगा इस का निर्णय उसकी प्रवृतियां करती है। मानव प्रवृतियाँ परिवर्तित भी होती हैं किन्तु यह परिवर्तन सत्कर्म की ओर हो इस हेतु परिवार, विद्यालय तथा धार्मिक स्थलों में मूल्य शिक्षा का प्रसार किया जाना आज के समय की मांग है। मनुष्य उचित खान-पान, व्यायाम, प्राणायाम की सहायता से सतत वृद्धि कर सकता है। मूल्य शिक्षा समाज में धर्म एवं परिवार के माध्यम से ही सिखाए जा सकते हैं, जो बेहतर समाज की स्थापना की ओर पहला और सुदृढ़ कदम होगा ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 विनोबा 'गीता प्रवचन' सर्व-सेवा संघ प्रकाशन 33 पृ.
2 उपरोक्त 91-92 पृ.
3 मेरा जीवन ध्येय-स्वामी विवेकानन्द (अनुवादित पं जगदीश प्रसाद व्यास) द्वितीय संस्करण, रामकृष्ण आश्रम, नागपुर, मध्यप्रदेश ।
4 श्रीमद्भागवतगीता, गीता प्रेस-4 / 3; 67 पृ.
5 उपरोक्त-44 / 2; 55 पृ.
6 उपरोक्त-12 / 4; 86 पृ.
7 उपरोक्त-38 / 2; 52 पृ.
8 उपरोक्त-21 / 3; 73 पृ.
9 उपरोक्त –14 / 5; 104 पृ.

भोजपुरी लघुकथा

बीछुड़ल बेटा

❒ प्रोफेसर रामदेव शुक्ल

A swami tought a rich women, when she lost her only son, to love to huminity discarding self ego and bigger self. The women accepted a poor and weak child as her own son after this realization.

स्वामी राम तीर्थ कुछ दिन खातिर अमेरिका गइल रहलें। उनके प्रवचन सुने खातिर अमेरिका के लोग-मरद, मेहरारू, बूढ़, जेवान, मेला एइसन जुटान करे लगलन। स्वामी सबके एक्के बात बतावत रहले-'अदिमी अदिमी में जेंतना भेद भाव दुनिया में बनल बा, ऊ सक नकली ह ऽ। सब एइसन लोग के बनावल ह ऽ जे धरम के नाव पर आ परमात्मा के नाव पर आपन सवारथ साधि रहल बा। परमात्मा सबके एक समान मानेंले। उनके रचल दुनिया के न केहू छोट आ न केहू बड़ बा। न केहू पवित्तर बा, न केहू अछूत वा। जे लोग चाहत होखे कि परमपिता परमात्मा उनके आपन मानें, ओह लोग के ई करे के चाहिं कि जवन सबसे गरीब सबसे दुखिया, सबसे कमजोर लोग बा उनहीं के परमात्मा मानि के उनका सेवा मे आपन तन-मन-धन लगा दें।

रोज स्वामी जी के प्रवचन सुने खातिर महरानी की लेखा रूप रंग, हीरा मोती से सजल धजल एक जनी लमहर कार में चढ़ि के आवें। उनके चाकर उनके खातिर अगले से आसन लगावें। एक दिन ऊ स्वामी से पुछली-आप कहीं ले कि अदिमी एक्के परमात्मा के संतान हवें त काहे परमात्मा कुछ लोग के अच्छा बना के धनी मानी घर के जनम देलें, आ कुछ लोग के कुरूप बना के गरीब के घर मे जनम देलें। स्वामी जी कुछ देर मौन रहलें। उनकर आंखि बंद रहल। धीरे धीरे आँखि खोलि के कहले- 'हे माता, जनम-करम आत्मा के साथे लागल रहेला। परमात्मा से अलग भइले पर आत्मा माया के वश में हो जाले। ओही से रूप-रस-गंध-स्पर्श से भरल संसार मे रमत रहेले। एक देहिं छोड़त के समय मन जवने मोह में रमत रहेला, अगिला जनम ओइसने देह में मिलला। जवन अदिमी आत्मा आ परमात्मा के बीच में माथा के खेलि के भेद समुझ लेला ओकर आंखि खुलि जाला आ ओकर अगिला करम परमात्मा में मिलि जाए खातिर होखे लागेला। ओहीसे सबसे अच्छा रूप हऽ भुखाइल-पियासल, बेमार, गरीब अदिमी के भगवान मानि के सेवा कइल।

ऊ महरानी एइसन दमकत जनानी कहली-स्वामी जी। ए बात के ऊ लोग माने लें, जे मुवला के बाद अगिला जनम मे बिसवास करे लें। हमहन के धरम में एइसन नाही मानल जाला। स्वामी जी हाथ जोरि के कहनीं- हे माता, ईसा मसीह सबसे जियादा सेवा कोढ़ी के करें। काहें? उनके विश्वास रहल कि कोढ़ी, भुखाइल अदिमी के सेवा भगवान के सेवा हऽ।

ओकरे बाद ऊ महरानी कबो स्वामी जी के प्रवचन सुने नाहीं अइली। बहुत समय बाद स्वामी जी भारत लौटे वाला रहलें, एक जनी बूढ़ी महिला छाती पीटल, धार धार लोर बहावत आके स्वामी जी के चरन मे गिरी के लोटाए लगली। कवनो लेखा उनके उठा के स्वामी जी के सामने बइठावल गइल। स्वामी जी पुछनीं-हे माता, आप के हई, आ कवने दुखसे राउर एइसन हालत हो गइल बा।

महिला कवनो तरे चुपइली आ बतवली कि उनके एक्के गो बेटा रहल हऽ। ओकर दुर्घटना में मउत हो गइल। लोग कहि रहल बा कि स्वामी जी चाही त तहार बेटा के जिनगी लवटि आई। स्वामी जी के चेहरा करूणा से भरि गइल। उहाँ के आखिं बंद कऽ के सोचे लगनी कि इनके दुख कइसे कम कइल जा? कुछ देर बितले पर औरत फेरू कातरि होके रोवे लगली। स्वामी जी आखिं खोलि के तकनी। आ ऊ बतावे लगली- स्वामी जी, हम अपने रूप रंग, इज्जत आ धन के घमंड से भरल रहनी। एक बेर आप हमके भुखाइल दुखाइल लोग के सेवा करे के कहनी बाकि हमके आपके बाति रूचल नाहिं। हम प्रवचन सुने आइल छोड़ि दहनी। अब हमरे बेटा के बचा के हमके अपने सरन मे ले लीं। हम जनम भर राउर दासी बन के रहब। हमार बेटा हमके लौटा दीं।

स्वामी जी उनके खातिर पानी माँग के पिए के कहनी। मुँह घोवा पोंछवा के सामने बइठवनीं। उनकी आंखि मे आंखि डारि के कहनी-'तहार बेटा कइसन रहल? कहली-'बहुत सुन्नर। हमहूँ से गोर, हमहूँ से सुन्नर। बहुत चल बिद्धर रहल। ओकरे बिना हम कइ से जीयब? स्वामी जी कहनीं- 'तहके बेटा मिलि जाई, बाकि ओकरे खातिर तहरा आपन सबसे प्रिय धन छोड़े के परी। ऊ कहली – सबसे प्रिय त ऊ लइकवे बा । स्वामी जी कहनी-हे माता, सोचि समुझ के नइखू बोलत। तहार सबसे प्रिय वस्तु बा तहार अहंकार। ओही वजह से आपन रूप, आपन रंग, आपन इज्जत, धन आ आपन बेटा दुनिया मे सबसे सुन्नर लागि रहल बा। ओतना सुन्नर न केहू के रूप मानेलू, न केहू के रंग मानेलू, न केहू के इज्जत मानेलू, न केहू के बेटा मानेलू। जबकि एही अंहकार के नाते, तहार बेटा नही मिलता।

उनके समुझावे के खातिर स्वामी जी कहनी-'तहार बेटा मिलि जाई, बाकि पहिले जइसन रूप, पहिले जइसन रंग आ पहिले जइसन गुदगुदाइल देहिं नाही रहि जाई। जब नवका रूप रंग में बेटा के देखबू समुझि लेबू कि बिमारी से एइसन हो गइल बा। ई समुझि के अपने धन आ सेवा जतन से ओके पाले लगबू त कुछ दिन में पहिलही लेखा तहरा लागे लागी। एह बात के सकार लिहले पर तहार बेटा तहके मिलि जाई। कुछ देर में ऊ मूड़ी गाड़ि के सोचत रहली, ओकरे बाद स्वामी जी के चरन पकड़िके कहली- हमरा मंजूर बा।

स्वामी जी उनके उठवनीं। उनके बांहि पकड़ि के कहनीं। हमरे साथे चलऽ । पुछली-कहाँ? स्वामी कहनी-'जहाँ तहार बेटा बा। स्वामी जी के पाछे पाछे पैदल चलत थोर ही देर में एगो एइसन जगहि पहुचली जहाँ नाली में गंदगी से भरल पानी बजबजात रहल। कुकुर बिलारि लोटात रहलें। ओंही सामने एगो बहुते छोट लड़िका धरती पर परल छपटात रहें। ओकर हाथ गोड़ सूखि गइल रहे। आँखि-नाक से किच्च, पोटा बहत रहे। भूखि पियास के मारे रोवलाऽ के सकती ओकरा ना रहे। एगो ओइसने उघार निघार औरत कँहरति रहे। स्वामी जी आगे बढ़ि के लइकवा के अपनी कोरा में उठा लिहनीं। अपने पितम्बर से ओकर नाक मुँह पोछि ओके महरानी जैसन औरत के ओर बढ़ा के कहनीं-ईहऽ तहार बेटा। अबहिन चिन्हात नइखे। एके गोदी मे ले चलऽ आ नहवा पोछिं के दूध पियावऽ। पोसऽ, पालऽ। धीरे धीरे एके चीन्हे लगबू कि ई तहार बेटवा हऽ। 'ऊ ओके कोरा मे ले लिहली। स्वामी जी अपने पाछे आइल चेला लोग से कहलें- एकरे महतारी के उठा के आश्रम मे ले चलऽ जा। ओकरे रहले खइले के इंतजाम करऽ जा। ऊ लोग अपने काम में जुट गइल। स्वामी जी चले खातिर बढनीं। पाछे-पाछे सुन्नर, गोर महतारी करिया कुरूप कुम्हिलाइल बेटा के छाती से लगवले चले लगली। धरम आ परेम के मरम उनके हिरदय में उजागर होखे लागल।

भोजपुरी कविता-२

सब आसान चीज अच्छा ना होला

❐ बुद्धू काका

This poem describes the detoriating affects of addictions of liquors and narcotic drugs and its affects on health, happiness and economy which get started amongst the friends so easily and so conveniently. It convey the ways and means to fight with ill practices by self consciousness and inner strength. This message has been presented in a new form by the poet which may be counted as modern poetry in the Bhojpur dialect.

सब आसान चीज अच्छा ना होला
नशा शुरू कईल बहुते आसान होला।

शराब, तम्बाकू आ गांजा
शुरू होला मजाक - मजाक में
हंसी ठिठोली, खींचा तानीं,
ऐ मरदे, ऐ मरदे के बीच,
शुरू हो जाला नशा के लेन देन।

नशा, ताकतों के होला, धनों के,
आ जाति धर्म के भी।
केहू के लगावे - बुझावे के नशा होला
केहू के झगड़ा करावे के,
केहू के नशा होला मुकदमा लड़े के,
केहू के इलेक्शन के।
केहू के नाच देखे के नशा होला,
आ केहू के ताश खेले के।

नशा से बर्बाद होला देह, सम्मान, विचार, ताकत आ परिवार।
नशा से बर्बाद होला जाति, गाँव आ देश काल।
नशा से मातल मन के ना बुझाला सही आ गलत के फरक।।

नशा शुरू कइल, जेतने आसान होला,
ओके छोडले ओतने मुश्किल।
बहुत कम लोग में नशा छोड़ला के इच्छा पैदा होला,
आ ऊ इच्छा जीवन में बदलेला।
जीवन प्रक्रिया बनेला,

आ प्रक्रिया मजबूत विश्वास में।
बहुत कम लोग बचा पावेला आपन सम्मान, सेहत,
जीवन आ परिवार, एक बार नशेड़ी भइला के बाद।

जिंदगी के खाली आसान आ मुश्किल में देखल ठीक ना हऽ।
कब आसानी मुश्किल में बदल जाई
आ मुश्किल आसानी में, कहल कठिन बा भाई।

आसानी के अलग–अलग रूप होला
आ मुश्किलों के।
मुश्किल से निकले के बाऽतऽऽ,
सबसे पहिले ओकर कारण समझऽऽ।
ओ कारण के सबसे आसान पहलू पर,
सबसे पहिले चोट करऽऽ,
एक बार मुश्किल के ढ़ाँचा टूट जाई,
त ताना बाना बिखर जाई।
ताना बाना बिखरी, त धागा के पकड़ि के खींचल शुरू करऽऽ,
धीरे–धीरे खुल जाई, मुश्किल के उलझन।
जैसे रस्सी के गोला, खुल जाला।

केहू ना आई तहरा मुश्किल के दूर करे।
नशा शुरू करावे वाला, तहरा पर कौनो एहसान ना करी।
उहे लोग खेत वा मवेशी, औने-पौने दाम पर खरीदी,
जब तू फटेहाल होईबऽऽ या मरि मरा जइबऽऽ।

तहरा भीतरे भागवान बाड़े।
उनके याद कर, उहे दीहें तहके ताकत आ बिचार।
तू त हमरा जइसन बुद्धू नइखऽऽ।
एतना हुशियार बाड़ऽऽ,
एक बेर कोशिश क के त देखऽऽ।

बुद्धू काका, गाँव-पृथ्वीपुर, ब्लाक-दुदही, जिला-कुशीनगर के निवासी हैं, जिन्हें बहुत कम लोग जानते पहचानते हैं।

भोजपुरी लघुकथा

धोबी का गदहा

❑ बुद्धू काका

The rural governance is predominated with the concerns of comfortable people and socio-religious traditions and it ignores the problems of weaker sections, even if it comes for the consideration to the local governance. This short story describes such an event, where a washerman lost his ass.

एगो गाँव रहे ऊधमपुर। छोटे गाँव, रहे, आ लोग बाग ज्यादेतर गरीब। पर गाँव में हलचल खूब रहे। साल भर पूजा पाठ चलत रहे। एगो छोटे मंदिर रहे। आ देवी माई के अस्थल। बरम बाबा के स्थान। विशाल पीपल पर साल भर बगुलन आ टिटहरी के मेला लागत रहे। गाँव में पूजा-पाठ आ यज्ञ के खातिर हर साल बड़का पण्डित जी, साधुबाबा, आ नवका-पुरानका परधान जी के सक्रियता बनल रहे। भगत जी, रमेशर महतो आ कन्हैया साव हर साल महीना भर, लग के चन्दा जुटावे लोग।

पण्डित जी हर सभा मे लोग के बतावें, कि पूजा पाठ, धरम करम से गाँव में शांति रही। खूब बारिश होई। फसल अच्छा जाई। हारी-बीमारी कम रही। यज्ञ आ भजन कीर्तन में सहयोग कइला से आपन पिछला आ अगिला सात पीढ़ी ओरो तरि जाला। लोग के पण्डित जी पर अगाध विश्वास रहे। आपन कमी कर लोग धरम करम के नाम पर बढ़ि-चढ़ि के चन्दा दे। मन्दिर पर हर महीना कुछ ना कुछ चलत रहे। कबो देवी माई के कड़ाही चढ़े, कबो बलि चढ़े। कबो बरम बाबा के पियरी चढ़ें। चोरी के दोष लागला पर लोग बरम बाबा पर पियरी चढ़ा के किरिया खा। जे पियरी चढ़ा के किरिया खा ले, ओकरा पर लोग के पूरा विश्वास हो जा कि ऊ चोरी नइखे कइले।

एक साल जाड़ा के उतार रहे। फागुन के शुरूआत। फसल के एगो हल्का बारिश के जरूरत रहे। राय बनल, कि वर्षा यज्ञ क के वरूण देवता के खुश कईल जा। भगत जी चन्दा जुटावे के समिति के मुखिया बनले, आ पण्डित जी आयोजन समिति के मुखिया। तैयारी शुरू हो गईल। साधू बाबा के जिम्मे रहे, अयोध्या के कथावाचक आ यज्ञ खातिर जानकार ब्राहमण जोहल। पुरानका परधान जी मुख्य जजमान बनले। उनका जिम्में इहै रहे, कि खर्चा के घटल बढ़ल जुटावे के परी। आ ना पूजी ता अपनों लगावे के परी।

सब लोग आपना आपना काम में लागि गइल। यज्ञ भइल धूम-धाम से। बादल उमड़ल थोड़ी देर, लेकिन बारिश ना भईल। धोबी कपड़ा धोवे गइल रहले। गदहा खोलि के चरे के छोड़ दिहले। गदहा के रेकल देख के पाँच-छह ठो लइका जुटि गइले। निरंजन, सुरेन्दर, महेश, राहुल, भोलवा आ संतोष। सब दस से पन्द्रह बरिस के। सुरेन्दर आ राहुल ज्यादे मनबढ़ू रहे लो। डण्डा ले के गदहवा के दौड़ावल शुरू कइल लो। देखा-देखी सब लइका शामिल हो गइले। गदहा भागे लागल। दौड़त दौड़त एक ठो बोवल खेंत में जा के गिर गइल। ऊ रघू के खेत रहल। ओ खेत में मसूरी बोअल रहे। धंगरा गइल। लइकन के लागे लागल कि रघू काका शिकायत करिहें, तो घरे गइला पर पिटाई हो जाई। जल्दी उठावे खातिर कुल मिल के गदहवा के पीटे लगले। बूढ़ गदहा केतना सहे। मरि गइल पड़ल–पड़ल।

नन्हे धोबी जब कपड़ा धो के बाहर निकलने, त गदहा गायब, ढूढ़त-ढूढ़त पता चलल त गदहा के हालत देख के हलक सूख गइल। अब लादी कपार पर ढोए के पड़ी। नया गदहा खरीदला के बेवत नइखे।

थकि हारि के मेहरारू के कहला से परधान जी के दरबार में दुखड़ा रोअले। परधान जी के चमचन में से एगो कहि दिहलस कि गदहा मरले से बड़ा पाप पड़ेला। प्रायश्चित करे के परेला। परधानो जी असमंजस में पड़ि गइले।

पण्डिल जी बोलावल गइले। पतरा के साथे। पण्डित जी उँगली पर कुछ गिनले। ध्यान कइले, मंतर पढले, पानी छिड़कले आ पतरा खोलले। फेर पाँच मिनट गणना कइला के बाद कहले कि शास्त्र में त ई लिखल बा कि वोतने वजन के सोना के गदहा बना के ब्राहमण के दान दिहल जा। तबे गदहा मरला के दोष कटी। पर जमाना बदल गइल बा। गदहा के वजन भर सोना कहाँ मिली। सौ तोला के चाँदी के गदहा बना के दान कइल जा। आ ई छवो लइका रोज सांझि के दूनू हाथ उठा के राम राम कहत, गाँव के चक्कर लगावे। चाँदी के गदहा देहला के त चिंता लइकन के ना रहे, पर गाँव के चक्कर लगावले के नाम पर घबरा गइले। भोलवा जोर से चिल्ला के बोलल। पण्डित जी गदहवा के सबसे पहिले त राउर नाती संतोष डण्डा मरले। संतोष! पण्डित जी अचानक घबरा गइले। संतोषो रहले। संतोषो रहले का? हाँ ऊहो रहले। उहे त दौड़ावे के कहले। पण्डित जी एक मिनट कुछ सोचले। फिर पूछले का टाइम रहे, जब गदहवा मरल? कुछ अन्दाजा बा? तनी नक्षत्रों देखे के परी। वही दिन नक्षत्र बदलताऽऽऽ।

बुद्धू काका, गाँव-पृथ्वीपुर, ब्लाक-दुदही, जिला-कुशीनगर के निवासी हैं, जिन्हें बहुत कम लोग जानते पहचानते हैं। (यह लघुकथा एक पुरानी लोककथा से प्रेरित है।)

दस बजल होई पण्डित जी। निरंजन के पिता जी खंखार के बोलले। देखीऽऽ कुछ रास्ता निकाली। पण्डित जी फेर पतरा खोलले। पानी छिड़कले। मंत्र पढ़ले। उँगली पर ग्रह–नक्षत्र के चाल–ढाल समझले। चेहरा पर कुछ मुस्कराहट आ गइल। खुशी मनाई लोगन। संकट टल गइल रहे। नक्षत्र बदल गइल रहे। नौ बजे के बाद अगर गदहा मरल बा त गदहा मरला के दोष लइकन पर ना लागी। ऊ ग्रह के दोष मानल जाई।

ठीक बा पण्डित जी। परधान जी दस के नोट निकाल के पण्डित जी के ओर बढ़ा देहले। ली, ई पतरा खोलाई ह।' जा जा आपना घरे। जा स लईका। आगे अइसन गलत मत करिह सन।

फिर परधान जी नन्हे धोबी के आदेश सुनवले। नन्हे भाई संतोष करऽऽ लईकन के का सजा दिहल जाई। अदालत-कानून सब ओकनी के छोड़ देला। गदहवा के हटवा के जमीन मे गाड़ दऽ, ना तो बदबू आई। हम रघू के के कहि देबऽ। खेत धंगरइला के किराया ना मागिहें। थोड़ा-थोड़ा सभे सहि ले। का कईल जा। सबका यही गाँव में न रहे के बा। ई छोट-छोट बात चलत रहेला।

धोबी नन्हे और उनके पत्नी उदास, आ अवाक् सिर नीचे क के परधान जी के नमस्ते क के चलि गइल लो। अब बिना गदहा के गन्दा कपड़ा आ सऊनल लादी कपार पर ढोए के पड़ी। ई कौनो छोट बात बा।

हिन्दी कविता

तू ज़िन्दा है

❒ श्री शंकर शैल

तू ज़िन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यकीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
ये गम के और चार दिन, सितम के और चार दिन
ये दिन भी जाएँगे गुज़र, गुज़र गए हज़ार दिन
कभी तो होगी इस चमन पे भी बहार कह नज़र
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर
तू ज़िन्दा है .....
सुबह और शाम के रंग हुए गगन को चूम कर
तू सुन ज़मीन गा रही है कब से झूम–झूम कर
तू आ मेरा सिंगार कर, तू आ मुझे हसीन कर
अगर कहीं है, स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है....
हजार भेष धर के आई मौत तेरे द्वार पर
मगर तुझे न छल सकी, चली गई वो हार कर
नई सुबह के संग सदा तुझे मिली नई उमर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है....
हमारे कारवाँ को मंज़िलो का इंतजार है
ये आँधियों, बिजलियों का पीठ पर सवार है
तू आ कदम मिला के चलेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है....
जमीं के पेट में पली अगन, पले हैं ज़लज़ले
टिके न टिक सकेंगे भूख-रोग के स्वराज ये
मुसीबतों के सर कुचल, चलेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है....
बुरी है आग पेट की बुरे हैं दिल के दाग ये
न दब सकेंगे, एक दिन बनेंगे इंकलाब ये
गिरेंगे, जुल्म महल, बनेंगे फिर नवीन घर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है....

बाल कविता

हरियाली और सफाई

❒ प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह

रूठा मौसम, उसे मनाना,
पेड़ो को ही आता है।
हवा विषैली सोख बगीचा,
मीठा आम खिलाता है।
हरियाली ही जीवन देगी,
हरे भरे हो गांव शहर।
सड़को पर ही पेड़ क्यो लगे,
बाग उगे अब शहर-शहर।
कचरे में तो रोग अनेकों,
कचरे का लगता अम्बार।
साफ सफाई बहुत जरूरी,
यह कहना है, बारम्बार।
आओ हम संकल्प उठाएँ,
हरियाली हो गांव नगर।
सभी हाथ कचरे पर लपकें,
साफ सफाई पर हो नजर।

सभार : विज्ञान गीत, हरियाणा विज्ञान मंच रोहतक

भोजपुरी कविता-१

प्रेम आ लड़ाई

❒ बुद्धू काका

Self struggle is most productive fight and love to others and all is most powerful love. This bhojpuri poem underlines this philosophy in a form of poetry, which is a new form for this emerging dialect (in process to evolve as a language).

प्रेम आ लड़ाई के ना करेलाऽ,
पर अलग-अलग लोग के प्रेम
मे फरक होला, आ लड़इयो में।
केहू प्रेम करेला आपना देहि से,
केहू अपना परिवार से।
केहू जर जमीन से, धन से आ रोबदाब से,
आ केहू गाँव, जहान, देश से प्रेम करेला।

केहू के पालतू जानवार से प्रेम होला,
आ केहू के खेत खलिहान से,
केहू के प्रेम होला नशा से,
केहू के लगाई-बुझाई से,
केहू के झगड़ा-टंटा से प्रेम होला
आ केहू के राजनिति से,

केहू के प्रेम होला पढ़ाई-लिखाई से,
केहू के कमाई से।

लेकिन मान सम्मान वही के मिलेला,
जे सबका से प्रेम ले ला, आ सबका के प्रेम देला।
सबके करेला चिन्ता, सबके मदद,
जे अपना से प्रेम करी, ओसे दूसर काहे करी प्रेम?
जेकरा खाली आपन चिन्ता बा,
ओकर चिन्ता दूसर केहू काहें करी?
बतावऽऽ।
प्रेम के खुशी से बढ़ि के, कवनो खुशी ना होला।

प्रेम के तरे लड़इयों कई तरह के होला।
केहू लड़ेला आपना खातिर,
केहू जाति खतिर, केहू अड़ोस-पड़ोस खातिर,
केहू देश खतिर, केहू सत्ता खातिर,
आ केहू लड़ेला अपना वर्चस्व खातिर।

केहू दोसरा से लड़ेला, केहू अपना से।
दोसरा से लड़े वाला अक्सर हार जाला।
आपना से लड़े वाला ज्यादातर जीत जाला,
आ कबो-कबो ऊहो हारि जाला। का करबऽऽ।

जे जीत जाला आपना से लड़िके,
ऊ जीत लेला देश, समाज, जीवन आ जंजाल,
अपना से लड़ला से नफरत के उपर प्रेम के जीत होला।

प्रेम से जीतल जा सकेला सब कुछ,
अड़ोस, पड़ोस, गांव, देश दुनिया।
बीमारी, गरीबी, खुशी, ज्ञान आ मोक्ष।
बुद्धू त छोड़ देहले बाड़े दोसरा से लड़ल अबऽ।

आपना से लड़ल सबसे बीहड़ लड़ाई बा,
ईहे चलऽऽता बहुत दिन से,
ना जाने कब ले चली,
न जाने जीतिहें, कि हरिहें?
बुद्धू त बुद्धूए हऊवन, उनके का,
तूँ अपना से लड़ऽऽ तू लड़ऽऽ जीत जइब ऽऽऽ।

बुद्धू काका, गाँव–पृथ्वीपुर, ब्लाक–दुदही, जिला–कुशीनगर के निवासी हैं, जिन्हें बहुत कम लोग जानते पहचानते हैं।

हरियाणवी गीत

रागिनी

❒ प्रोफसर रणवीर सिंह दहिया

सच्चा प्यार

1. हरियाणा में पंचायतों की सख्ती और रोक के बावजूद भी बढ़ रहे हैं प्रेम विवाह के मामले। सच्चा प्यार कभी नहीं झुकता। क्या लिखा कवि ने भला———————

सच्चा प्यार करणियां नै कदे पाछै कदम हटाये कोन्या।
एक बर जो मन धार लिया मुड़कै फेर लखाये कोन्या।
हीर रांझा नै अपने बख्तां मैं पूरा प्यार निभाया कहते
लीलो चमन हुये समाज मैं घणा ए लोड़ उठाया कहते
सोनी महिवाल सच्चे प्रेमी मौत को गले लगाया कहते
आज के पंचायती बेरा ना प्रेमियां नै क्यों नहीं सहते
सुण फरमान पंचायतियां के कदे प्रेमी घबराये कोन्या।
नल दमयन्ती का किस्सा हम कदे कदीमी सुणते आवां
दमयन्ती नै वर माला घाली या सच्चाई कैसे भुलावां
अपना वर आपै ए चुन्या क्यों इस परम्परा नै छुपावां
अपनी मर्जी तै जो ब्याह करैं उनकै फांसी क्यों लगावां
हरियाणा के प्रेमी जोड़े पंचायतां कै काबू आये कोन्या।
सत्यवान और सावत्री का किस्सा बाजे लख्मी गागे आड़ै
सावत्री लड़ी यमराज तै वे कहते पिंड़ा छुड़ा भागे आड़ै
सावत्री तै इतनी आजादी देकै लिखणियां बी छागे आड़ै
हरियाणा के आज के जोड़े फेर क्यों फांसी पागे आड़ै
हरियाणा नम्बर वन प्यार मैं इसे गाने गाये कोन्या।
जातां बीच मैं प्रेम विवाह का चलन यो बढ़ता आवै सै
फांसी का फंदा दीखै साहमी पर प्यार की पींग बढ़ावै सै
इसी के चीज बताई प्यार मैं जो प्रेमियां नै उकसावै सै
रणबीर सोचौ पड़्या खाट मैं बात समझ नहीं पावै सै
तहे दिल तै साथ सूं थारै मनै झूठे छन्द बनाये कोन्या।

नारी

मानस तो बनै बिचारा कहैं बीघनों की जड़ नारी
बतावें वासना छिपाने को चोट कामनी की हो न्यारी
योग ध्यान करनीया नारद पूरा योगी गया जताया
विश्व मोहिनी पै गेरी लार काया मैं काम जगाया
पाप लालसा डटी ना उसकी मोहिनी का कसूर बताया
सदियाँ होगी औरत उप्पर हमेशा यो इल्जाम लगाया
आगा पाछा देख्या कोन्या सही बात नहीं बिचारी ।।
कीचक बी एक हुआ बतावें विराट रूप का साला
दासी बणी द्रोपदी पै दिया टेक पाप का छाहला
अपनी बुरी नजर जमाई करना चाहया मुंह काला
भीम बलि नै गदा उठाई जिब देख्या जुल्म कुढाला
सारा राज पुकार उठया था नौकरानी की अक्कल मारी ।।
पम्पापुर मैं रीछ राम का एक बाली बेटा होग्या रै
सुग्रीव की बहु खोस लई बीज कसूते बोग्या रै
गेंद बना दी जमा बीर नारी उसका आप्पा खोग्या रै
जमीन का हक खोस लिया मोटा रास्सा होग्या रै
सबते घनी सताई जावै घर मैं हो चाहे कर्मचारी ।।
पुलस्त मुनि का पोता हांगे मैं पूरा मगरूर था
पंचवटी तैं सीता ठा कै घमंड नशे मैं चूर था
सीता बणी कलंकिनी थी धोबी का वचन मंजूर था
उर्मिला का तप फालतू था जिकरा चाहिए जरूर था
झूठी श्यान की बाली चढ़ाई रणबीर या सबला नारी ।।

प्रोफेसर रणवीर सिंह दहिया प्रख्यात सर्जन हैं एवं रोहतक पी.जी.आई. के रिटायर्ड प्रोफेसर हैं। वे ज्ञान विज्ञान आन्दोलन से सक्रियता से जुड़े हैं। उनका पता है – पी.–26, इन्द्रप्रस्थ कालोनी, सोनीपत रोड, रोहतक – 124 001 (हरियाणा)

ماآخذ۔

مولانا ابولکلام آزاد، انور عارف، ادبی دنیا اردو بازر دہلی

فکر و عمل کے چند زاوئے۔ ڈاکٹر وہاب قیصر

مولانا آزاد ایڈیٹر: پریم کھوپال متل موڈرن پبلیکیشن سنہ ۲۰۱۳ء

مولانا ابولکلام آزاد: ذہن اور کردار۔ عبدالغنی انجمن ترقی اردو نئی دہلی سنہ ۲۰۱۱ء

ڈاکٹر راشدہ اطہر

اسسٹنٹ پروفیسر، شعبہ حقوق انسانی

باباصاحب بھیم راؤ امبیڈکر یونیورسٹی، لکھنؤ

Maulana Azad was born on 11 November 1888 in Mecca, Saudi Arabia. His real name was Abul Kalam Ghulam Muhiyuddin who eventually became known as Maulana Azad. He belonged to a very reputed Muslim Family. Azad's father Maulana Muhammad Khairuddin, was a Bengali scholar who authored a dozen of books and had thousands of disciples, while his mother was an Arab, the daughter Sheikh Mohammad Zaher Watri, himself a reputed Scholar from Medina who had a reputation that extended even outside of Arabian Indian Scholar and a senior political leader of the Indian independence movement. Following India's independence, he became the first Minister of education in the Indian Government in January, 1947. As Education Minister, Azad, in formulating educational policies, he could contribute to the future form of the country. He performed a number of important services for Indian education. In order to reorient and reconstruct the education system in the context of a changed perspective, He began his task with a detailed enquiry into the malaise and limitations of the existing educational arrangement by appointing University Education Commission (1948), Kher Committee for Elementary Education (1948) and Secondary Education Commission (1952-53). He also established University Grants Commission (UGC) in 1956 by an Act of Parliament for disbursement of grants and maintenance of standards in Indian universities. On the technical education side he strengthened All Indian Council for Technical Education. The Indian Institute of Technology (IIT), Khargapur was established in 1951 followed by a chain of IIT's at Bombay, Madras and Kanpur and Delhi. School of Planning and Architecture came into existence at Delhi in 1955.

There is a significant link between Maulana Abul Kalam Azad's educational vision and his educational policies and programmes which was reflected in the important changes and development in the field of education that took place in the eventful early few years of the country's independence. In 1992 he was posthumously awarded India's highest civilian award, the Bharat Ratna. His contribution to establishing the education foundation in Indian is recognised by celebrating his birthday as "National Education Day" across India.

''وزارت تعلیمات کا جائزہ حاصل کرتے ہی پہلا فیصلہ جو کیا وہ یہ تھا کہ ملک میں اعلیٰ فنی تعلیم کے حصول کے لیے سہولتیں فراہم کی جائیں تاکہ خود ہم اپنی اکثر ضرورتوں کو پورا کرسکیں۔ ہمارے نوجوانوں کی ایک بڑی تعداد اعلیٰ تعلیم کے حصول کے جو باہر جاتی ہے وہ خود ملک میں تعلیم حاصل کرسکتی ہے۔ میں اس دن کا منتظر تھا اور ہوں جب ہندوستان میں فنی تعلیم کی سطح اتنی بلند ہو جائے کہ باہر سے لوگ ہندوستان اس غرض سے آئیں کہ یہاں اعلیٰ سائنس اور فنی تعلیم و تربیت حاصل کریں۔''

مولانا آزاد مستقبل پر نگاہ رکھتے ہوئے کئی ٹھوس قدم اٹھائے اور کئی اداروں کا قیام کیا جیسے یونیورسٹی گرانٹس کمیشن، انڈین کونسل فار ایگریکلچرل اینڈ سائنٹفک ریسرچ، انڈین کونسل فارمیڈیکل ریسرچ، اور انڈین کونسل آف سائنس ریسرچ وغیرہ، فنی تعلیم کو ملک میں تیزی سے فروغ دینے کے لیے کونسل فار سائنٹفک اینڈ انڈسٹریل ریسرچ،(CSIR) جو ایک غیر فعال ادارہ بن گیا تھا اس کو فعال بناتے ہوئے اس میں تحریک پیدا کی، اور اس کے تحت سائنسی تحقیقاتی اور فنی مہارت کے قومی اداروں کو قائم کیا، مولانا آزاد اپنی تقریروں میں چاہے وہ فنی تعلیم کی کل ہند مجلس ہو یا ہندوستانی قومی کمیشن کے جلسوں میں چاہے وزرائے تعلیم کی کانفرنس میں یا ہندوستانی قومی کمیشن کے جلسوں میں یا مختلف اداروں کی تاسیس پر سننے والوں میں اس امر کا شعور پیدا کیا کرتے تھے کہ تعلیم ہی منصوبہ بندی کی کامیابی کی اساس ہے اور فنی تعلیم کو ہر سطح پر راج کیے بغیر نہ ملک میں صنعتی ترقی ہوسکتی ہے اور نہ اس کو برقرار رکھا جاسکتا ہے۔ فنی تعلیم و تربیت کے لیے مولانا آزاد کا ایک بڑا کارنامہ یہ ہے کہ انھوں نے ۱۹۵۱ء میں کھڑک پور انسٹی ٹیوٹ آف ٹکنالوجی کے قیام کو عملی شکل دی جس نے بعد میں انڈین انسٹی ٹیوٹ آف ٹکنالوجی (IIT) کھڑک پور کے نام سے ملک بھر میں شہرت حاصل کی۔

مولانا آزاد کے علم سے متعلق ڈاکٹر ودیاساگر آنند مولانا ابوالکلام آزاد اور دیگر مضامین میں رقم طراز ہیں کہ مولانا کی انفرادیت یہ تھی ماضی اور حال دونوں پر گہری نگاہ رکھتے تھے وہ ہزاروں سال پہلے کے معروف ان ہندوستانی شخصیات کا مجھ سے تذکرہ کیا کرتے جن کے بارے میں میں نے صرف تاریخ میں پڑھا تھا دنیا بھر کے انقلابوں، عظیم شخصیتوں، انقلاب فرانس کے رہنماؤں، اور دیگر تمام سرگرم دانشور افراد کے بارے میں معلومات وسیع تھی، یہی وجہ تھی کہ مولانا کے تدبر اور حوصلہ مندی اور ان کے سیاسی فہم نے انھیں اعلیٰ مقام عطا کیا۔

مہاتما گاندھی مولانا کے زبردست مداح تھے، جواہر لال نہرو نے انھیں ہندوستان کا معمار قرار دیا، کانگریس میں مولانا کی مقبولیت کا یہ عالم تھا کہ محض ۳۷ برس کی عمر ۱۹۲۳ء میں وہ انڈین نیشنل کانگریس کے سب سے کم عمر صدر منتخب ہوئے۔ مولانا نے جہاں ہر شعبۂ تعلیم کو زندگی بخشی وہیں سائنس اور فنی تعلیم کے فروغ کو استحکام بخشتے ہوئے جدید ہندوستان کی تعمیر میں اہم حصہ ادا کیا۔

یہ کہنا غلط نہیں ہوگا کہ مولانا آزاد کی خدمات کسی محکمے کے انتظامی امور تک محدود نہیں تھیں۔ وہ آزاد اور جدید ہندوستان کہ معماروں میں ایک تھے۔ گاندھی جی تو ملک کے آزاد ہوتے ہی دنیا سے رخصت ہوگئے۔ دستور ہند کی تشکیل، ملک کی داخلہ و خارجہ پالیسیوں کی ترتیب اور حکمراں جماعت کی تنظیم کے مسائل کے حل میں وزیر اعظم پنڈت جواہر لال نہرو کی مدد جس ایک رہنما نے سب سے زیادہ کی وہ مولانا آزاد ہی ہیں۔ جمہوریہ ہند کی مخصوص سکولیرزم مولانا آزاد ہی کے دماغ کا کمال ہے۔

शख़्सियत

Dr. Rashida Ather
Assistant Professor, Deptt. of Human Rights
Baba Saheb Bhim Rao Ambedkar University
Lucknow

مولانا ابوالکلام آزاد اور تعلیم

مولانا آزاد نے ۱۸۸۸ء میں بمقام مکّہ میں آنکھ کھولی۔آپ کا خاندان صدیوں سے علموں وارشاد وفلسفہ وحکمت اور روحانیت کا مرکز تھا مولانا کی ابتدائی تعلیم گھر میں ہی ہوئی۔لیکن آپ کی علمی استعداد نے اس زمانے کے بڑے بڑے علماء کو حیرت زدہ کر دیا بچپن سے ہی طبیعت کا رجحان صحافت کی طرف رہا ۱۰ اسے ۱۱ برس کی عمر میں مشہور علمی و ادبی رسالوں میں آپ کے مضامین شائع ہونے لگے۔آپ کو بچپن سے ہی کتابوں کے مطالعے کا شوق رہا۔گھر پر فلسفہ، منطق، ریاضی اور الجبرا کے الگ الگ مدرسین مقرر تھے۔ ۱۳ سال کی عمر میں انھوں نے اسلامی علوم اور فلسفہ کی تعلیم حاصل کر لی تھی۔عربی، فارسی، ترکی ادب کے مطالعہ کے علاوہ علم کیمیا اور علم فلکیات پڑھ چکے تھے۔انگریزی کے ساتھ فرانسیسی زبان پر بھی مہارت حاصل کر لی تھی۔اور یہ ساری تعلیم وتربیت گھر میں والد کے زیر نگرانی مکمل کی تھی۔

پہلی دفعہ مولانا الہلال کی شکل میں عوام کے سامنے جلوہ گر ہوئے اور بدر کامل بن کے چمکے عربی فارسی اردو کے ماہر اور ایک شہرہ آفاق مشرقی عالم ہونے کے باوجود انگریزی کو ملک سے جلاوطن کرنا پسند نہیں کیا اور قومی ضروریات نیز علمی فوائد کے لئے اس کو نظام تعلیم میں برقرار رکھا۔

مولانا ابوالکلام آزاد ہندوستان کے پہلے وزیر تعلیم کی حیثیت سے انھوں نے اس ملک کے نئے نظام میں تعلیم کی بنیاد ڈالی، انھوں نے اعلیٰ تعلیم بالخصوص سائنس وتکنالوجی کی تعلیم کو فروغ دینے کے لیے اہم اقدام کیے۔سیکنڈری ایجوکیشن کمیشن، یونیورسٹی ایجوکیشن کمیشن اور یونیورگرانٹس کمیشن کی چند اہم مثالیں ہیں۔

مولانا آزاد نے وزیر تعلیم کی حیثیت سے سائنس و تکنیکی تعلیم کے ارتقاء کے لیے جو بیج بوئے تھے وہ تناور درخت کی شکل اختیار کر چکے ہیں اور نوجوان نسل کی تعلیمی وتحقیقی ضرورتوں کی تکمیل کا باعث بنے ہوئے ہیں، یہی وجہ ہے کہ ہندوستان نے اکیسویں صدی میں داخل ہوتے ہوئے سائنس اور ٹکنالوجی کے میدان میں جو ترقی ہے وہ یہاں کی یونیورسٹی اور سائنسی تحقیقی اور صنعتی اداروں کی مرہون منت ہے، انھوں نے تعلیم کو قومی فلاح کے حصول میں متوازن ذہنوں کی پیداوار میں ملک میں باہمی اتفاق واتحاد قائم کرنے میں ایک ہتھیار کے طور پر استعمال کیا۔

مولانا نے اپنے تعلیم پروگرام کو تقویت دینے کے لیے وزارت تعلیم کے سکریٹری کی حیثیت سے ڈاکٹر تاراچند، پرویز ہمایوں کبیر اور خواجہ غلام السیدین جیسے ماہر تعلیم کی خدمات حاصل کیں۔

مولانا آزاد کو شدت سے اس بات کا احساس تھا کہ فنی تعلیم کے بغیر ملک میں صنعتی ترقی نہیں ہو سکتی۔معاشی ترقی کی رفتار اضافہ مقصود ہو تو فنی تعلیم میں توسیع بے حد ضروری ہے ان کا خیال تھا کہ اس بات پر مستقل نظر رکھنے کی ضرورت ہے کہ ہماری آئندہ ضرورتوں کی تکمیل کے لیے کتنے فنی ماہرین کی ضرورت پیش آئے گی اس کے علاوہ انھوں نے ملک کی جامعات، فنی اداروں اور صنعتوں میں ایک مناسب رابطے کی ضرورتوں کو ناگزیر قرار دیا، مولانا آزاد نے ان خیالات کا اظہار کچھ اس طرح سے کیا ہے:

Water

Issues and Challenges in Restoring Glory of River Ganga

❐ Durgesh Kumar Dubey

माँ गंगा (गंगा नदी) भारत की बड़ी आबादी के लिये जल स्रोत, संस्कृति तथा आध्यात्म की देवी है, जिसके पानी में शुद्धिकरण एवं पुर्नजीवन की अपार क्षमता आदि काल से ही आंकी गई है। यह दुखद है कि शहरी और औद्योगिक सभ्यता के विकास के बाद से लगातार शहरी और औद्योगिक कचरे की नालियां इसमें गिरती रही। गंगा को साफ करने में अरबों रूपये खर्च हुये पर गंगा अभी भी वैसी की वैसी है। इसके कारणों की पड़ताल कर रहा है, यह अभिलेख।

'Shrotasamasmi jahnavi' – Among the water sources, I am the Ganga – Bhagawd Gita

The Ganga is also called **Bhagirathi** after sage Bhagirath, who was considered instrumental to caused her descent through his tapasya. Ganga river is known traditionally to have unique properties whereby her waters has the ability to purify itself. This fact was not only known to the common man who preserve her water in a jar for years but even to kings and prince like Akbar and the Maharaja of Jaipur carried Ganga water in massive urns for their personal use, even when travelled abroad.

Water contain lot of living organisms and get affected by negative and positive inputs. This too is what our scriptures declared time and again and that traditions teaches that the word animate and inanimate are to be treated with the utmost respected and compassion.

Self Cleanimg Capacity of Ganga

Ganga is regarded as river of prosperity and purifier from the pollution of sin. It is said that the Ganga has an unique capability to kill harmful Bacteria. It is believed that, the Ganga was gifted with scientifically proven germicidal quality. The Ganga water has curative power as believed since civilization.

In our 'modern' age we seem to be forgetting this uniqueness and considering this holy river no more than a flow of water to be harnessed for hydro power. It is very unfortunate that in the present times the water is misused for draining out the industrial and municipal waste in unplaned manner.

Why is Ganga Polluted?

Pollution serves virtually as a drain for carrying away sewage, industrial waste, agricultural and chemical residues, carcasses of animals, half cremated human bodies and the discards of religious rituals and thousands of idol of gods and goddes finds its way into its heart. Thirtysix settlements of Class-I cities, contribute 96% of wastewater draining into the river. According to Central Pollution Control Board (CPCB) 2013 report, 2723 million literes per day (M/d) of domestic sewage is discharged by cities alomg the river. The river flows through the most densely populated twenty nine cities with population over 100,000 and 23 cities with population between 50,000 and 100,000. About 48 towns with a sizable population's effluents and countless tanneries, chemicals plants, textiles mills, distillieries, slaughter houses and hospitals etc. contribute to the population by dumping untreated toxic and non-biodegradable waste into it. Needless to say, the capacity to treat this sewage is inadequate. But it is even smaller as the gap between sewage generation and treatment remains the same every year (55%). So even if some additional treatment capacity is added; more sewage gets added because of ever increasing population growth. Over and above, 764 industrial units along the main stretch of the river and its tributaries Ghaghari and Ramgangaer which are carrying discharge of about 500 M/d of mostly toxic waste.

The horror does not end here. Most of the cities do not have underground drainage networks. Even in Allahabad and Varanasi, 80% of areas are without sewer. Waste is generated but not arrived to treatment plants. There is no

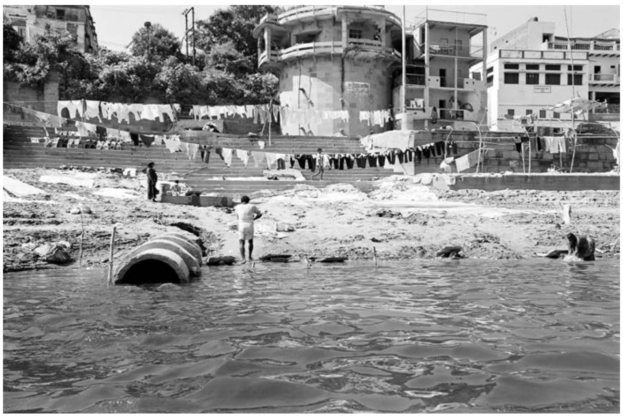

Department of Economics, K.P.B. Hinduja College of Commerce, 315, New Delhi Road, Mumbai 400 004
email- dkdubey24@gmail.com

electricity to run treatment plants by the bankrupt munacipalities. The water utilities have no money to pay for operations. The CPCB checked 51 out of 64 sewage treatment plants (STPs) along the Ganga in 2013 and found only 60% of installed capacity was being used; 30% of the STPs were not even operational. So actual treatment is even less and utilities for waste discharged into the river is even more. Uttar Pradesh has 687 grossly polluting industries (CPCB). This largely small scale, often illegal units-tanneries, sugar pulp, paper and chemical industries contribute about 270 M/d of wastewater. But what really matters is the location of the plant and its operational efficiency.

Ganga is the largest and the most sacred river of India with enormous spiritual, cultural, and physical influence. It provides water to about 40% of India's populations in 11 states of the country. It is estimated that the livelihood of over 500 millions people in India are dependent upon the river and that one – third of India's population lives within the Ganges Basin. Despite this magnitude of influence and control by the river over present and future generations, it is allegedly under direct threat from various manmade and natural environmental issues.

Efforts Made to Restore the Glory of River Ganga

On 14th of June , 1986, while launching this august plan, Late Rajiv Gandhi had said "The Ganga Action Plan (GAP) is not just a government plan, prepared for the PWD or government officials alone. It is up to us to clean the whole of Ganga and refrain from polluting it. This programm starting at Varanasi, here today will reach out to every corner of our land and to all our rivers. In the years to come, not only Ganga but all rivers will be cleaned and made pure as they once were, thousands of years ago."

However, Ganga Action Plan–I (GAP-1) was extended as GAP-II from 1993 onwards covering four major tributaries of Ganga viz. Yamuna, Gomati, Damodar and Mahanadi. The scope of program was further widend in 1995 with the inclusion of other river and renamed as National River Conservation Plan (NCPR). It is worth to mention here that Ganga could not be cleaned but 34 other river had been taken up for cleaning with the same failed model of 'GAP'. Golden egg business expansion.

'Namami Gange' Programme of the Present Government

As stated in Union Budget 2014-15, the efforts made earlier to clean Ganga, are not yielded up to desird levels because of the lack of concerted efforts by all the stakeholders. Accordingly an integrated Ganga Conservation mission called, 'Namami Gange', a sum of ₹2037 crores has been kept aside for this purpose. In addition, a sum of ₹100 crores has been allocated for developments of Ghats and beutification of River Fronts at Kedarnath, Haridwar, Kanpur, Varanasi, Allahabad, Patna and Delhi in the current financial year. The current government and specially Prime Minister is showing interest (like erlier by Prime Minister Shri Rajiv Gandhi) to restore glory of river Ganga. 'Namami Gange', is now a part of the National Mission for Clean Ganga (NMCG) Programme. The Supreme Court also has been pushing the government to come up with and effective Ganga rejuvenation plan.

Instead of going ahead with the IIT recommendation, the centre has now developed a ₹ 20,000 –crore plan, which unfortunately, is a copy of the much maligned Ganga Action Plan (GAP). There is only one difference, it has a new name: 'Namami Gange'. Like the GAP the new plan focus on pollution abatement infrastructure strategies. There is no mention on how to improve the ecological health of the river. There is not even a word on how to restore the river's environmental flow, which is vital for the river's rejuvenation. There is no reference to the IITs recommendation, as had been promised to the Supreme Court.

How to Restore Glory of River Ganga?

A plan has been mooted to bring schools and other local institutions together to save the world famous historical ghats at Ganga's bank to maitain their cleanness. The Bharamsarover in Kurukshetra was adopted by Kurekshetra Management Board under the rule of Chief Minister Mr. Bansi Lal. This process of adopting the Ghat will certainly motivate the politicians' involvement in the real terms to restore the purity of river Ganga.

Public Private Participation model can be the most useful model in cleaning up of Ganga and here the current government's thinking is appreciable. The central

government's appeal to companies, spiritual organization and reach Indians abroad to take part in cleaning up of Ganga may help to the project. In his budget, especially this year, union finance minister Arun Jaitely proposed that donations other than contributions under corporate social responsibility (CSR) to the clean Ganga fund by resident Indians shall be elgible for 100% tax rebate. This arrangement has to be taken to the next level by getting companies to involve themselves in project work. At the Ganga Manthan last year, Union Minister Nitin Gadkari has said that 80,000 crores was required to clean up the river.

Some experts were surprised to this thin estimate and considered the amount too little. The inter-ministerial committee, which Mr. Gadkari heads , had then come up with the idea of viability – gap funding - something similar to road projects-with the central meeting. It was thought that it cover only 30% of the needs and the rest of the amount will come through public – private partnerships.

Environment

Climate change Indian Context

❒ Dr. Mohammad Rafeek

Till last century India had a typically four weathers. Winters, Autumn, Summers and Rains. There was a set pattern for these weathers – Novembers, December, January for Winters, February, March , April Autmn, May, June as Summers, July August September as rainy season with October being a transitional month from summers to winters.

Starting of 20th century this almost set pattern has started to change and for past 3-4 years winters are stretching till February end-mid March, summers start by mid-April with extreme heat in May and June where temperature rises up to 50 degrees, less rains only to happen in late July and August combined with humid heat in late August, September , summers in October till mid November with winters setting in only towards the last end of December.

This climate change pattern has led to many environmental and health hazards all around the world and largely impacting India. Heat waves, floods –both on land and in coastal areas, droughts earth quakes and hurricanes are having a common occurrence. These affect social psychological and physical health of human being .In India all these combine wih pollution which leads to hazardous diseases such as Dengue, Malaria, Incefilitis, Chikanguniya, respiratory problems Asthama, Skin diseases, Cholera, Fever, viral infection Heart problems and at times even lead to drugged diseases such as Cancer. World Health Organization estimates that due to climate change happening world wide world will witness additional 2.5 lakh death per year from 2030 to 2050.

Climate change is an important aspect of developing countries like India as it is a threat to Human health,air pollution, water supply and the quality of production of food key asis of our economy agriculture, fisheries and forests are affected. In past 2-3 years we have witnessed untimely rains and severe heat has affected the crops and in turn production of grains. This has not only led to price rise in grains but also affected the quality of grains being produced. All this has also led to a strange but highly common problem of farmer's suicide.

Climate change can be forecasted by changing rainfall patterns, increased temperature, evaporation and salinization of water sources through rising sea levels.

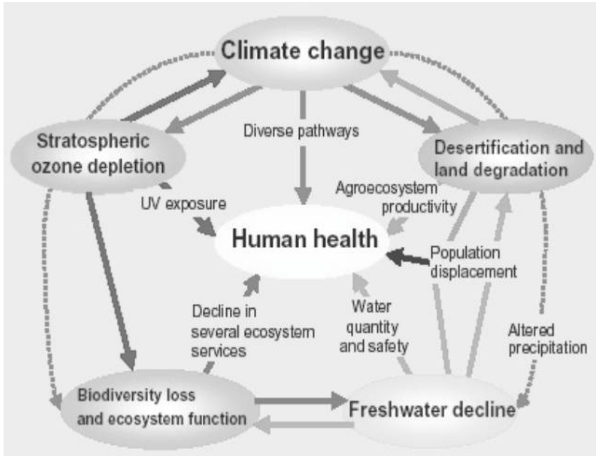

Over the years, We have witnessed that water supplies stored in glaciers and snow cover is declining. This has reduced the water availibilty to populations supplied by melted water from major mountain ranges.

This climate change is definitely a threat to lower income populations predominantly living in tropical/sub tropical countries .This projected climate change will have implications on food production, water supply, bio-diversity and livelihoods . This changing climate pattern is giving birth to many climate sensitive diseases transmitted through water and via vectors such as mosquitoes .These climate sensitive diseases are among the largest global killers that can cause excess mortality and morbidity directly or indirectly.

Impact of climate change

Climate change is affecting human life both directly or indirectly.

1 Direct impact relates to weather conditions affecting the human life .

2. Indirect impact leads to health conditions of human life

If we look to the above figure we can see that there are two kinds of climate impact on human life-

- Direct impact
- Indirect impact

Direct impact includes increased heat ,increase in floods, droughts and storms .

Dr. Rafiq is Asst. Professor in Dept of Sociology at Sri Krishnaa Janaka Devi P.G. College, Kanpur Dehaat, U.P.

Indirect impact of climate change is on availability of quality of food, air quality, water quality ,and water born disease.

Reasons for climate change

For almost 5-7 decades,human activities such as building of green houses and burning of fossils especially in India we have been releasing carbon di oxide and green house gases which have brought additional heat in atmosphere. Due to this additional heat humans have been witnessing some physical changes on earth such as –rising of sea level, melting of glaciers ,changing of precipitation pattern and intense and extreme weather conditions. Climate change is affecting key environmental determinants of health such as –clean air, safe drinking water, sufficient food and shelter.

Effect of climate change on health

Climate change effects human health in many ways.There can be long delay in cause and effect of the disease .As of now there is no standard monitoring method for long term measurement for climate sensitive disease. It is also difficult to control the effects of natural climate variability over the years .Significant climate changes, though small that have occurred so far, are poor proxies for the larger changes forecast for the coming decades.

Seven common signs of climate change that can be witnessed easily

1. Increased concentration of CO_2 in the atmosphere
2. Hottest decade record keep on changing
3. Unprecedented rate of warming
4. Death spiral- Arctic sea
5. Lost of Ice-green land and Antarctic peninsula
6. Heating of seas and oceans-Leading to rise in sea level
7. Extreme weather –more extreme

Major health effects due to climate change can be classified into-

1. Extreme weather related health effects
2. Air pollution- related health effects
3. Water and food born disease
4. Vectro born disease
5. Effects of food and water shortage
6. Psycho-social impacts on displaced population
8. Health impacts from conflicts over access to vital resources

Extreme weather related health effects

Extreme heat waves are becoming common these days .the average temperature has risen to 4-5 degree in past 5 years .This effects the summer crops and in turn the production . Even the hilly areas are facing unusual heat waves . This leads to melting of snow in hilly areas and causing of flood in the plane area.Kedarnath tragedy in 2013 is such a example. Floods in plane especially in Bihar ,West Bengal and North east are the result of heat waves . Populations in high density urban areas with poor housing will be at increased risk with increasing frequency and intensity of heat waves, partly due to the interaction between increasing temperatures and urban heat island effects.

Heat and flood brings variety of diseases with themselves such as – heat stress, cardiovascular failure, injuries and fatalities.

Air Pollution – related health effects

Various human activities lead to rise in air pollution. Industries, vehicles are the major cause of air pollution. Air pollution concentrations are the result of interactions between variations in atmospheric circulation features, wind, topography and energy use. As the changes so does the temperature and humidity, interaction among the pollutant also get modified as their formation depends on these factors.

Tropical countries have been associated with excess summer mortality; this is often explained by high prevalence of infectious and diarrheal disease. India is at a higher risk and wide variation in temperatures and higher level of air pollutants. Common diseases associated with air pollutions are Asthma, Bronchitis and heart ailments.

Water and Food – Borne Diseases

Untimely rainfall, heavy or light rainfall and concentration of rain water along with polluted water brings various diseases with itself. It's common practice of

industry to through the untreated waste into the rivers. For example it's very common for the tannery in Kanpur to through their waste in river Ganga. The river itself gets polluted. Usually the river water is supplied in the city through taps which carries many bacteria which are the root cause of water born disease.

Water born diseases can be classified into two categories on the basis of route of transmission-

- Water born disease – ingested
- Water Washed disease – Caused by lack of hugiene.

In India, Diarrheal diseases are one of the most important cause of disease burden. Bacterial diarrheal diseases and protozoan pathogens are predominant in India. These bacteria are highly sensitive to variations in both tempreture and precipitation over daily, seasonal and inter-annual time periods. In a longer period water and food borne disease will lead to consistent changes n diarrheal rates in the country.

Untimely flood, collection of water and more rise in sea level due to increased temperatures leads to coastal flooding. Coastal flooding leads the communities to use contaminated water. Inadequate sanitation systems, trigger

migration into areas with insecure water and sanitation availability. This leads to the formation of the most drugged water born diseases – Cholera. Some of the major water born diseases are stomach infections , hepatitis, diarrhea, colitis etc.

Vector born diseases

Vector born diseases are infections that are transmitted by the bite of infected arthropod species, such as mosquitoes, ticks, triatomine bugs, shadflies and blackflies. Arthropod vectors are cold blooded (ectothermic) and thus especially sensitive to climate factors. Climate change affects the vector population dynamics and increases the diseases transmission.

There are two key variable of vector – Borne Disease-

- Temperature
- Humidity

Climate changes increases the availability of water during monsoon and alter the air temperature. Clean water promotes the breeding of vector mosquitoes –

- Anophelies (Maleria)
- Culex Vishnui Group (JE vector)
- Aedes (Dengue, Chikenguniya) Polluted water bodies promote breeding of –
- Culexquiquefasciatus (Filariasis)

Mosquito born epidemics have become so common in India today. Dengue is expected to happen every after to rainy season. Japanese encephalitis is very common disease in Eastern India during and after the rainy season. Humid weather and high density population and unplanned urbanization makes human being more prone to these diseases. Though government has taken many steps to combact malaria the disease still exists in most part of the country and is the most common vector born disease.

Effect of food and water shortages

The uneven climate pattern and change in the behavior of rainfall has lead to destruction of crops in the past five years. At times we witness draught in Vidarbh region which leads to low production of onion in turn increasing the price of the commodity . Framers in Punjab have been facing this un even climate change leading to destruction of wheat production. Less rain effects the rice crops which is the staple diet for half of India.

Shortage in food supply leads to acute and chronic nutritional problems to human life.The effects of drought on health include deaths , malnutrition (under- nutrition ,protein –energy malnutrition and /or micro –nutrient deficiencies) , infectious diseases and respiratory diseases . While multiple biological and social factors influence malnutrition,the fundamental determinant is the availability of staple foods. The common diseases due to foods and water shortages are malnutrition and harmful algal blooms.

Climate Change	Impact	Disease
Extreme Weather	Air Population	Asthama Cardiovascular Disease
	Change in Ecology	Malaria , Dengue, Encephalitis, Rift Valley Fever
Rising Sea Level	Increasing Allergies	Respiratory, Allergies, Asthma
	Water quality impact	Cholera, Cryptosporidiosis, Campylobacter, Leptospirosis, Harmful blooms
Increase in CO_2 levels	Water and Food Supply Impacts	Malnutrition, Diarrheal Disease
	Environmental Degradation	Forced migration, Civil Conflict, Mental Health impacts
Rising Tempreture	Extreme Heat	Heat Related Illness and Death, Cardiovascular Failure
	Severe Weather	Injuries, Fatalities, Mental Health Impacts

Psycho – social impacts on displaced populations

Food, storm, tsunamism drought results in distruction of homes, agriculture lands and other essential services especially to the people living in slums and other marginal conditions. Population gets displaced and there comes increased pressure on environment and social conditions. Crowding due to population displacement exacerbates already encountered housing problems in mega cities in developing nations. In addition, noise, overcrowding and other possible features of unplanned urbanization may increase the prevalence of mental disorder such as depression, anxiety, chronic stress, schizophrenia and sucide.

Health Impact from conflicts over access to vital resources

In other longer period of the greatest health risks will not come from natural disasters or disease epidemics but from the slow build up of pressures on natural, economic and social systems that sustain health. These are already under stress particularly in the developing countries like in India.

Conclusions

The paper studies a direct link between climate change and human health. Both are complex and multi-layered.

Predictions of the future health impacts of climate change are still uncertain.

In India the average temperature has risen in past five years. It is projected that temperature will keep on increasing every coming year. This will impact human life, death tool and various type of epidemic. This will in turn affect the economy of the country. Therefore there is stron need to strengthen the health systems, public health delivery mechanism, disease, surveillance, vector, disease control and health insurance.

Investment in research and development, health risk assessment studies, vulnerability maping studies, establishment of base line conditions, scenario modeling and adoption of clean development mechanism, etc. is the need of the hour.

References

1. http://news.discovery.com/earth/global-warmimg/10-signs-climate-change-is-already-happening-130422.htp
2. http://www.ncbi.nlm.nih/gov/pmc/article/PMC2822161
3. IPCC, 2013: Siummary policymakers In : Climate Change 2013: The Physical Science Basis. Contribution of working Group I to the fifth assessment report of the intergovernmental panel on Climate Change [Stocker, TF, D. Qin, G.K. Plantter, M. Tignor, S.K.Allen, J. Boschung, A. Nauels, Y. Xia, V. Bex and P.M. Midgley (eds)] Cambridge Iniversity Press. Cambridge, United Kingdom and New York, NY, USA.
4. Robine JM et al. Death toll exceeded 70,000 in Europe during the summer of 2003. *Les ComptesRendus/SerieBiologies*
5. Arnell NW Climate change and global water resources : SRES emissions and socio – economic scenarios. Global Environmental Change – Human and Policy Dimensionms., 2004, 14:13-52.
6. Zhou XN et al, Potential Impact of climate change on schistosomiasis transmission in China . American Journal of Tropical Medicine and Hygiene, 2008, 78-188-194.
7. Hales S et al. Potential effect of population and climate change on global distribution of dengue fever : an empirical model. The Lancet, 2002, 360:830-834.
8. WHO, Quantitative risk assessment the effects of climate change on selected causes of death, 2030s and 2050s. WHO, Geneva.
9. Impact of Climate Change on Human Health in India : An Overvoew by Vino Joon* and Vaishali Jaiswal**, Health and Popullation – Perspectives and issues 35 (1), 11-22, 2012.
10. Intergovermental panal on climate change.(IPCC, 2007) Climate change: The physical science basis : Summarey nfor policy makers, Geneva, (Contribution of working Group I to the Fourth Assessment Report, Cambridge University Press, Cambridge. United Kingdom and New York NY, USA)

Poem

TO GOD

❒ **Dr. K. V. Subbaram**

I was seethed the other day again
Steering up the stairs
And you deducted me as usual.
But why ? why? why?
Is it because I have a face
And you don't have one or
Is it because I have a face
And you don't have one or
Is it that I die to perceive?
While you try to deceive?
I die testernly to keep up my shape
And you have no form to confirm to
Or all from to confound? Tell me,
What are you? A man, a women
Or just nothing of creation
In everyone's frightened mind?
You are weird beyond redemption
Are you not ? Don't just stare, lord!
Say something of your own.
I have struggled and still do
To validate my empty existence
While, I know, you don't have to.

RESURRECTION

❒ **Dr. K. V. Subbaram**

My six – year – old asked me
Where I was last night
To which I said
I wasn't even born.

I came only this morning
And have to go tonight
Soon after sunset
Supper. And I just have
The afternoon left
To drown into my drink
And to sink into my nap
Rather a long one that too.
But I shall return
The day-after-tomorrow.

O, Father, don't turn
Casualty into casualty.

1) First published in the magazine The Illustrated Weekly of India (Mumbai), 1979. Included in the collection of the poem Splinters in Space-Time, 1980.

2) First published in the magazine Imprint (Mumbai), 1978. Included in the collection of the poem Splinters in Space-Time, 1980

Culture

Culture of United States of America

□ Dr. Archana Singh

Culture

The United State of America is third largest Country of the world with a population of more than 320 million (320,090,84) (US Census Bureau). The United State is one of the most culturally diverse countries in the world. Nearly every region of the World has been influenced by American culture, as it is a country of immigrants, most notably the English who colonized the country beginning in the early 1600s (According to Anthropologist, Cristina De Rossi Barnet of Southgate College in London *www.livescience.com /28945- american-culture.html*), American culture is primerly Western, but is influenced by African, Native American, Asian and Latin American cultures. American culture started its formation over 10,000 years ago with migration of Paleo-Indians from Asia, Ocenia and Europe into the region that is today the continental United States *(Wikipedia, the free Encyclopaedia & U.S. Census 2000).*

Language in USA

American states does not have an official language, but English is spoken by about 82% of the population as native language. The variety of English spoken in the United States is known as American English together with Canadian English. Both make it a group of dialects known as North American English. Spanish is the second – most common language in the country, spoken by almost 30 million population (12% of the people). Literacy rate for the male and female both are equal i.e., 99% in USA.

The family unit is generally considered as nuclear family, and is typically small (with exceptions among certain ethnic groups). Extended family relatives live in their own homes, often at great distance from their children.

Food

American cuisine has been influenced by Europeans and Native American in its early history. Today there are a number of foods that are commonly identified as American, such as hamburgers, hot dog, potato chips, macroni, cheese and meat loaf. "As American as apple pie" has come to mean something that is authentically American *(www.kwintessential.co.uk/resource/global-etiquette/usa.html.)*.

Some Key Porint of American Society

Good Points

1) American population have all colors, all type of religions and speak many languages from all over the world.
2) Americans are extremely independent, individualistic and like to be different from each other.
3) American believe in freedom of choice.
4) American need a lot of "elbow room", they like personal space around them.
5) Americans are very law abiding citizens.
6) They never go to a hospital emergency room unless it is a matter of life or death.
7) They always call their teachers by his or her name.
8) They are careful when offer their seats on the bus to an older or disable persons.
9) Domestic violence is against the law there. It is illegal to hit anyone : a spouse, parents or a child and even a pet.
10) The majority of older Americans prefer to live in retirement homes for independent living rather than to live with their grown up children.
11) Americans try to share equally with their wives in parenting and housework.
12) They never go to someone's house without calling first to see if it is convenient.
13) At an American funeral, it is not normal to make loud sad sound. They try to keep strong emotions inside. *(http://www.press.umich.edu/pdf/9780472033041010 1Amercult.pdf)*

Some Points of Concern

1) 66% of Americans are overweight, 37% of those are obese.
2) Approximately 1% of Americans are homeless (3.5 millions.)
3) They do not have strong family support system, like in India or other Asian societies.
4) They have very busy life style, which needs hard work and adds a lot of stress in the mind of people.

Dr. Archana Singh is a noted sociologist and lives in New Jersey, USA.

Personality

Dr. Yellapragada Subbarao - A Life Saver

❒ **Amit Kumar Chauhan**

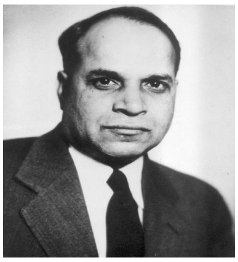

Most of the image and name that come to our mind whenever some-body asks us about famous personalities related to science and Technology is of Albert Einstein, Aristotle, James Watt, Nikola Tesla, Isaac Newtona and Graham Bell. However, as an Indian we have given scientists to the world, which have contributed equally to the field of Science, if not more than these famous scientists. Unfortunately there is only a small sphere of persons who might have heard the name of Dr. Yellapragada Subbarao during his /her life time.

"You must have probably never heard of Dr. Yellapragada Subbarao, yet because his vision are alive and well today. Because he helped you may live longer."... Doron K Antrim. These words sang enough to make someone realize that how much he might have contributed in the field of science and technology.

Dr. Yellaparagada Subbarao was born in a poor Telegu Brahmin family in Bhimavaran District in old Madras Presidency on 12th January 1895. He was the fourth child amongst seven children to Y. Jagganatham and Y. Venkamma. Though his father worked as a revenue inspector, the family suffered from many hardships due to the loss of several of his close relatives at young age.

He wanted to be a doctor, and he wish to be a saint too to serve the society through, "Ramakrishna Mission". During the freedom struggle of India, Subbarao was so influenced by Mahatma Gandhi that he gave up using British goods and started wearing khadi surgical dress which made him qualified for lesser L.M.S. Degree instead of full M.B.B.S. degree, despite doing well in examination. The main reason for this was an Anglican partial racist professor, M. C. Bradfield who was not happy to see him wearing khadi in the lab thus made him devoid of M.B.B.S degree. He started working as an Anatomy lecturer in Dr. Lakshmipatih's Ayurvedic College at Madras. After gaining much interest in Ayurveda, he diverted his interest towards conducting his research in this field. However he returned soon on track after he met an American doctor who was on tour to India for Rockefeller Scholarship. Thus, with financial support provided by his father-in-law Murthy and promise of support from Satyalinger Naicker Chaities and Malladi Charities, he moved to Boston in US on October 26, 1992.

Dr. Yellapragada Subbarao in America– Subbarao took in Harvard School of Tropical Medicine and complete the diploma. Subbarao gained public attention with discovery of the estimation of Phosphorus in body fluids and tissues, alongwith Cyrus Fisake. This discovery came to be known as Fiske–method, though it was technically named Rapid Calorimetric Method. He discovered the role of ATP and Phosphocreatines, the energy currency of cell, with this Subbarao's name was listed in the biochemistry text books in 1930s . In the same year he obtained his Ph.D. degree. He worked at Harvard till 1940 and later joined Lederle Laboratories, a division of American Cyanamid, as the Director of Research, after he was denied the post of a regular faculty at Harvard.

Contribution of Dr. Yellapragada Subbarao in the field of Medicine –Subbarao discovered many more antibiotics for a wide range of clues , other than the already discovered penicillin and streptomycin. His research led him to the discovery of polymyxin which is still used in cattle feed. This led to laying the foundation for the isolation of vitamin B9, the antipernicious anemia factor, based on the work conducted by Lucky Wills in 1945. He applied different inputs given by Sr. Sidney Farber to develop an anti cancer drug Methotrexate, one of the first cancer chemotherapy agents, which still used worldwide. He was also credited with the discovery of drug Hetrazen, a cure for filariasis (elephant foot) at Lederle. Today, this drug is the most widely used medicine for treating filariasis, including world health organization. Under his leadership, Benjamin Duggar gave birth to his dixcovery of the world's first tetracyclic antibiotic, Auremycin.

Death-After 25 years of his service he died on 9th August, 1948 in USA due to massive heart attack. Numerous obituaries appeared in science. In the end we can say that he was a patriotic Indian by heart, great doctor, a true life saver, Medicinist and a great researcher lived his life to save others life.

Announcement

3rd PHSS Foundation Awards for Year 2016-17

Prof. H.S.Srivastava Foundation for Science and Society, Lucknow

(www.phssfoundation.org.in)

Professor H.S. Srivastava Foundation for Science and Society, Lucknow established PHSS Foundation **biennial** Awards in year 2012 to honour some distinct contributors, who have created impact on the science and society by their outstanding work. These awards are presented biennially to the persons nominated by a distinct personality along with consent of the nominee on recommendation of a selection committee of the renowned experts in the related fields. The committee constituted by the executive committee of PHSS Foundation will select awardees for year 2016-17. For the following Awards.

1. **PHSS Foundation Life Time Achievement Award** : Citation, Medal and Cash prize Rs. 50,000/=
2. **PHSS Foundation Award For Social Contribution** : Citation, Medal and Cash prize Rs. 25,000/=
3. **PHSS Foundation Award For Science Communication** : Citation, Medal and Cash prize Rs. 20,000/=
4. **PHSS Foundation Young Scientist Award** : Citation, Medal and Cash prize Rs. 15,000/=
5. **PHSS Foundation Young Women Leadership Award** : Citation, Medal and Cash prize Rs. 15,000/=

Age limit & Eligibility (As on 31-12-2016) for Award Number 1 to 5

Note:- Awards can be given to a Person of Indian nationality, Indian origin and overseas citizen of India. The major work must have been done in India

The award no 1 is for distinguished person in any field of science as evidenced by original, high quality, impact creating research contributions, publications, patents, transfer of technology etc. No Age bar.

The award no 2 would be given for outstanding social work undertaken in backward and tribal or rural areas pertaining to improving life status of people, developing educational framework, agricultural innovations and networking, small scale cottage industries, water conservation, environmental management, poverty alleviation, health management or rural sanitation etc. The quality impact on life of large number of people will be the key criteria. No Age bar.

The award no 3 would be given for the outstanding work in the field of science journalism in any language in print or electronic media, science writing or use of any folk form of science communication to the masses. The impact of Nomini's contribution on quality of life of large number of people will be the key criteria. No Age bar.

The award no 4 would be given to a scientist of below 40 years age for outstanding contribution in the field emerging areas of science, technology, health, environment or agriculture.

The award no 5 would be given to a young women up to age of 40 years for distinguished work done in any field of research and education, social work, women issues, environmental conservation or women empowerment etc.

Nomination Procedure:

The Vice-Chancellor of Universities, Deans of faculties, Director of Institutes, Principals of the higher education Institutions, Professors, Head of Departments/Division, Principal Scientists or equivalent, President/Chairpersons, Secretaries and Directors of Non-Government Organizations and the Professional societies etc. can nominate a suitable person for any award before 31st December, 2016. The nomination should be done on prescribed form, which can be downloaded from *www.phssfoundation.org.in* or can be obtained from us by contacting through e mail.

Prof. Rana Pratap Singh, Secretary(Honorary)
Email: -*phssoffice@gmail.com/* cceseditor@gmail.com
Prof. H.S. Srivastava Foundation for Science and Society Office No 04
Ist Floor ,Eldeco Express Plaza, Uttarathia Rae Bareli Road, Lucknow – 226025, UP, India

घोषणा

पृथ्वीपुर अभ्युदय समिति
(www.prithvipur.org)

पृथ्वीपुर अभ्युदय समिति एक स्वयंसेवी गैर सरकारी संस्था है, जो गाँवो और कस्बों के टिकाऊ विकास को समर्पित है। यह गरीब और बदहाल लोगों, बच्चों तथा युवाओं की अपनी शिक्षा, क्षमता वृद्धि एवं बेहतर जीवन स्थितियों के लिए किए जा रहे प्रयासों एवं संघर्षो को यथा शक्ति समर्थन करती है।

पृथ्वीपुर अभ्युदय समिति शिक्षा, क्षमता विकास, पर्यावरण संरक्षण, बेहतर जीवन स्थितियों के निर्माण, ग्रामीण पार्कों एवं वनों का निर्माण, पर्यावरणीय एवं कम लागत की तकनीक समर्थित खेती, खराब मौसम से जूझने की क्षमता वाली खेती, लघु तथा कुटीर उद्योग, युवाओं के छोटे कोआपरेटिव, सामाजिक व्यापार, सांस्कृतिक विकास एवं स्वस्थ खान पान एवं मकान तथा अच्छी सेहत के लिए खेलकूद तथा योग आदि को बढ़ावा देने के लिए काम करती है।

संस्था के लिए धन की व्यवस्था मोटे तौर पर निजी भागीदारी, जन सहयोग तथा दान आदि से की जाती है।

जो लोग अन्यत्र सरकारी या गैर सरकारी विभागों में कार्यरत हैं, वे अपना पूरा कार्यालयीन समय अपनी मूल संस्था को देने के बाद छुट्टियों में या कार्यसमय के बाद अपना थोड़ा समय या धन या दोनों पृथ्वीपुर अभ्युदय समिति को देते है।

लोगो के अच्छे कामों को प्रति वर्ष सम्मानित करने से दूसरें लोगों में भी अच्छे कामों के लिए प्रेरणा मिलेगी, ऐसी समझ के साथ संस्था ने चार वार्षिक सम्मान तथा कुछ छात्रवृत्तियाँ शुरू किया है।

Honors and Awards	**सम्मान और पुरस्कार**
1. *Rajdev Singh Durdarshita Samman	* राजदेव सिंह दूरदर्शिता सम्मान
2 *Maulshree Devi Ganga Garavee Samman	* मौलश्री देवी गंगा गौरवी सम्मान
3. *Vikram Singh Karmathata Puraskar	* विक्रम सिंह कर्मठता सम्मान
4. Prithvipur Tejaswita Puraskar	पृथ्वीपुर तेजस्विता पुरस्कार
5. Educational Fellowhip-Junior *(5 students each year)*	शिक्षा छात्रवृत्ति-कनिष्ठ *(पाँच छात्र प्रति वर्ष)*
6. Education Fellowship-Senior *(2 students each year)*	शिक्षा छात्रवृत्ति-वरिष्ठ *(दो छात्र प्रति वर्ष)*

ये सम्मान वर्ष भर में एक बार संस्था के वार्षिक समारोह में दिए जांएगे। नामित व्यक्तियों की उपलब्धियों का एक चयन समिति अध्ययन करेगी तथा कार्यदायी समिति को संस्तुति देगी। किसी सम्मान के लिए उचित व्यक्ति नामित न होने पर उसके अतिरिक्त अन्य सम्मान ही दिए जायेंगे।

सम्मान हेतु नामित करने की विधि

- ❖ कोई भी जिम्मेदार व्यक्ति किसी को भी इन सम्मानों के लिए नामित कर सकता है। इसके लिए नामित व्यक्ति के जीवन वृत्त के साथ उसके कामों का प्रमाण संस्था को भेजें।
- ❖ एक चुनाव समिति नामित नामों पर विचार कर सबसे योग्य व्यक्ति के नाम की संस्तुति कार्य समिति को करेगी।
- ❖ संस्था की कार्य समिति इन नामों को स्वीकृत करेगी, तभी ये सम्मान दिए जायेंगे। सम्मान समारोह प्रति वर्ष नवम्बर या फरवरी में आयोजित किये जायेंगे।
- ❖ पाँच शिक्षा छात्रवृत्तियाँ (कनिष्ठ), रूपये 250 प्रति छात्र, प्रति माह वर्ष भर तक उन पाँच छात्रों को दी जाएगी, जो सामान्य ज्ञान एवं सृजनात्मकता की लिखित परीक्षा द्वारा चुने जाएँगे। इनमें से 3 लड़कियाँ एवं दो लड़के होगें। इनमें दो सामान्य वर्ग, एक अन्य पिछड़ा वर्ग, एक अनुसूचित जाति एवं एक अनुसूचित जनजाति या अल्पसंख्यक समुदाय से होगा। सभी विद्यार्थी ग्रामीण पृष्ठभूमि एवं गरीब परिवारों के होंगे।

* इन सम्मानों में होने वाला खर्च अवार्ड के नाम वाले व्यक्तियों के परिवारों/व्यक्तियों के द्वारा वहन किया जाएगा। अन्य पुरस्कारों एवं छात्रवृत्तियों का खर्च संस्था द्वारा वहन किया जाएगा।

पात्रता

* **राजदेव सिंह दूरदर्शिता सम्मान** – यह सम्मान एक बुजुर्ग पुरूष को दिया जाएगा, जिन्होंने अपनी दूरदृष्टि और परिपक्वता के काम से समाज के फैसलों का सही तरीके से प्रभावित किया हो। इसके लिए उस व्यक्ति का जीवन वृत्त, चित्र, एवं कार्यो की विस्तृत जानकारी (हो सके तो प्रमाण सहित) नामित कर रहे व्यक्ति या संस्था द्वारा हमें भेजा जाए। सम्मान के लिए चुने गये व्यक्ति कों एक अंगवस्त्र, एक स्मृति चिन्ह, प्रमाण पत्र एवं इक्कीस सौ रूपये की राशि दी जाएगी।

- **मौलश्री देवी गंगा गौरवी सम्मान** – यह सम्मान एक वृद्ध महिला को समाज में उनके द्वारा दिये गये योगदान के लिए दिया जायेगा। उम्र की कोई सीमा नही है। नामित किये जाने वाले व्यक्ति की फोटो, उसकी पहचान और यदि हो सके तो उसके द्वारा किये गये कार्यो का संक्षिप्त विवरण भी संस्था को उपलब्ध करायें। विजयी व्यक्ति को एक शाल, स्मृति चिन्ह, प्रमाण पत्र एवं रूपये 2100/- का चेक दिया जायेगा।
- **विक्रम सिंह कर्मठता पुरस्कार** - यह पुरस्कार 50 वर्ष के पुरूष को उसके द्वारा प्राप्त किये गये उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए दिया जायेगा। ये उपलब्धियाँ आर्थिक विकास, संस्कृति, राजनीति, शिक्षा, कृषि, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक उत्थान या मानवता के विकास आदि क्षेत्रों में हो। चुने गये व्यक्ति को सम्मान स्वरूप एक मेडल, समृति चिन्ह, प्रमाण पत्र, अंग वस्त्र एवं रू 2100/- का चेक दिया जायेगा।
- **पृथ्वीपुर महिला नेतृत्व सम्मान** - यह पुरस्कार 40 वर्ष के उम्र तक के किसी भी महिला को दिया जायेगा, जिसने विज्ञान, सामाजिक, आर्थिक विकास, संस्कृति या राजनिति आदि में महत्वपूर्ण योगदान करने में नेतृत्वकारी भूमिका निभाई हो। विजेता को एक मेडल, स्मृति चिन्ह, प्रमाण पत्र एवं रू 2100/- का चेक दिया जायेगा।
- **पृथ्वीपुर कनिष्ठ शिक्षा छात्रवृत्ति** - ग्रामीण तथा गरीब दो लड़कों एवं तीन लड़कियों (कुल पाँच छात्र-छात्राओं) को जो सामान्य ज्ञान और रचनात्मकता के लिए लिखित परीक्षा पास करेंगे, को एक वर्ष के लिये प्रतिमाह रू 250/- शिक्षा सहयोग के रूप में दी जायेगी।
- **पृथ्वीपुर वरिष्ठ शिक्षा छात्रवृत्ति** - यह छात्रवृत्ति ग्रामीण तथा गरीब परिवारों के एक लड़के एवं एक लड़की को जिन्हें किसी भी व्यवसायिक कोर्स में दाखिला मिला हो, को दिया जायेगा। सर्वश्रेष्ठ भागीदारों का चुनाव साक्षात्कार से होगा। उन्हे रू 500/- प्रतिमाह का शिक्षा सहयोग के रूप में पृथ्वीपुर अभ्युदय समिति द्वारा वर्ष भर के लिये दी जायेगी।

नामित करने और पत्राचार का पता
प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह
म.नं. 247/सेक्टर–2, उद्यान–2
एल्डिको, रायबरेली रोड, लखनऊ–226 025 (उ.प्र.)
ईमेल–cceseditor@gmail.com/dr.ranapratap59@gmail.com

आधार स्कूलों के लिए आमंत्रण

शिक्षा से हमारी आर्थिक, मानसिक, शारिरिक तथा सामाजिक उन्नति सम्भव है, ऐसा पूरी दुनिया मानती है। सभी महान दृष्टा, विद्वान तथा जन नेता ऐसा मानते हैं। हमारे देश में शिक्षा की स्थिति बहुत खराब है। क्या गाँव, क्या कस्बे, क्या शहर। शिक्षित लोगों के लिए रोजगार नहीं है। बहुत तरह के जरूरी कामों के लिए जहाँ काम उपलब्ध है, कुशल और उपयोगी लोग नहीं है। मनुष्य सिर्फ दूसरों की नौकरी करने के लिए पैदा नहीं हुआ है। इसलिए शिक्षा का काम सिर्फ नौकरी दिलाना भर नहीं है। शिक्षा हमें सिखाती है कि हमारे लिए क्या अच्छा और क्या बुरा ? सामूहिकता के क्या लाभ हैं, और ईर्ष्या से बटँते जाने के क्या नुकसान? हम नवाचारी एवं मानव के सम्यक (Intensive) विकास के लिए आधार स्कूलों की शृंखला स्थापित करना चाहते हैं। इच्छुक लोग सम्पादकीय पते पर हमसें सम्पर्क कर सकते हैं।

पृथ्वीपुर अभ्युदय समिति समावेशी विकास की ग्रामीण पहल
(Rural Initiative for Inclusive Development')
की भागीदार संस्था है।

सामाजिक सरोकार

समावेशी विकास की ग्रामीण पहल : ग्राम कतौरा (ब्लाक दुदही) और ग्राम बिन्दवलिया (ब्लाक पड़रौना)

संस्था के लोगों ने छुट्टी के दो दिन, दो गाँवों मे लोगों के साथ पर्यावरणीय, कृषि एवं रोजगार के मुद्दों पर बातचीत किया। ये गाँव थे कुशीनगर जिले के ब्लाक दुदही का गाँव, बिन्दवलिया के 'मुसहर टोला' और कतौरा। हमारी टीम में प्रोफेसर, शिक्षक, वैज्ञानिक, पुलिस अधिकारी, समाज सेवी, किसान, प्रधान, डाक्टर, मजदूर आदि तमाम तरह के लोग थे।

गाँव के लोग पहले सशंकित थे, और धीरे–धीरे इकठ्ठा हुए, पर बाद में खुल कर बोले तथा अच्छी भागीदारी की भूमिका में आ गए। हमने उन्हें कहा कि हम इस लिए आए हैं, कि उनके समस्याओं को सुलझाने में उनकी मदद करे। तय हुआ कि उन गांवों में स्थानीय लोगों की कार्य समिति बने, जो हमारी भागीदारी से गाँव के विकास की कार्य योजना और कार्य रिपोर्ट बनाये। हम लोगों के बीच व्यक्ति आधारित नेतृत्व की जगह स्थानीय सामूहिक नेतृत्व की ताकत और समझदारी विकसित करने की कोशिश कर रहे हैं। देखिए क्या होता है। इन दो गाँवों के अनुभवों से हमारा भरोसा मजबूत हुआ है। इस अवसरों के कुछ चित्र नीचे हैं।

We had a public meeting at village Bindwalia (Mushar Tola) Block Padrauna and village Kataura (Block Dudahi) of Distt. Kushinagar (UP) on 26 and 27 Aug, 2016 in which landless and small/marginal farmers and labours interacted with experts and activists of 3 NGOs; PHSS Foundation, Lucknow, Vivekanad Yuva Kalyan Kendra, Padrauna and Prithvipur Abhyuday Samiti, Lucknow. The villagers shared their problems with the visiting teams and they were motivated by us to evolve a village samiti to deliberate, plan and manage the problems of their own involving experts, activists and district administration. About 70% active participants were women of a tribal community, named Mushar communitiy. These villages are located in Uttar Pradesh in Kushinagar District, a most backward area of India. We encouraged a lot with the response and organizational skills. A local public and self assigned locak leadership. Some photographs are placed below.

चित्र(1-6) उपरोक्त गोष्ठियों में वक्ता और श्रोता/लोगों की भागीदारी बहुत उत्साहवर्धक थी। Photos showing participation of people and involvements of public and speakers in village Bindvallia (Block Padrauna) and village Kataura (Block Dudhai) of Distt. Kushinagar (Uttar Pradesh)

Invitation

Movement; Rural Initiative for Inclusive Development

- Please write us on the editorial address to intiate 'Kahaar Rural Library', 'Kahar Chetna Kendra' and Rural Research Centre in your villege, street or town. We shall send you a set of 25 books by registeres post and other inputs required.
- On receipt of the books, please, open a small library at any place and enroll people all gender, caste, age, and thoughts as member of the library and Chetna Kendras and encourage them to read write. Keep the numbers of such members ever increasing. Please contact us to establish Rural Research Centre in your village.
- Please, arrange time to time study group meeting or seminar on problems of your village,stree, town and city Send photographs and reports of your activities for publication in 'Kahaar' magazine.
- The selected libraries and centres with more readers and more activities will be honoured annually with cash prize of Rs. 5000/- one time (up to 5 each year.) and Rs. 300 each month (up to 5 each year.). The honoures will be given in annual function of the participating organizations.
- Please write us about the subjects, topics of more relevant books, booklets and centres which you want to read, discuss, understand and debate. We can solve the problems together.
- We want to develop these libraries and Research Centres as centre of social change and will assist you to develop it as the centre for knowledge, culture, innovation, employment and empowerment of democracy in the true sense.

आमंत्रण

समावेशी विकास की ग्रामीण पहल
(आइए! गाँवों का अपना 'ग्राम और साझा उद्योग केन्द्र' बनाएँ)

'कहार' ग्रामीण लाइब्रेरी की तरह ही हम गाँवो के विकास के लिए देश के हर गाँव में ग्राम विज्ञान और साझा उद्योग केन्द्र, बनाना चाहते है। जिस गाँव में 5-6 युवक,युवतियाँ पुरूष, महिला, बड़े-बुजुर्ग इसमे शामिल होकर एक साझी संचालन समिति बनाना चाहते है, हमसे सम्पादकीय पते पर संपर्क करें।

आप क्या करें ?

आपस में ऐसे केन्द्रों को बनाने और चलाने पर बात करें। शुरू–शुरू में ज्यादातर लोगों को लगेगा कि इसमें बहुत झंझट है। नहीं हो पायेगा। पैसा नहीं है। आपस में झगड़ा हो जायेगा। ऐसी बातें दिमाग में आना आम बात है। ऐसा अक्सर होता भी है। तभी तो हमारे गाँव के लोग इतनी मुश्किल में रहते हैं। पिछड़े माने जाते हैं, और शहरों और आधुनिक दुनियाँ के साथ आर्थिक –सामाजिक विकास की गति नही पकड़ पाते हैं।

पर इन्हीं में से कुछ लोग अलग होते हैं। ऐसा हमारा मानना है। वे थोड़े अधिक हिम्मती, थोड़े अधिक विवेकशील और जुझारू हैं, जोकि उम्मीद से भरे हुए हैं। हमें इस प्रयोग की शुरूआत करने के लिए ऐसे ही उत्साही लोग चाहिए। आप ऐसे लोगों में से हैं, तो आइए कुछ करके देखते हैं। खोने के लिए हमारे पास बहुत नहीं है। पाने के लिए पूरी दुनियाँ पड़ी है। ऐसे उत्साही 5-6 व्यक्ति आपस में बात करके एक साझी टीम बनाएँ। एक को अपना अगुवा बनाएँ और हमें सम्पर्क करें।

हम क्यों करेंगे ?

पहले एक-दो बार आपकी टीम के साथ आकर बातचीत करेगें। हम अपने विचार और अनुभव आपके साथ साझा करेंगे। स्थनीय उत्पादों पर आधारित लघु-उद्योगों की सम्भावना तलाशेगें। हमारे विषय विशेषज्ञ वहाँ सम्भव उ़द्योगो की रूप-देखा आपके साथ मिलकर बनाएँगे। फिर साझे तौर पर आवश्यक धन जुटाने के तरीकों पर, उत्पादन प्रबन्धन और बिक्री के तरीकों पर बातचीत की जायेगी।

स्थानीय उत्पादों से स्थानीय उपयोग के लिए चीजे बनाकर शाहरी बाजार पर निर्भरता कम करने और गाँव के लोगों को उनके कौशल के अनुसार रोजगार देने का प्रयास किया जायेगा। इस तरह के व्यापार का उद्देश्य अधिक मुनाफा कमाना न होकर, लोगो की जरूरत की चीजों को स्थानीय स्तर पर उत्पादित करना, विक्रय करना और एक आपसी साझा व्यापार और रोजगार उत्पन्न करना होगा।

दुनियाँ का अब तक का सारा विकास साहस और प्रयोगधर्मिता की कहानियों से भरा हुआ है। आइए हम भी साहस करें और कुछ नए प्रयोग करें।

Invitation for Authorship

Writers/Journalists/Communicators/Cartoonists, activists etc. are invited to send their article(s) (with data, pictures and references), reports (with evidences), photographs, drawings, cartoons, diaries, poems, stories and drama etc. by email or by registered post for publication in 'Kahaar' Magazine in Hindi, English, Sanskrit, Urdu or any other languages and dialect. The articles may be critically analyzing any field of knowledge, life and may be written with maintaining scientific and rationale outlook. Please send copy right transfer a certificate, and certificate showing the originality of the article along with photographs of the author(s), their full postal address and email contact etc.

The following topics may be broadly covered :

1. **Developmental pattern, developmental philosophy, resource management, traffic management, energy management, water management, culture and traditions, business and industries in villages, towns, cities and metros, sustainability of the developmental model. Peace and happiness of the inhabitants and life style may also be covered.**
2. **Rural Development : Rural economy, Agriculture, horticulture, Animal husbandry, small scale and cottage industries, education, health management, sanitation, energy, environmental management, cleanliness, water crisis and food security in villages and towns. Culture and Governance system in rural India may also be covered.**
3. **Educational and health issues**
4. **Food safety and food security**
5. **Poverty and Malnutrition**
6. **Cultural and Governance Issues**
7. **Science and Society linkages**
8. **Urban Development**
9. **Experiences and Knowledge on the status and working culture of Government, Private, Non-Governance and Voluntary organisations etc.**
10. **Any other topic of interest of the common people of the country**

समावेशी विकास की ग्रामीण पहल

(Rural Initiative for Inclusive Development)

भागीदार संस्थायें

प्रो. एच.एस. श्रीवास्तव फाउण्डेशन	पृथ्वीपुर अभ्युदय समिति	विवेकानन्द युवा कल्याण केन्द्र
लखनऊ	लखनऊ	पडरौना, कुशीनगर
www.phssfoundation.org.in	www.prithvipur.org	

उद्देश्य
- विज्ञान शोध एवं प्रसार • सम्यक् शिक्षा • हरित उद्योग • कम लागत की खेती • समावेशी स्वास्थ्य लाभ • मानवीय संस्कार • लोक कलाएँ, भागीदारी की ताकत • आनन्द की खोज

वर्तमान कार्यक्रम
- 'कहार' पत्रिका का प्रकाशन • 'कहार' लाइब्रेरियों की स्थापना • विवेकानन्द स्कूलों की स्थापना एवं प्रबन्धन • सामर्थ्य विकास

भविष्य की योजनाएं
- 'आधार' नवाचार एवं कौशल विकास स्कूलों की स्थापना एवं प्रबन्धन • किसान खेती प्रद्वति का विकास • 'अपना स्वास्थ्य अपने हाथ' स्वास्थ्य कार्यक्रमों का विकास
- 'आनन्द' पार्को का निर्माण एवं रखरखाव • 'विकास' पाक्षिक अखबार का प्रकाशन • 'प्रकृति' वनों का विकास एवं संरक्षण • 'उल्लास' कला समूहों का निर्माण एवं संचालन

जुलाई

रवि	सोम	मंगल	बुद्व	बृह	शुक्र	शनि
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

अगस्त

रवि	सोम	मंगल	बुद्व	बृह	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

सितम्बर

रवि	सोम	मंगल	बुद्व	बृह	शुक्र	शनि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

अक्टूबर

रवि	सोम	मंगल	बुद्व	बृह	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

नवम्बर

रवि	सोम	मंगल	बुद्व	बृह	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

दिसम्बर

रवि	सोम	मंगल	बुद्व	बृह	शुक्र	शनि
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

7 अगस्त-रक्षा बंधन, 15 अगस्त-स्वतंत्रता दिवस, 15 अगस्त-जन्माष्टमी, 25 अगस्त-गणेश चतुर्थी/विनायक चतुर्थी, 2 सितम्बर-बकरीद/ इदुलजुहा, 4 सितम्बर-ओणम, 27 सितम्बर-महासप्तमी, 29 सितम्बर-महानवमी, 30 सितम्बर-दशहरा (महानवमी), 1अक्टूबर-मोहर्रम/अशुरा, 2 अक्टूबर-महात्मा गांधी जंयती, 5 अक्टूबर-महार्षि वाल्मिकी जयंती, 8 अक्टूबर-करका चतुर्थी (करवा चौथ), 18 अक्टूबर-नरका चतुर्थी, 19 अक्टूबर-दीवाली/दीपावली, 20 अक्टूबर-गोवर्धन पूजा, 21 अक्टूबर-भैय्या दूज, 26 अक्टूबर-छट पूजा (प्रतिहार सष्टी/सूर्या सष्टी), 4 नवम्बर-गुरू नानक जंयती, 24 नवम्बर-गुरू तेग बहादुर शहीदी दिवस, 2 दिसम्बर-मिलादुन नबी/ईद-ए-मिलाद, 24 दिसम्बर-क्रिसमस ईव, 25 दिसम्बर क्रिसमस

2017

Composite Lab Line Pvt. Ltd.

A-1, O.K.K.P. Complex, Near I.T. College Crossing, Faizabad Road, Babuganj, Lucknow - 226020

Ph: 0522 - 3295714, 2788139, Mob: 09335902421 E-mail: cllpl.lko@gmail.com/ complab_lko@yahoo.co.in

Manufacturers & Supplier of:-
Scientific, Laboratory, Industrial, R&D, Pollution Control, Quality Control & Pharmaceutical equipments.

We are the Authorized Distributor/ Dealer of :

* Merck Specialities India Pvt. Ltd.
* Thermo Fisher Scientific India Pvt. Ltd.
* Bangalore Genei.
* Bio-Rad Laboratories
* Qiagen India Pvt. Ltd.
* Olympus Opto System Pvt. Ltd.
* Medica Instruments Mfg. Co.,
* Envair Electrodyne Ltd.
* Merck Millipore
* Agile Lifesciences

Product Range

Binocular, Trinocular, Research Microscopes, Inverted Microscopes, Biological, Stereo zoom, Polarizing, Stereomicroscope, Fluorescence etc..

Real time PCR, Promega Maxwell DNA purification kits, Nunc UpCell, Nunc Hydrocell, Promega GoTaq Hot Start Polymerase, Abnova Lysates, Cell Strainers, Centrefuges, Deep Freezers, Incubators, Oven etc..

Rotary Flash Evaporator, Vacuum Evaporator, Oil Bath, Refrigerated Water Bath, Vacuum Controller, Fully Automatic autoclave, Anaerobic Jar, Acrylic Water Bath, Dental Autoclve, Slide Staining Assemblies, Differential Blood Cell Counter, Concentric Water Bath etc..

High pressure rectangular steam sterilizer, Autoclaves, Glass Bead Sterilizer, Oven, Incubators, Laminar Air Flow, Vacuum Oven, Muffle Furnace, Seed Germinator, B.O.D. Incubators, Plant Growth Chamber, Deep Freezer, Lypholizer, Mortuary Chamber, Blood Bank Refrigerator etc....

Clean Room, Biosafe Cabinet, Fume Hood, Chemicals Bench, Longevity Air Purifier, Pass Box etc..

Transilluminator, Thermal Cycler, Gel Electrophoresis, PCR work stations, DNA Sequencer, Microcentrifuge tubes, Gel dryer, Electrophoresis, Protein Maker, Gene Synthesis, DNA Extraction Kit, Triregants etc..